



স্পিকাতা, কলেকজোৱার উইস্কিস কেন্দ্রি (প্রের, শ্রে, এন, বন্ধু হারা মৃত্তিত।



বিষয়ার্যায়ী সূচী।

বিবিধ সঙ্গীত			2-200
মারার খেলা	F 7 +	***	3.08>8≥
া টাকি প্রতি	ন্তা	***	3003P3
াক্রি শুন্ত			225
ব্'উল			200-220
্ৰক্ষাস হীত		114	359-800

ৰণাহক্ৰমিক স্চী।

विविध ।

	141.	14144		
দন্ত সংগ্র মাহের	00	আমি চাহিতে এসেছি		
শাকুৰ কেবে আন্ত	er	আহি ি	.5.	
াল আস্তে ডাখ	58	चामि भिन्दानगढ	7.1	
ात <i>द</i> शमहरू	ler&	আমি ি ি ি		
	7 9	থার তথ্যে সংগ্র	94	
বৃত্তি শ্বস্ত ভগণে	25	(অহা) ৰাগি গোহাদ	45	
র্থিক শরণ্ড ওগনে শ	>	্তিরে মজিন মুখ	5.1	
মেত এ পৰ	80	সমাধিকী ক্লাক্ত ল		
নুষার প্রান লয়ে	3:		19	
নিমান প্রাধ্যের পরে	8	अंबरमा कारत (अरब)	58	
ামার বন সালে 🚉	3,6	वाद कुंग 🤃	977	
Para Eleic	73	खगाँड		
ř.				
ri T		. 2	èv	
3	63			
টেবই ক		%	۵.	

কেন রে চার কিরে ফিরে ও কেম ভাৰবাসা 40 কেছ কালো ৰম বুৰে না φą. প্রপো এড প্রের-স্বালা ξb কোৰা ছিলি সলনি লো ধ্বণো কাঙাৰ আমারে 42 96 (ওগো) কে যার বাদরী ক্ষ্যাপ্য তুই আছিল 38 96 ৺জগো জোরা তে বাবি ধাঁচার পাবী ছিল ¢# 63 প্রবাদী আমি नवन कुल्य कुछ गारव 84 (अ(मा) खामारहरी সহন খন ছাইল সসন 618 চিন্ধ পিপাসিত রে থ্পে শোনু কে ৰামায় 30 45 ওলো ছলর বলের শিক।রী ঝর ঝর বরিবে 40 ভিলো বই ওলো বই তবু মলে বেখে। 90 গুহে কুন্দার মন গৃছে তবে শেব করে লাভ ৯ ৺করী আবার হঠাৎ ভূবে গ্ৰন খনুৱ গোগ B٩ ভূমি কোন্ কাননের ভূল কৰা কোস্দে ৰো বাই 16 কথা তাতে দিশ ব্লিতে তুমি বেলে না এখনি **b**b 86 कृषि करव नौकरव सन्दर কার ছাতে বে ধরা দেব 98 কি রাসিনী বাজালে জগদে ভূমি স্ক্রার মেল 63 कि इन जामात दुवि ना ৪ > তোমর। স্বাই ভাবে। 6.5 বে ীঠে ডাকি ভোষরা হাশিয়া বহিয়া 8 br কে দিল সাবার স্থানাত कातः बद्ध गाँकिम् माना 60 কেন ধরে রাগ বাৰুতে আহত পাবলিনে 45 20 (कम मध्य मानमि इक्टन (वर्ध) रन 4,5 68 কেল বাজাও কাঁকণ নেধ ঐ কে এলেছে 94 346

द्रस्थ वा द्वर्थ वा	ir.	बध्य बध्य श्रमी	44
बीति बोदि काल चारांद	16	মধুর মিবন	78
পুৰাণো দে দিনের কৰা	2.9	মনে হয়ে গেল যমের	41
পুশ বনে পুশ নাহি	45	मम (बोवन निकृत्क	55
क्रम क्रम छटन छटन	3/4	ৰৱি লো ৰৱি	ьþ
বদ্ধ বিশ্বগু লাগে	69	নলিদ মূপে কুটুকু হালি	86
বচু বেঘনার যত	2,6	মা একবার নাড়া খো	99
ৰ্ণু তোৰাৰ কৰুৰ ৱাণঃ	20	ৰদি আনে জনে কেন	b ≥
বৈধুয়া অসমধ্যে কেনতে	86	√ ধনি বারণ কর ভবে	36
বান এখন মূল ক্টেছে	3/5	য্যের ছুলোর খোলা	>>
বৰ পোলাপ ঘোটা	9	বাৰিনী না থেকে	22
ৰলি ও আমাৰ গোলাপ	ą	হাহা পাও তাই বঙ	0.5
বসক আওল তে	be	যেতে হবে আর দেরী নাই	bo
বাজিবে দৰি ৰাশ্ব	65	বে ফুল করে দেই ভ	83
ৰান্ধিৰ কাহার খীণা	teto	বোগিবে কে ভুমি	>-
হাশরী থাফাতে চাহি	٥)	কৃষু বাওৰা আৰু	1997
বিশায় করেছ বাবে	80	তৰ নৰিনী খোল গো	3
বিশ্ব বীশারবে বিশ্বন্দন	11	ভন্ত ভন্ত বালিকা	>6
বৃদ্ধি বেল। ব্য়ে বায	ly fa	- স্থি আ্যারি ভ্রারে	-03
ৰেলা গেল ভোমার	é»	স্থি এতিদিন হার	50
ভাৰ বাদিলে যদি বে	76	স্ভনি গো পারন গগনে	3+2
তালুহেনে শ্ৰি নিভূতে	3.6	স্কলি স্কলি রাধিকালো	27

নাতা বরুব ছেখিনে বা ল্বয়ের এ কুল ও সুল 48 স্থার ক্ষির্থন ভূমি হেৰেগে৷ নক্রাৰ 44 ৰে দালে বীৰে হেবিগা **ভাবন** ধন 100 হাদিয়ে কি বুকাৰি दशास्त्रमा नोशास्त्रमा 84 হায়ৰে সেই ভ বসৰ 68 মান্ত্রার খেলা। ক্ষতি বার বাব এই এই ব্যস্ত 209 484 वाणि चौषि सुद्धान এগেছি গো এসেছি SB2 354 ঐ কে আমায় ছিয়ে >=10 আমার পরাণ বাহ্য চার 104 আমি কারেও বুবিৰে 103 ওই কে পো হেনে চার 122 अदे मधुत सूच कार्य পাৰ্যি চলে এম্ব বলে 103 SOF আমি জেনে গুনে বিৰ अरक कल नियं यन 334 SCC আমি ত বুকেছি স্ব ওকে বোঝা খেল মা 29 6 284 শাসি হৃদত্তের কথা প্ৰয়ো ৰেখি আঁখি কুলে 324 350 ওলে। সখি ছেবি দেৰি দার কেন দার কেন 586 & FC আহা আজি এ ৰসন্তে ওলে। রেখে বে সুধি 288 534 এ कि श्रप्त अकि गांद्र। कारह बारह सिरिट >80 700 क्षड (चेना नम् (चेना नम् कारक किरन मुख शिरन 32,2 300 এভ হিন বুলি নাই কে ভাকে লামি কছ BE 378 এ ভাঙা সুখের মারে কেন এলিরে ভালবাদিলি ১৪৮ 186 এরা সুবের বাসি টাদ হাস হাস

38W

100

ৰীবনে স্বাদি কি প্ৰথম	5+6	ভাৰ বেলে বলি সূত্ৰ	>>>
ভবে সুখে থাক	>10	ভুল করেছিত্ব ভূগ	106
তাল্পে কেমনে ধরিবে	202	মধ্নিৰি বৃধিমার	28+
ভাবে দেখাতে পারিনে	559	খণুর বসস্ত এসেছে	583
ছুৰি কে শে	300	যদের যত কারে শুঁছে	3+6
বিষদ সুজনী আ মি ধেন	254	বিহে পুরি এ কগতে	534
হ্ৰের বিশ্ন টুটিবার নর	281	(মেরা) কলে স্থলে কত	5=8
कृत्य नीक्षादश व्याटक	750	ৰদি কেহ নাতি চায়	581
দেশ চেয়ে দেশ ঐ	500	বেও না ষেও না ফিরে	550
दर्दिया नवा सून करत	30%	বেষল দখিশে বার দুটেছে	349
দে লো সধি ধে	774	नक्य क्रमस सिरम	2/09
ন। বুখে কাথে তৃষি	100	नश जानन का निरंग	352
নিদিবের তরে সরবে	5.0%	দৰি বহে গেল কেলা	>>>
পথবার৷ ভূষি পথিক	2+4.	দৰি সাধ করে যাহা	209
এভাত হইন নিশি	38+	সৰি সে গেল কোথায়	22-
বোদ-পালে ধরা পঞ্চেছ	39.6	সুবে আহি সুবে আছি	153
প্রেমের ভাঁদ পাকা	759	সেই শান্তিক্তবন মুখন) OF
विशाप कटवह बाटव	306	সেত্ৰম কে সৰি	500
ভালবেদে হব সেও	252	দে দিমো ত মগুনিবি	5%
বাহি	লকী-	প্রতিভা।	
শংশ দান্দৰ্ভা একি	148	আৰুকে তবে যিলে সংব	>63
শাহে তোষায় বিভে	582	আর দা আমার সাথে	5%6

5%6

আরি দা আরু দা	54%	কোণা লুকাইলে	>9%
আছে কি এড ভাৰন।	54.	গৰনে গৰনে বাবে তোৱা	581
को। कांच कि त्यांगमारम	365	চন্ চন্ ভাই	Stelle
আঃ ৰেচেছি এখন	>25	ছাড়্ব না ভাই	>45
और दिना गदि थिएन	269	শীবৰের কিছু ধল ম।	249
এই বে হেরি গো	232	ত্রিভূবন বাবে আমরা	368
এক ভোৱে বাধা আছি	302	বাষ্ ধাষ্ কি করিবি	548
একি এ, একি এ	>98	त्मम् दमम् इतिः भागी	240
একি এ পেরে বন	566	দেশহে৷ ঠাকুর	\$6b
এ কেমল হল মদ	365	ন্যি ন্যি ভারতী	>94
এখন कर्स कि दल	760	মিরে আহ ফুগাণ	36V
এত বৃদ্ধ শিবেছ কোণা	160	পৰ ভূগেছিল প্ভিঃ	366
এনেছি মেরে৷ এনেছি	585	আশ নিবেত সট্পেছিকে	548
ঐ মেঘ করে বৃদ্ধি	266	रन्य कि भाग	524
काली काली वरणारत	34 8	ৰাণী বীণাপাণি	296
কি দোবে বাধিলে	>4>	ব্যাকুল হয়ে খনে খনে	350
কি বলিছ সামি	>48	ৰদ্ধি ও কাহায় বাছা	261
কে এক মাজি এ ঘোর) lib	রাধ রাধ ফেল গছ	39>
কেন খো আপন সলে	399	রাঙাপদ পরযুগে	>64
কেন রাজা ভাকিস্ কেন	269	হাঞা ৰহায়ালা কে	283
কোৰাৰ কুড়াতে আছে	Sing	বিশ্ বিশ্বন বন হে	244
কোদায় লে উবাম্যী	544	প্রাৰঃ এবার ছেড়ে	396

সহে না সহে শা কাৰে শোন ভোৱা ভাবে শোন ১৫৩ ব। কি লগা হল আৰাহ খোন ভোৱা খোন Stee সৰ্জাৰ স্বৰায় হোৱী মা 390 ঞ্চাতীয় সঙ্গীত। वर्षि कृषन मरमारबादिनी ১৯৬ এ ভারতে ছাবো নিজা ממו कारण क्रम कारण क्रम কে এনে যায় কিয়ে 120 464 দানৰ জৰি কগাও কেন চেরে আছ গোঁ মা 366· Skg. क्रमगीत वाद्य व्यक्ति ७३ ১৯৪ লাখাৰ বোলোৰা পাছিতে ১৮৯ ১৯০ (কর) পারিনে র'দিতে আনবা নিলেছি আঞ মধ বংসারে কহিলাক পর ২০০ একবার তোরা যা বলিয়া 1665 হে ভাৰত আছি মবীন একি অম্বকার এ ভারত Siré বাউল। আভি বাংল। দেশের त्यामार्कि दि श्राप के 356 व्याभीन करन होता তোর আপন বলে 055 955 দ্যমের। পাদে পথে বাবে। ২০৫ নিশিক্তিন তবুস: যাখিব পুৰু বেঁধে ভুই দান্তা আমাৰ পোনার বাংলঃ **₹** + 8 3-6 আহি তয় করব ন। ২০৯ মা কি ভুই পরের বাবে 272 এবার তোর মরা পাঙে যদি তোর ভাক ভলে 255 2.5 ও আদার বেশের নাটি যদি ভোর ভাবন: থাকে ২১১ 200 প্ৰৱে তোৱা নেই বা যে কোষায় ছাড়ে ছাঙু ৰ ২১৬ 465 बदर यूथ प्रतिम त्राटन যে ভোৱে পাণল বলে 234 ष्टिकि (b) श्यव **करन শাৰ্থৰ জন্ম জান্**রে 845

ব্ৰহ্মগৰীত।

আহ্রম ময় বিক্শিত ಶಶಿಕ আদি যত তালা ভব 069 সকৰে কাণিচ व्यक्ति कर्जनिया 201 229 অমিষেৰ আঁখি 455 দাৰি ৬৫ ৪৪ প্ৰাতে 003 আলি হৈতি সংগঠে चटनक मिरमक नाव REF 266 শীবার রহনী পোরাক সমস্বৰে ধের আলো **২**২৮ 485 মানৰ তুৰি বাংট ध्यम भेषत महरू Ob to 90k আৰু বুইবা থাকি আৰম্ভ হার, বহিছে 0.0% 5.00 অসাম আকাৰে অগ্ৰা স্থানত ব্যৱহে জাগি 445 -48 षारेन बाधि श्रीभवत्र। আহৰ বোধে ২০. a odu আছু বস্তুৱে চিএছিন 414 भागात अ गरंद 023 অংশরে বিচার ভূমি কর जारक इश्व भारक दक्षा ಶಿಶಿಕ 445 আল বুকের বস্থ আৰাৰ মধে। নত কৰে। 444 भाभ दुवि भारेन আঘার বা আছে আহি > 66 100 আদি এনেছে তাহারি আৰাৰ দঙা বিখাঃ 30; 0+6 (আমার) হদর-নমুক্ততীরে ২০৮ আৰি এ ভাৰত 5.2 শানি কোন ধ্য হাত चामादा कर कोरम On br 902 (পারি) প্রথমি (ভাষারে ০০৮ প্রমারেও কর মাজ্বা 更合物 ২০১ আমার ছলনায় মিলে चाकि वस्ति दनक 201 স্থানি কি বলে করিব च्याकि यम श्रीवरम 640 বাবি কেবৰ স্বাধীয়। चांकि अब धन होटह 443

বাবি কেনে ভ্রম ভর কাৰণা করি একালে 2.80 1.6b থানি দীন যতি দীন कि कविति (शास्त्र ₹6+ ₹85 আমি বত বাসনায় বি ভয় অভয় গামে Ohr le 24-चाबि जरमाद्र बन (कीर्खन) ०) -কি হার বাকে আবার ons স্থার কন্ত দূরে মাছে কে স্থানিত ভবি (বীর্ত্তম) ৩১৪ 840 बैका स्टब हरव नहेर्य। तकत कारणेना कारणना 380 633 উঠি চল ক্ৰদিন লাইল কেন বাৰী ভব 6.25 245 (একি) দাধন্যে পূৰ্ণপ্ৰাণ তে বসিধে থাকি 282 93± কেমৰে ফিবিষ, মাও একি এ ক্লব্যু লোভ। 242 285 একি স্থপন্থ হিলোগ 989 কেয়নে বাধিবি ভোৱা 256 এপনে। স্বাধার গরেছে কেবে ভট ডাকিছে 782 505 কোণা আছ এড় এও অঃসম্ম-ধ্বনি 2.80 २६० গভীর রজনী নামিল এ পরবাবে রবে কে 285 684 এবার ব্রক্তি স্থা 196 প্রব মন হতেছ এন 962 এ মোহ-আবর্ণ পাও নীণা বীণা গাওৱে 885 Reu এস হে গৃহ-দেবত। चारहे बरम चाहि 484 - ಬಿಕ್ಕಲ এনেছে সকলে উউ চরণ-ধ্বনি ভবি ভব 支援事 ふりゃ ঐ পোহাইল ভিমির চলেতে তর্নী 286 200 চাহিনা সুৰে হাকিতে খঠ খঠাৰে বিকলে 284 246

384

खटह मी बन-व**शह**

গুহে জীবন-বন্ধত (কীর্ত্তন) ৩১২

কত অজানাৱে লামাইলে ৩৯২

किंद्रस्थित सब याधुनी

চিপ্তবন্ধ চিন্ন নির্ভর

চিবস্থা ছেড না ৰেখিয়

249

244

9)4

কগতে ভূমি হাকা	415	ভূমি শক্ত ধক্ত বে	3#5
ৰগতের পুরেহিত	ల డల	ভূমি করু ভূমি নাৰ	₹48
क्ट ग्रांक ग्राटनेपड	2¢⊭	ভূমি যে সামারে চাও	010
ৰাগিতে হবে বে	9,694	ভূমি হে প্রেমের রবি	84¢
লাগ্ৰহ বিৰ কোলাহল	44≥	ভোষার পদীয়ে	08%
ল্পাদি হে ববে প্রক্ষাত	የረው	তোধার কথ্য হেখা	2,92
জীবনে আমাধ বত	থেপঞ	ভোষার দেশা পাব	294
ভাক যোৱে আ ৰি	998	কোণার প্তাকা বারে	980
জাকি ভোষারে কাতরে	কণ্ড	তোমারি ইকা হৌক	544
ভাকিছ কে ভূমি	445	ভোষারি গেহে পালিছ	ত্য •
ভাকিছ ভূমি লাগিছ	₹6+	ভোধারি নামে নয়ন	42×4
ভূকি অমৃত পাৰ্যাৰে	₹6+	কোনারি মধুর রূপে	445
ভেকেছেন প্রিয়ত্ত্ব	465	্ৰেষাখি রাগিশ	ot 8
তৰ প্ৰেম সুৰ্বার্গে	365	ভোষারি দেবত কর	043
ডবে কি কিবিৰ	565	জোমারে জানিনে হে	292
ভার ভার হরি	३७३	≁ভোষারেই করি ন ছি	400
कीशंद्र व्यानक्षताः।	085	ভোমারেই প্রাধের আবঃ	1,64
ৰ্ভাহার প্রেমে কে	\$40	ভোষার ইতনে রাখিব	441
ভূষি আপনি লাগাঙ	100	তোহা লাগি নাৰ	₹#4
ভূষি কাছে মাই (ক্ৰিউন)	Ø2#	माध (ह इस्त्र चरत	≳≯₽
তুৰি কি গে। পিত।	1,440	ধাড়াও শাবার আখির	deb
ভূবি ছেড়ে ছিবে	448	হিল ভ চলি গেল	Pab

065

দিতা সভা চিৰাৰ

oèo.

255

দিন কুৱাল হে সংবারী

নিবিড় প্ৰৱড্ৱ निम योश (व विम नोत o to 498 দিখানিশি কবিয়া ৰঙন নিবিভ বন শাখাৰে **210** €B© शैर्व कीवन मध निनिनिम हाइस्त 215 265 মিশীৰ শহনে তেৰে হাখি हरे कशायत गरी o4v T00 8 নুক্ষ আণ দাও क्रथ निरमह निरमह 240 466 হৰ দুৱ করিলে পাদপ্রান্তে রাধ সেককে Res 296 কুৰেয়াতে হে লাগ পায় এখন কেন ot. 480 শিহার ছরারে ভূষের কথা তেগেছ २५१ 296 পিশাসা হার মাহি ব্যবহ বেলে এগেছ ক্র **የተ**ሞ পূৰ্ণ ভাৰত পূৰ্ণ মকল র্ম্বার বৈধার মিভিছে ₹₩6 ರಣಕ পেরেছি অভয় পদ ছটি আপ এক ঠাই che 21/8

পেৰেছি সন্ধান তৰ 268 ছয়ারে গাও যোরে OR 1 প্রচণ্ড গর্জনে আসিক ছহাতে বলে আভি **સ96** Ø#6 প্ৰতিহিন স্বামি ছে লেখ্ *চেলে* ৰেখ তেতি৷ 211 02¢ প্ৰতিমিন তথ গাখা 98 **मिताधिरस्य वदारस्य** 299

প্রভাতে বিমল মান্যক নৰ আনকে জাগো રખ 260 প্ৰভু ধেলেছি অনেক नव सर भवन नासि 290 **(19.8**) প্ৰেমানন্দে হাৰ পূৰ্ণ নহন ভোমারে পার না don. 296 কিয়ো দা কিয়ো না আৰু ২৮৬ নাৰ হে ধ্বোৰ-পৰে **₹**₽+ নিকটে দেখিব তোনারে গড় আশা কয়ে 2 bro 980 নিভা নৰ বভা তৰ यदिय वश्चः भारत 212

ক্ষৰ কাও ৰেণনে	964	মহাবিৰে বহাকাৰে	Rich
दर्व (शंग इब) (नेन	898	মহাবিখে মহাকালে	450
ৰনে স্বাহি হে কৰে	ኢ ৯২	মহা শিংহাগনে বলি	494
বহে নিরুত্তর শনস্ক	921	মাৰে বাবে তব দেশা	Refer
বালাও ভূবি কবি	otv	যাধে বাবে তৰ (কীৰ্ম্বৰ)	-00-
ব্যণী তথ ধার অনন্ত	ক্ষণ	মিটিল সম কুৰা	448
বিশহে খোৱে হকা কর	Øh እ	ৰোৱা মত্যের পরে মন	<6.2
বিপুদ তবহুবে	Ø#Ø	মোৰে ডাকি ৰয়ে খাও	≎es
হিমন আনম্ভে শাংশ্য	Obe	(माटव चारत चारत	৩৭৬
বীণা থাকাও ছে	6 00+	বিদি এ আমার সংয	990
বেঁবেছ প্ৰেয়েৰ পাশে	196	যাপ্তরে অনত্ত্তামে	8**
ভক্ত সম্বিকাশ	φ₃≱	যাদের চাহিসা ভোষারে	₹%=
ভৰ কোলাহল ছাড়িৱে	940	ৰাৱ৷ কাছে আছে	⊲₽B
জন হতে তৰ শ্বতৰ	946	নে কেহ দোৱে দিয়েছ	40
ভয় হয় পাছে তব	266	ৰে ভয়ৰীধানি ভাষাবে	KED
ভুবন চইতে ভূবনবানী	450	রক্ষা কর ছে	400.
ভূৰনেশ্বর হে	999	লহ সহ তুলি কং	405
ৰৰ ভূষি নাথ কৰে হরে	464	শক্তিকশ বের তাঁর	919
মনোমোহন প্ৰ	640	পাঞ্চ হরে মন চিন্ত	96A
দলিয়ে যৰ ফে আগিগ	**	শান্তি কর বরিষণ	065
বৰ শহৰে থাৰী	ማታን	ওনেকে ভো ষার লাব	२≽ह
ৰহানকে ফের গো	950	ক্তৰিলে এলেছে দৌহে	456

এডটিলে ওভক্রে সংসাধেতে চারিধার 05tb खबरीन मिनिपिन ভত্ৰ মাসনে বিরাজ 254 सूर्य शांक ब्याद सुधी नक श्रीन केंग्रह नहीं। 250 नंक सारक मिनि दर কুন্দর বহে আনন্দ 2064 প্ৰপৰ বৃদ্ধি ভাঙ্গিৰে বেলে ভারে ভগাবালী। 224 शानी पृषि এर शान द्यांच रकत स्ट्रा शह **২৯**৭ সকল পৰ্যানুৱ কৰি ६तस्य सार्ताः चाकि 41> সকাত্ৰে এই কীখিছে হার কে দিবে আর 965 স্থা হোলের বেঁবে রাধ তে সম তাঁৱে দেখ ನದ কে মহাঞাৰল বলী সভাষ্ট্ৰ প্ৰেম্পৰ 9-5 হেরি তব বিমল মুখ বলা থকে আমতে 500 সফল করছে এড় -90 (क नर्गः यन कवर्यः

944

325

445

OP 2

540

लगर-सम्बद्ध ४८न

জনয়-বাসনা পূৰ্ব

সদ্ধ কেদনা বহিলা

ज्ञक्ष्य-भूमी कश्चित्रहरू

कृति अस्तित-पाद्य

বৰ্জ মাধালে ভোমাৰে

শংসার ধবে মন কেন্ডে

সংগ্ৰহ তিনির মাধে

শংলারে কোন ভর

সংসাৰে ভূমি গাখিলে

.

SNAS

234

තරය

-04-0

ve b

448

942

C+3

1 m K

618

ಅಚಿಕ

Cat

080

9=0

dot

Фаь



ৰ্দানত —একডালা।

ক্ষৰ বলিনী, খোল গো বাঁথি, পুৰ এখনো ভাতিৰ ■ কি ? কেখ, ভোষাতি চুৱাত গতে,

ৰণি, অসেছে ভোষায়ি রবি।

কনি প্রভাতের বাব। নোর, কেব, কেভেছে বুখের বোর,

শেশ্ব, স্থাপ খেলেছে নরম মেলিছা

নৃতন শীৰন লভি !

তবে, ভূমি কি হগনি কামিবে না কো,

আৰি বে তোষান্তি কৰি।

ভ্তৰ আনাত কৰিকা কৰে, আদি গাৰিৰ নীয়ৰ ৱবে,

चर्यः, यत्र जीवरनम् संस्

এছাত নীৰণ, প্ৰভাত নদীৰ,

প্ৰভাত বিৰপ, প্ৰভাত দিশিও, সম্ভৱে ভারা সকলে মিলিছা হিলাবে ব্যৱ ভাল। শিশিয়ে মু'বানি বানি, कंट्य. সৰিং লোহিত হনমে নাজি, বিহৰ সহসী ভারতির পরে লেখা, অপর্য রূপ রাশি। খেকে থেকে বীরে হুইয়া পঢ়িয়া, ₹**7**. নিজ মুখছায়া ভাবেক ছেরিয়া, ললিত অৰৱে উঠিবে ফুটৰা শরদের কৃত্র কাসি। মলিনী, খোল গো আঁৰি, क्रम এৰখো ভাঙিল না কি 🤊 कृत नवि. শাহিছে ভোমারি রবি ভোষাৰি হয়াৰে স্বাসি ৷ সাদি : বেহাগ---একভালা। ৰতি ও আনাৰ খোলাপ বালা, তোল হ'লবি, তোল হ'লবি,

कुछन-हुश कर भोता ।

পি**লু—ংখ**মটা।

বল, গোষাপ, বোরে বল, তুই কৃষ্টিবি লবি কৰে ?
কুল কুটেছে চাবি পাল, টাদ হাসিছে কুবা হাস.
বাহু ফেলিছে দুই বাস, পানী পাইছে মধুবৰে,
তুই কৃষ্টিবি লবি, কৰে ?
আতে পড়েছে নিনির-কথা, গাঁলে বহিছে দুবিমা বাম,
কাছে ফুলবালা লাহি লাহি,
কুৱে পাতার আড়ালে গাঁলের তারা, বু'বানি দেবিতে চার :
বাহু দুহ বতে আসিয়াছে—হত এমর তিরিছে কাছে,
কৃষ্টি কিপাৰয়গুনি, বয়েছে নামে তুলি, তুই কৃষ্টিবি ক্ষি কৰে ?

भिज्ञतिष---- () करुनि ।

कि इस भागात ! वृश्वि या नकति, द्रमय राजित्त्रिष्टि ! क्रमण-किन्नता नकान त्यनार्थ, यन महत्र निथे त्यष्टिय त्यनार्थ, यन कृष्णदेश्य, यस द्र्ष्णदेश्य, यहमा बांशारित त्यनि त्यक्षिर्थ, यस-मून वनि वनि त्यक्षिर्थ,

সহসা সন্ধনি, চেডন পাইয়া, সহস্য সন্ধনি, মেৰিছ চাহিত্ৰা, বাৰি বাদি ভাষা সংখ ৰাকাৰে अमस वर्गविद्वकि । পথের বাজেতে, ধেলাতে ধেলাতে, अस्य शक्तिरवृक्ति । যদি কেই, সুধি, দলিয়া বার। তার পর দিয়া চলিকা বার । ক্তকারে গড়িবে, ডি'ডিয়া পড়িবে, দলগুলি ভার করিয়া পড়িবে. যদি কেহ, দুখি, মুলিয়া বাছ চু আৰার কুল্লম-কোৰল ক্ষয়, কৰ্মনা সচেনি বহিত্ৰ কৰু, আবার ব্যবহু কামিনী-পাপন্ধি, সহেনি শ্রহর চর্প-ডর । চির্নালন গৰি, বাডানে খেলিত, ছোছনা খালোকে নয়ন মেলিক, সুবা পরিমনে অধর ভরিরা, ৰোহিত ৱেণুৰ সি'মুৰ পরিয়া, ৰুব্যে ডাকিড, হাসিতে হাসিতে,

কাছে একে ভারে হিত না বসিতে, বহনা আৰু বে হন্য আমার কোথায় বাহিয়েছি !

বেহাগ---পাতৃংখ্যুটা।

শাসার আধ্রের পরে চলে পেল কে,
বদক্রের বাতার টুকুর দত !
বে বে ছুরে পেল হয়ে গেল রে,

কুল কুটিরে গেল শত শত । বে চলে কেল, বলে গেল মা,

লে কোধার গেল, ফিরে এল না, নে থেতে যেতে চেরে গেল,

কি বেন গেলে গেল,

ভাই লাগন মধ্যে বলে লাছি কুমুম বনেভে ৷

লে চেউরের বত ভেলে গেছে, টারের আলোর দেশে গেছে,

व्यासम प्रितः व्याम तमस्त्रः,

হালি ভার রেখে গেছে যে,

ৰ্মে হল জাঁথির কোথে, সাবাহ বেদ জেকে গেছে লে। বাবি কোবার বাব, কোবার বাব, ভাৰ্ভেছি ভাই একুলা ৰ'লে ! केंद्रबन्न कार्य दुनिया स्थन, শে মুম্বের বোর ! গ্ৰাণের কোণা ছলিতে গেৰ বে **কুলের ডোর** । a কুনুৰ বনের উপর দিয়ে কি কথা বে বলে শেল, ভূবের গছ পাখন হরে নৰে ভারি চলে গেল ৷ হ্মর আমার আকুন হল, नगर चायाप्र पूर्ण अन, কোণা দিয়ে কোণায় খেল সে 🖰

খাস্বান্ত-একভালা।

প্ৰই লাদাবার কাছে বংশ আছে কর্তকে রাধি শাবা।

ভার (कारन कुन १६५ प्रतरह ভূলে গেছে যালা গাঁথা। লেল कूक कूक नाबू बरद गाँद, wy কালে কালে কি যে কৰে বাহ, কার ভাই আধ' ভরে আধ' বনিরে অবিভেদ্নে কত কৰা। লে কে হুদুর স্বপন ভেলে ভেলে চোৰে এসে বেন লাগিছে, पूनावादयम् ज्रावंद भारतम थारपत्र रकाषात्र काणिरक् । চোবের উপরে বেদ কেনে বার, উড়ে উড়ে বার পাবী, শারাধিন ব'তে বকুলের কুল ব'য়ে গড়ে থাকি থাকি ! বৰুৱ আলন, বধুৰ আবেশ, মধুৰ মুখের হাসিটি, মধুর অপনে প্রাণ্ডের মাঝারে याणिक वधूत राशिक !

সিন্ধু জৈরবী—আড়াঠেকা।

करन् यम्ख (नंग, धरात धन मा नाम ! कर्मम् यम्न-सृतः (क्रामित करा। मृत, कर्मम् (त मृत-(मान) १८४ (नन करनाम ! करम् यम्ब (नंग, धरात स्व मा नाम !

এবার বন্ধে কি হে चूँ বীগুলি জাসেনি ছে । আনিত্ব গুঞ্জিয়া করে নি কি সমুপান ! এবার কি স্বীরণ, আগার নি ফুল্বন, মাড়া দিরে সেল না ৩, চলে সেল ভির্মাণ ! কথন বসত গেল, এবার বল না গান !

বতগুলি গাবী ছিল, শেয়ে বুলি চলে পেল, স্বীরণে যিলে পেল বদের বিলাপ তান : তেওঁছে কুলের বেলা, চলে সেছে ছালি খেলা, এতক্ষণে স্কেবেনা লাগিলা চাছিল প্রাণ ! কর্ষন্তরের কোন, এবার হল মা গান !

ক্সক্ষেত্ৰ শেষ রাজে, এসেছি রে পৃত্ত হাওড়, এবার গাঁথিনি যালা, কি তোমারে কবি লান। কাৰিছে নীৰত কাখি, স্থানে বিদাৰ তাৰি, ভোষাৰ নহনে ভাবে হল হল স্কিনান (এখান বসন্ধ পেল, হল না হল না বান (

বেহাগ-----------------------।

ওবেং খোন কে বাজায় ! বন-কুমের নালার গন্ধ বাগির ভানে বিশে বার । কবর চু'রে বালি বানি, চুরি করে হাসি বানি,

ৰ্যমুখ ছাসি মধুৰ গানে গ্ৰাংশর পানে তেনে ৰাখ <u>†</u> ২ংগে। লোন কে ৰাজাৰ <u>†</u>

কুৰবলের ভাৰত বৃদ্ধি বাশির মাথে ওমতে, বকুল ওলি আকুল হয়ে বাশির গানে মুখরে। বনুমাতি কলভান, কানে আসে, কালে আগ,

আকাশে ঐ বধুর বিধু কাহার পালে ছেলে চার।

প্ৰগো খোদ কে বাদার।

মি**জপিলু—আড়বেন্**টা।

হেলাকেলা লারাবেলা এ কি খেলা আপন নমে ! এই বাতালে কুলের বালে বুখবানি কার পড়ে মনে ! আঁথিয় কাছে বেড়ার তালি, কে জালে গো কারার বালি ! ছটি কোঁটা নয়ন সনিল, বেৰে খাল এই নয়ন-কোশে। কোন্ ছারাতে কোন্ উলালী, দূরে বাজার জ্ঞান বালি, খনে হর কার মনের বেছন কেঁছে বেড়ায় বালির গানে। গালা নিন গাঁবি গান, কারে চাহে গাহে প্রাণ, ভক্লতকে ছারার যতন বলে আছি মূল যনে।

যোগিয়াবিভাস—একভালা ্

चांकि শবৃত তগনে, এতাও বগনে, কি জানি পরার্থ কি বে চার। শেকালির শাবে, কি বলিয়া ভাকে, चरे विदश दिस्पै कि त्य शाम । चावि ৰবৰ বাতালে, জনৰ উপাদে, বহে না আবাদে সন হায় ৷ কুন্তবের আবে, কোন কুন বাবে, কোন धूनीक धाकारन यन बाग्र १ কে কেন গো নাই, এ প্রভাতে তাই, चाकि দীবন বিকল হয় গে। ! ভাই हाजिलिटक हात, यस दक्रम शाह, ^{*}এ নৰে, এ মতে, মন্ন গো ^{*}

বপনের ছেবে, আছে এলোকেবে, কোৰ কোনু ছারামরী সমরায় ৷ नानि कान् डेशवटन, वित्रह द्वमस्य আবারি সারণে কেঁদে বার ! चानि यक्ति गीरिय गाम, व्यक्तित भन्नान, দে পাৰ ওমাৰ কারে মার। শামি यमि प्रीपि याना, नरप पूर काना, কাহারে পরাব কুলহার ! পাৰি माराउ 🛎 श्रांग, रहि कवि होन, হিব আশ তবে কার পার 🛚 ভয় হয় যনে, পাছে অবভনে, यन्। বনে বনে কেছ ব্যথা পাছ। কালাংড়া। (৬ গো) কে যার বাশরী বান্ধারে !

সামার বরে কেই নাই বে । ভারে সনে পড়ে, বারে চাই বে ।

ছার সামুল পরাণ, বিরহের গাম, বাঁলি বুৰি গেল জানারে। আদি আবার কৰা ভারে, সানাব কি করে,
বাংশ কানে নোর ভাই বে !
কুরুমের বালা গাঁবা হল না,
ধুনিতে প্'ড়ে ভকার রে,
বিশি হল ভোর, রক্ষীর চাহ
বানিন মুখ গুকার রে !
সারা বিভাবরী, কার পুজা করি,
বৌবন-ভালা সাকারে,
বাংশিবরে হার, প্রাণ নিরে হার,
আদি কেন থাকি হার রে !

বিভাগ।

ওলো নই, ওলো নই।
আমার ইছা করে তোলের ফড মনের কথা কই।
ছড়িরে নিমে পা ছ্থানি, কোণে বলে কামাকানি,
কছু হেরে, কছু কেঁলে, চেরে বলে রই।
ওলো মই, ওলো নই।
ভোষের আহি মনের কথা, আহার কাছে কই।
আমি কি বলিয—কার কথা, কোনু মুখ, কোনু বাখা,
নাই কথা, তরু সাথ শত কথা কই।

ভলো গই, ভগো গই।

ভোষের এত কি, বলিবার আছে, তেবে অবাস্থ হাঁই ! আবি একা বনি সভা। তলে, আপনি ভাগি নয়নজনে,

কারণ কেহ ভবাইলে নীরব বন্ধে রই ।

মিশ্র ইমন —কাওয়ালি :

এখনো ভাবে চোৰে ধেখিনি, গুলু বালি খনেছি,

ৰণ আশ যাব। ছিল দিয়ে ফোনছি। ভূমেছি মুৰতি কালো, ভাবে না দেখাই ভাৰো,

সুৰি বৃদ্ধ, আমি লগ আনিতে ব্যুনায় বাব কি।

ক্ষু বশনে এনেছিল সে, নয়ন কোণে কেনেছিল সে, নে অথবি, নই, তথে তয়ে বই, জাঁবি মেলিতে

ছেবে সারা হট।

কাৰন-পথে যে খুসি সে খায়, কংকতৰে যে খুসি সে চায়, দুখি বন, আৰি আঁথি ভূলে কাছে৷ পানে চাহ কি ৷

নিন্ধ—থেষ্টা।

বাদ সাস্বে ভাষ গোকুৰে কিৰে।

আবার বাধুৰে হানি বনুনাতীরে।

चामश्री कि क'र्व । कि तम म'र्व । कि माना भ'र्व । बाह्य कि म'सूद चूटर । कि चारत वन्द । कथा कि प्रटर सूर्य ।

কথু আর সুখপানে কেরে কেরে বাড়ারে আন্থ নহন নীরে !

विका बारहावा।-- चाकुरभग्छ। ।

षृति কোদ্ কানদের কুল, ড়বি কোন্ পগনের ভারা ! কোৰার বেশেছি ভোনার (चन কোন কামের পার। : কৰে ভূমি পেয়েছিলে, মাঁখির পাবে চেয়েছিলে, ভূপে গিরেছি ! यत्मन्न गरेवा (करने चारक, 明生 ঐ নয়বের ভারা 🛊 कृनि কৰা কোনো না, चृति । চেরে চলে বাও 🕆 টাদের আলোভে ভূষি কেনে গলে ৰাও ্ चानि সূমের বোরে টাদের পানে চেনে পাকি মনুর প্রাপে,

তোৰার স্বীবির বতৰ চুটি তার

চাৰুক কিৱণ-দাবা।

আলেয়া।

স্বি. প্রতিদিন হায়, এনে কিরে হার কে। আমার মাধার একটি কুন্তুৰ হৈ ! ভারে ভবাৰ কে দিল, কোন্ কুল-কাননে, विक नभथ, चानाव मान्छि विविद् ८न । ভোৱ সুধি, প্রতিদিন হার, এলে ফিবে যায় কে 1 मवि. তহৰ তৰাম, বলে শে ধুলাৰ ৰে ! বকুলমালার আসন বিছারে দে ! সেবা কল্পা কাৰ্যায় সকল্প নৱমে 🛊 লে বে কি বলিতে চাম, না ধনিয়া যায় সে ! কেন, স্থি, প্ৰতিদিন হায়, এসে কিন্তে বায় কে !

গি**জু— ফৈ**রবী 📙

কেন বাজাও কীকণ কনকন, গত ছল ভারে ৷

ক্ষে কিন্তে চল, ক্ষক কলতে ৪ গো कल चरत्र : ৰলে চেউ ভূলি, হলকি ছদকি (奉名) क्त (वना ! চাহ খণ্ডে-খণ্ডে, চকিন্ত নয়নে (주류 কার ভরে, কত ছব ভৱে 🖠 বৰ্মা-বেলার জালনে হেলার ঞ্জের পেল বেলা. হাসিভয়া ডেউ. করে কানাকানি 42 ক্লবরে, কত ছদ করে 🏻 নদী-পর্পারে গগন কিলারে ্চের (नप-(सन), হাদিরা হাদিয়া চাবিছে ভোষাতি ভার মূৰ পরে कड इन करते !

বৃদ্ধি

ভায়ান্ট ।

বারণ কর, তবে

18	-1-1 4 .
	সাহিব मा।
पंचि	সর্ব লাগে, যুগে
	চাহিব ন।
বদি	বিরলে মালা গাঁগা.
	সহস্য পায় কাধা.
	তোষার ফুলবনে
	ষ্ট্ৰ না ।
रु णि	ধারণ কর, তবে
	সাহি ব না ।
যদি	বৰকি বেমে যাও
	अवसारक ः
স্থাসি	চমকি চলে শাব
	আন কালে।
यिष	তোমার ৰষীকৃলে,
	ভূলিয়া চেউ ভূলে.
	আমার তরীবানি
	বাহিব মা ৷

বলি বারশকর, ভবে পাহিত না।

কাফি—একডালা।

মন মৌবন নিকুছে গাছে পানী,

"স্থি, কাগো খাগো !"

মেলি হাগ-লগন জানি

"ম্থি, কাগো আগো !"

আজি চঞ্চল এ নিশীৰে

লাগ দাল্ল-গুণ-গাডে

ক্ষা প্ৰথম-প্ৰথম-ভাতে,

য়য নক্ৰ-অট্থীতে

পিক মুহ মুহ উঠে ভাকি—

"স্থি, আগো কাগো !"

কাগো নবীৰ গৌৱবে,

মন বকুল লৌবজে,

মুহ মুগা বীজান

আগ নিকুত নিক্ৰে !

আগ আতুৰ সুৰ-মাৰে,
আগ বৃহ্কশিত বাজে,
মহ হাৰ্য-শহন মাৰে,
এন মধ্য মুবৰী বাজে
মহ অন্তৰ্গে গাকি পাকি—
"গণি, আগো ভাগো।"

कालांस्कृ ।

আমি চাহিতে এবেছি ভগু একবানি মানঃ,
ভব নৰ প্ৰভাভের মবীন নিনির-চানা।
নরমে কড়িত কত না গোলাপ,
কত না কুমুম ফুটেছে ভোষার
মালক করি আলা।
আমি চাহিতে এনেছি ভগু একবানি মানা।

ক্ষৰ শৱত শীতৰ স্থীও

বহিছে তোহারি কেশে, কিশোর অরুণ-কিরণ, তোহার অধরে পড়েছে এবে। चकन रूक बनगर्थ रून,

বেতেছে পড়িয়া ভবিয়া, অনেক কুন্দ অবেক শেকানি

হয়েছে তোৰার ভালা।

লামি চাহিতে এবেছি রুধু একগামি মালা।

কানাড়া।

আমার পরাণ লয়ে কি বেলা বেলাবে, ওপো পরাধ-বিয়ে !

কোখা হতে ভেষে কুলে লেখেছে চরণ-মূলে

कृत्य (वर्षिता। ------

এ নহে গো ভূগদন, ভেনে-আসা ফুলফল, এ বে ব্যধাভরা বন বলে রাগিয়ো।

কেন আবে কেন বার কেহ না **লা**নে।

কে আলে কাহার পাবে কিবের টানে 🖰

রাখ বদি ভালবেনে, চিরপ্রাণ পাইবে নে.

কেলে বৰি বাও তবে বাঁচিবে কি ও ?

আমাত সরাশ লয়ে কি শেলা শেলাবে, ওলো৷ পরাশ-বিহা !

ভৈরবী ৷

বাৰিনী 🔳 কেতে জালালে না কেন. বেলা হব সরি লাজে ৷ মর্মে অভিত চরুপে কেমনে **त्रक्तित शरपंत्र शरक** (খালোক-পরণে মর্যে মরিয়া হের গো শেকালি পভিছে করিবা: কোন মতে আছে পরাণ ধরিয়া, কাহিনী বিধিৰ সাজে। মিবিরা বাঁচিল মিশার প্রদীপ উবার বাতার সাগি : বন্ধনীর পদী পদনের কোপে লুকার খরণ মালি : পাৰী ভাকি বলে—বেৰ বিভাৰৱী.— ব্যু চলে ভাগে স্ট্রা পাবরী, আমি এ আৰুর কবরী আবরি কেমনে বাইৰ কালে গ

कीर्स्टरम् छन्।

বন্ধ বেদনার মন্ত বেক্ষেছ ভূমি হে আমার প্রাণে। বন বে কেবন করে মনে বধে তাতা বন্ধী আনে। তোমারে বধরে করে', আছি নিশিরিন বরে'.

চেয়ে থাকি থাঁথি ভবে' বুবের পানে। বড় আশা বড় গুধা বড় আকিঞ্চন, জোবারি কাসি। বড় পুৰে বড় বুথে বড় অকুরাসে ররেছি বাসি। এ বারের বড় আর, হয়ে গেছে যা বলার.

ছেলে গেছে হন প্রাণ মরণটানে।

বিভাগ।

দ্যায়ের একুল ওকুল মুকুল ভেলে খায়, হায় সন্ধনি । উপলে সহল-বাহি ।

যে দিকে চেয়ে হেখি ও গো সবি,

ছিছু আর চিনিতে না পারি। পরাবে পড়িয়াছে টান, ভরা নদীতে আনে বাধ, আজিকে কি বোর ডুফান স্কনি পো,

কাৰ লাভ বাধিকে নাভি ।

কেন এখন হল পো আছার এই নব যৌবনে (সহস্য কি বহিল কোথাকার কোনু প্ৰনে !

হ্ৰদৰ আগনি উলাব, মহুৰে কিবেছ হতাশ,

জানি না কি বাসনা কি বেদনা গো. আখন। কেবনে শিখারি।

মিঞা—মূলভান ।

भाषांत्र सन बारन शा (हिनवस्ती) । সামি কি কথা ছরিয়া, এ তত্ত ভরিয়া, পুলক রাখিতে নারি !

७८चा कि चारिडा सत्य, ७ इक्ति सद्गतन, উधरण नग्ननराति ।

(ওপে। সঞ্জনি ।) নে স্থাৰচন, নে স্থা-পঞ্জ, আৰু বাজিছে বালি ৷

(জাই) ভূমির। ভূমিরা পাশনার মনে সদর হয় উদাসী। কেন না **লা**নি।

(ওপো) ৰাভাগে কি কথা ভেলে চলে আলে, আকাৰে কি

युष कारण !

(ওপো) বন স্বৰ্ণাৰে, নদী নিৰ্বান্তে, কি মধুর স্থার স্বাচ্চার্য (

সুলের গর বন্ধুত সত জড়ারে বরিছে গলে,

चानि अ कथा अ रामा, सूच-वार्क्सका, काराव प्रतम-स्टब्स

क्षि निष्टमि १

কীর্জনের হুর।

ভালবেনে দুখি, মিডুডে ব্যান আমার নামটি বিভিয়ো—ভোষার ববের বলিরে। আমার পরাশে বে গান বাজিতে, ভাহারি ভালটি শিবিও---ভোমার

. उद्यम-सङ्गीदत्र (वित्रम् वाषिट्यः (नोट्यंट्रेप व्याप्तदः

আহার হুখর পাখীট --কোমার आभान-आभटन ।

মনে করে ধুখি, বাহিছা রাশিয়ে।

আগার হাতের রাষ্ট্রটি—ভোমার

কশক-কন্ধ্ৰ ৷ আমার কভার একটি সুকুল

ভূলিয়া ভূলিয়া বাধিয়ো—ভোমার

অলক-বছনৈ 🖠

আধার শ্রহণ গুড়-বিন্দুরে

একটি বিশু বাঁকিয়ে—ভোমাৰ नकार्ड-हम्पदन !

২৬ পালা

আৰাও মনের ৰোহের যাধুবী মাধিছা রাখিয়া দিলে পো—কোমার অক-দৌরভে !

আবার আকুল জীবন মরণ টুটিয়া নুটিয়া নিয়ো গো— ভোমাব অভূল গৌহৰে ।

মল্লার ।

হেরিয়া ক্লাসক ঘন নীল শবনে,
সকল কাজল আঁগৰি পড়িল মনে।
অসর কক্লামাধ্য,

स्मिकि-**्वर**ना-**वा**काः

নীয়বে চাহিয়া থাক। বিদায়-খণে।

বেগ্রিয়। প্রায়ল খন দীল গগনে। কর কর করে জর বিশ্বুলি হালে.

পুৰুষ থাতিছে বলে পাগল গালে।

আমায় প্রাধ-পুটে
কোম্বামে ব্যবা মূটে,
আহ কথা বেজে উঠে
ক্রম কোপে :
বেরিয়া ভাষক খন নীল লগ্মে :

মিশ্র—বেখমটা 👔

শুরাণো দে দিনের কথা ভূব্যি কি রে হাস !
(৩ সেই) চোখের দেখা, প্রাণের কথা দে কি তোলা বায় ।
(আয়) আরেকটিবার আর রে দখা, প্রাণের বাবে আর,
(খোরা) প্রথম হ্থের কথা কর, প্রাণ কুড়াবে ভাব ।
(খোরা) ভৌরের বেলার কুল প্রথিতি, হলেতি বোলার,
ব্যক্তিরে বালি পান গেয়েতি, বকুসের ভবার ।
মাথে কর ছাড়াছাড়ি, গেলেন কে কোথায়—
(আবার) দেখা বহি হল নখা, প্রাণের নাকে ভার ।

ভৈরবী—তেওরা।

আমি খে রজনী বাছ ফিরাইব ভার কেবলে !
কেল নগলের জন করিছে বিকল নগলে !

र्यार

এ বেশ ভূষণ নহ সৃষ্টি নহ, এ কুছুৰবালা হয়েছে অসং, थारम वासिमी काष्ट्रित, विवह नंतरत । রুখ। অভিনারে এ ইয়ুনা-পারে এনেছি 🖠 লাবি वर्षि" রবা মনো-আশা এত কালবালা বেলেছি ৷ লেবে নিলিলেবে খদন বলিন, ক্লান্ত চরণ, মন উদাসীম,

ফিবিরা চলেছি কোন্ সুধহীন ভবনে ! ভোল। ভাল তবে, কাদিয়া কি হবে মিছে লাব। ভাগে বেতে হল হায়, প্রাণ কেন চার পিছে পার !

कुक्षपुत्रातित चार्यास्त्रत् मथः রন্ধনী-প্রতাতে বলে রব কত !

এবারের মত বস্তু-গত জীবলে।

সিদ্ধু কাৰ্দি---আড়াঠেকা।

কেঁহ কারে। যদ বুকে না, কাছে এলে সরে যায়, নোহাগের হাসিটি কেন চোধের বলে মরে বার 🖠

বাডাস ৰবন কেঁমে গেল, প্ৰাৰ বুলে সূল সুটিল মা. নীৰেও বেদার একাকিনী কেন হৈ মুগ করে বার।

দূৰের খানে চেন্তে ধেৰ, আঁখিকে বিকাও আঁখি, মধুর প্রাণের কথা প্রাণেতে রেখ না চাকি। এ রক্ষমী রহিবে না, কার কথা ধ্ইবে না, প্রভাতে রহিবে কথু চহরের হায় হার।

বেছাগ—স্বাড়াধেষ্টা ।

ছলনে দেখা হল—মধু বাবিনীরে !—
কেন কথা কহিল না—চলিয়া দেল থীবে !
নিক্ষে দখিণা বাহ, করিছে হার হার—
লতা পাতা ছলে ছলে ডাকিছে কিবে জিবে ।
ভূজনের জীবি বারি গোপনে গেল করে—
ছজনের প্রাণের কথা প্রাণেতে পেল মরে ।
ভার ভ হল না দেখা, লগতে গোহে একা,
চিরদিন ছাড়াছাড়ি বদুনা-তীরে !

রাষকে্ধি—একভানা।

কেম থকে য়াখা, ও ৰে বাবে চলে, বিশন বাহিনী গত হলে ! অগন শেষে নয়ন মেলো. নিক-নিক**লী**শ নিবালে কেলো.

कि करप श्रकारना कूनकरन,

ষিদন দামিনী গত হলে !

জাগে গুক্তারা, ভাকিছে পাশী. উবা সক্ষণ অষণ স্থাপি !

জন প্রাবপণ হাসিয়ুৰে, বল, "বাও সবা, ধাক ফুবে !"

ছেকে) না কেখো না আঁবিদলে,

হিলন কামিলী গত হলে !

সিশ্বু—একডালা।

ভবে শেব করে দাও শেব গান, তার পরে বাই চলে। ভূমি ভূমে ধেয়ে এ রক্ষনী, আৰু রক্ষনী ভোর হলে।

বাহ ভোরে বাধি কারে, বল্ল কন্তু বাধা পড়ে 🕈

বলে ৬ধু বালে ব্যবা, দাঁখি ভাবে জনে ৷

নিশ্র-একডালা :

७५ मध्य द्वरणा, वसि नृत्त्व यारे ठरन !

ব্যি পুরাতন গ্রেম চাকা পড়ে বার নব প্রেম-লালে।

ৰদি পাকি কাছাকাছি,

ছেখিতে না পাঞ্চ জ্বাহার মতন আছি না আছি—

তবু মধে বেৰো।

ৰদি কৰু আনে আঁখি-পাতে,

এক বিন যদি বেলা বেনে যায় বনুৱাতে,

এক দিন যদি বীধা পড়ে কাছে শরন-প্রাতে—

তবু মনে বেখে।।

বহি পঞ্জিয়া মদে,

ছन इस कन गरि १४९१ (१४४ नग्रन-कारण—)

ভবু মনে রেখে।

দিশ্ব---একডালা ।

ৰাশৰী বাজাতে চাহি বাশৰী বাজিপ কই 🤉

বিহরিছে দমীরণ, কুহরিছে পিকগণ,

ৰধুলার উপৰম কুমুৰে শাজিল ভই • বাৰকী বাজাতে চাহি বাৰসী ৰাজিল ভই ০

বিকত বকুৰ মূল, বেখে যে হতেছে ভূম.

বেক্চ বকুৰ সূল, বেংশ থে হতেছে ছুৰ. কোৰাকার অলিকুল গুৱুবে কোথায় ৷

নহে কি হলাবন ? কোখা বেই চন্দ্রানন. ভই কি নুপুর-ধ্বনি বন-পথে ওলা বায় ?

একা আছি বনে বসি, পীতৰভা পচে ৰসি, লোঙরি যে মুখ-পশ্চী পরাধ মাজিল, বই । ৰাশবী কালাতে চাহি ৰাশবী বাজিল এই ৫ একবার রাবে রাবে, ডাক বাঁলি খনোলাবে, **আৰি এ মধুৰ চাঁহে মধুৰ হামিনী ভা**ছ । কোথা দে বিধুয়া বালঃ, যদিন মালজী-যালা, রম্বরে বিরহ-জালা এ মিলি পোলার, গার। কবি খে হল আকুল, একি রে বিধির ভুল।

বধুরার কেন ফুল ফুটেছে আজি, বো: সই ! কাৰতী বাজাতে সিয়ে বাৰতী বাজিল কট প

বিঁ বিট---একভালা।

এত প্ৰেম-আলা, প্ৰাণের চিনাদে ভালেণ

কেমনে স্বাহে সে পাসরি :

লেখা কি হাসে না **চাঁদি**নী বাগিনী. তৰে.

সেধঃ কি বাজে লা বাপরী।

হেখা সমীরণ বুটে মুক্তবর্ম, দৰ্খি.

দেখা কি পবন বহে না।

ভার কথা যোগে করে অক্তমণ, নে যে

मिश कथा कांद्र करह मा !

परि বাহারে বাজি সে ভূগিবে বছনি, আমারে ভূলালে কেন সে <u>†</u> এ চির লীবন করিব হোদন, 영 (해 এই ছিল ভার বাদসে ! কুজুৰ-পর্বে নরনে নরনে स्रेप কেটে ছিল প্রথ রাতি রে. কে ভানিত ভার বিরহ জানার ठाव. হবে শীৰনের সাধীরে । ৰূমে নাহি হাগে, তথে যদি বাকে, र्वार কোৱা একবার দেখে আছ. **∮**ۍ নরনের তুরা, পরাধের আবা, চরণের তলে রেবে আয় ্ নিয়ে যা' রাগার বিশ্বহের ভার. পার কত ভার চেকে রাখি বর্। পারিশ্ যদি ত আনিস্ হরিয়ে কার এক কোঁটা তার জীপি লগ । এত প্রেয় সখি, ভূলিতে হে পারে, मां मा তারে স্থার কেছ সেব না। कथा साहि कव. इव लात वर. বাৰি

यान यान नवे (वेवेन) १

যিছে, বিছে স্থি, বিছে এই প্রেয়, W C*11 विष्क् भेतार्थय वास्त्य (কুৰ-দিন হায়, ব্ৰে চলে বায়, ቴ ርተነ चौत किरत चार चारत में।

कारमधा - यद ।

र्विभाग करबाह बाट्य नवन-बरन. এখন ফিরাবে ফারে কিনের ছলে !

আজি বধু-স্বীরণে, নিনীধে কুস্তম-বনে, अशास्त्र अरक्षरह महत्त्र वक्का-करण. এখন দিরাবে ভাষে কিলের ছলে। লেদিনে৷ ত ষ্ণুনিখি, প্রাণে পিয়েছিল মিশি, मुक्ति व ननतिनि क्रूप्य-स्टल :

কুটি লোচাকের বাণী, যদি হত কলোকানি, ৰদি এই মালাখানি প্রাত্ত গলে।

এখন দিয়াবে **আ**রু কিলের **হ**লে।

ষণুৱাতি পূর্ণিমাত, ভিত্তে আতে বার কার. নে কন ফেরে না স্থার যে পেছে চ'লে।

ছিল তিখি অস্তুক্ত, ওরু নিষ্কেষের স্কুল, চিরদিন স্থাকুল পদ্মপ কলে ! এখন বিয়াবে তারে কিলের হলে !

ভৈরবী—একতালা।

আমি নিশি নিশি কত রচিব শয়ন— আফুল নয়ন রে ! কড নিভি নিভি বলে, করিব মতনে

কুত্ব চৰন বে : জত বরত ধামিত্রী চইবে বিজ্ঞা,

বসস্থা থাবে 6লিয়া) কত উদিৰে তপন, আশার স্থপন

প্রভাতে ঘাইবে ছলিয়া : এট নৌবন কত রাখিব বাঁহিয়ঃ

মরিল বাহিনা রে ! নেই চত্রণ পাইলে করণ মাগিব

সাধিলা সংখিয়াতে : আন্তি কাত পথ চাতি এ জনম বাতি :

বামি কার পথ চাহি এজনম বাহি. কার জর্মন বাচিতে '

বেন আসিবে বলিয়া কে গেছে চলিয়া. ভাই খানি বনে খাছি হে। আই সালাট গাঁৰিয়া পৰেতি মাৰাৰ. নীলবালে তথ্য ঢাকিয়া. তাই বিক্স-মালহে প্রায়ীণ জালারে একেল। ব্রেছি জাগিয়া । ও ৰেং ভাই কণ্ড নিশি চাৰ ওঠে হালি. ভাই কেঁদে যায় প্রভাতে। ও গো তাই কুল-বনে মগু-সমীরণে কুটে কুল কন্ত শোভাতে। ৬ই বাশি-ছর তার, আনে বার্বার. সেই গুৰু কেন লাবে না ! এই সংয়-আসন শুক্ত পড়ে থাকে, किए यात्र ७५ वांगना । হিছে প্রশিরা কার বারু বহু বরে, বৰে বধুনার কহরী, কেন কুছ কুছ পিক কুছরিয়া ভঠে ব্যদিনী যে থঠে শিহনি ! ও গো. যদি নিশি-শেষে আনে হেনে হেনে.

মোৰ হাতি খাব বৰে কি।

এই স্থাপরণে স্থীণ বদম বলিন
আমারে বেরিয়া করে কি !
আমি সাত্রা বজনীত সাঁথা মুল্যালা
এইভাত-চরণে করিব.
৬ কো আছে সুপীত্র, বসুনার জল,

মিশ্র তৈরেঁ।।

দেৰে ভাবে আমি মবিৰ।

(আৰা) কাৰি পোহাল বিভাৰতী।

সাত্ত নয়ন তৰ সুস্থিত।

সান প্ৰদীপ উবানিল-চঞ্চল,
পাপুৰ বৰ্বৰ গড অভাচল,
মৃত্ত কাৰিবল, চল সৰি চল,
লক্ষে নীলাঞ্চল প্ৰতি।
শ্বত-প্ৰভাত নিৰামৰ সিৰ্থাল,

শার সমীরে কোমন পরিমন, নির্জন বন্তস শিশির সুশীতল, গুলকাকুল তক্তবল্পী।

বিরহ-শর্মন কেনি যদিন বালিকা, এগ নব ভূবলে এগ খেঃ বালিকা,

সাঁথি বহ অঞ্চলে নৰ শেকালিকা। অঞ্চলে নবীন কুলবঞ্জনী !

বেহাগ - একডালা |

ভগু বাওরা আসা, ভগু ত্রোভে তানা,
ভগু আলো পাঁখারে কাঁদা হাসা !
ভগু দেখা পাওয়া, ভগু ছু মে বাওরা,
ভগু দুরে বেতে বেতে কেঁদে চাওরা,
ভগু নব হরাশার আগে চলে বার,
গিছে কেবো বার মিছে আশা !
অশেব বাসনা সয়ে ভাঙা বল,
ভাঙা ভরী ধরে ভাসে পারাবারে,
ভাব কেঁদে মরে ভাঙা ভাবা !
স্বাহ্ম সদরে আব পরিচর,
আধ্বানি করা সাল নাহি হয়,
নাহর ভরে ক্রাসে, আব বিবাসে,
ভগু আধ্বানি ভাববাসা !

কেদারা--কাওয়ালি :

স্থি, আমারি ছয়ারে কেন আসিল, মিলি ভোরে যোগী ভিথারী,

কেন কল্পখনে বীৰা খাজিল ৷

ক্ষেত্ৰ কাৰ্যৰ সংগ্ৰাম সাম্পন । আনি আনি নাই ব্যৱহার, চোৰে গছে মুখ তাহ,

ভাবে ভাকিব কি কিবাইৰ ভাই ভাবি লো।

প্রাবণে বাঁধার ছিলি, শব্রতে বিষদ মিলি,

ৰদক্তে হবিন বাহু, বিকশিত উপবন।

কত ভাবে কত গীতি, গাহিতেছে নিভি নিভি, বন নাচি লাগে কালে, আঁথি বলে ভাবিন।

্দেশ মল্লার---রপক।

এবন দিনে ভাবে বলা বাহ,

এবন দেনে তারে বলা বাহ. এমন বনবোধ বহিবার।

ज्ञामम स्थापनाटः योजन केट्संटः,

তপ্ৰহীৰ ধৰ ভ্ৰসায় ।

নে কথা ভানিৰে না কেব সায়-

নিভূত নিৰ্কান চারিধার :

হলনে মুখোনুখী। সভীর হবে হখী। আকাশে কল ধরে অনিবার। কণতে কেব খেন নাহি আর।

নুষাক সংসার সিছে সবং
নিছে এ জীবনের কলরব :
কেবল কাঁথি দিয়ে - আঁথির সুবং পিয়ে
ক্রমর নিয়ে ক্রমি অনুক্র,
কাঁথারে নিয়েশ সেয়ে আয় সব !

তাহাতে এ স্বগতে কতি কা'হ.
নামাতে পাবি বদি মনোভার :
শ্রাবণ বরিষণে, একদা গৃতকোণে,
হ' কথা বনি বদি কাছে ডার,
ভাহাতে আনে বাবে কি বা সাহ :

বাাকুৰ বেকে আৰি বহে বার, বিভাকি খেকে খেকে চযকায়। ৰে কথা এ জীবনে, বহিয়া গেল বনে, সে কথা আজি বেন বলা বাত---এমন ঘন্যোৱ ব্যিকার!

ইমন কল্যাণ—রাপভাল।

বাংন পাও ভাই লও, হাসি মূৰে ছিৱে ৰাও, কারে চাও, কেন চাও, আনা কে প্রাতে পারে। সবে চার, কে বা পার, সংসার চলে বার, বে বা কানে, যে বা কানে, যে বা পড়ে হাকে বারে।

বেছাগ :

আমি কেবলি স্থপন করেছি বপন বাতাসে,— ভাই আবাধকুমুখ করিছ চয়ন হতাশে। ছারার মতন মিলায় ধরণী, কুল নাহি পায় আশায় ভয়নী, মানস-প্রতিষা ভাসিরা বেড়ার আকালে। কিছু ৰাধা পঢ়িব মা গুৰু এ বাসনা-বাধনে। কেং আহি দিক ধরা গুৰু এ হুকুম-সাধনে। আপনার মনে বনিরা একেনা, অনল নিধার কি করিছ খেলা, বিল-শেবে দেখি চাই হল সব

আৰু কিবলি হুপদ কয়েছি বুপদ বাভালে !

বাহার—কাওয়ালি।

সভাবে।

সব মক্কময়, সলয় অনিল এসে, কেঁলে শেবে কিংব চলে কার কন্ত শন্ত কুল ছিল স্বলয়ে, ঝরে গেল, আশালতা গুকাল, গালীগুলি লিকে দিকে চলে বায়।

প্র যে শেই ত বসর ভিত্রে এল, রুধয়ের কমন্ত ভুরার গু

ওকান পাতার ঢাকা বসজের মৃত কবি। প্রাণ করে চার চায় !

इवारेन गरुनि ।

প্রতাতের মৃদ্ধ হাসি, কুলের রপরাশি, কিরিবে কি স্থার ! কি বা কোছনা কুটিত রে ! কি বা বামিনী ! সকলি হারান, নকলি গেল য়ে চলিয়া, প্রাণ করে হার হার !

পুরবী — কাওছালি ১

বে ফুল বৰে সেই ভ করে ফুল ভ থাকে **ফুটডে.** বাতাস তারে উড়িংগ নে যার, মাট মেলার মাটডে। পদ্ধ দিলে হাসি দিলে, ফুরিমে গেল শেলা ! ভালবাসা দিয়ে গেল, গুটি কি হেলাকেলা !

পস্থাক্ত ।

শাষরা রজীছাড়ার দল !
ভবের পদ্ধশ্যে জন সদা কর্চি উল্মল ।
বোদের শাসা যাওয়া শৃক্ত হাওয়া, নাইকো দলাফল !
নাহি জানি করণ কারণ, নাহি স্থানি বৃত্তপ থারণ,
নাহি খানি শাসম বারণ গো,—
শাষরা, আগন বোশে মনের থোঁকে ছি'ছেছি শিক্ত।

লথী. ভোষার বাহনগুলি, ধনে পুলে উঠুন কুলি,
হুঠুন ভোমার চরপগুলি গো।
আমরা কছে লয়ে কাবা কুলি ভিত্ব বহাতল।
ভোমার বন্ধরেতে বাধাবাটে, বোষাই করা সোনার পাটে,
অনেক রয় অনেক হাটে গো।
আমরা নোওর-টেড়া ভাঙা তরী তেসেছি কেবল।
আমরা এবার বুঁডে দেখি, অকুলেতে কুল বেলে কি,
বীপ আছে কি ভবসাগরে।
বিভিন্ন না কোটে, দেখ্য ভূবে কোবার রসভেল।
আমরা কুটে সারাবেলা, কর্ব হতভালার দেকা,
সাব পান পেন্ব বেলা গো।

ष्ट्रशाली ।

কঠে যদি গান না মাসে, কর্ব কোলাহল !

(ও গো) ভাগাৰেবী পিতাৰতী, নিট্ৰ আমার আৰু ! এবার তবে আজা কর, বিনার ধবে নাম ! জীবনের এই বাসর-রাতি, পোহার বুলি, নেবে বাজি, বধুর বেখা নাইক, তথু প্রচুর পরিবাস ! এখন বেনে গেল বাপি, ওকিবে এল পুশ্বাপি, উঠ্ন তোমার স্ট্রাসি কাপোরে স্থাকাশ ! ছিলেন বাঁর। স্থামায় মিবে, গেছেন যে যার মবে কিবে, স্থাম রহা ঠাকুরাণী বুবে টাফি বাস।

ভৈরবী - কাওয়ালি।

কানি রে কি সুকাধি লাকে ? চপনা সে বাংবা পচ্চে না ৰে ! ক্ষমিয়া সংধয়-বাংবা, বাংপিয়া রাখিলি বাংয়ে, কথন সে হুটো এল ময়ন-বাংবা !

रेवन **भूशांति—काश्रांति** ।

বৈৰা, অসময়ে কেন হৈ প্ৰকাশ ।
সকলি ৰে অহা বলে হতেছে বিবাস ।
এ যে গগনের তারা,
মর্ত্যে এল পথহারা,
এল ভূবে অঞ্জনেত পুলকেন্দ্রি হাস

রামকেলি--কাওয়াদি :

যদিন মুখে সূটুকু হাসি.

ब्रुपंक् इनश्चनः !

মলিম বসন ছাড় সবি.

পর আছরণ।

कृष्यम-वद्यमः ।

चङ-(राष्ट्र) क(कन-(प्रच),

শাৰার চেয়েৰ দিক্ না দেখা.

শিধিল বেশী ভূলুক বেধে

ৰাউলের জ্ব ৮

ক্ষাপা ভূই, আছিস্ আপন ছেৱান্ হবে।

ৰে আলে ভোলাত পালে, দ্যাই হালে দেখে' ভোৱে :

বে ভালে ভোকার সালে, কবার হাকে দেখে ভোরে। **ধকতে বে যার আ**ছে আগম কা**জে দিবা**নিকি.

ভারা পায় না বুঝেছুই কি খুঁকে, ক্ষেণে বেড়াস্ কনম ভোৱে।

ভোর নাট অবসর, নাটক দেশের ভবের যাবে,

ভোৱে চিন্তে যে চাই, সময় নঃ গাই নানান্ কাছে।

ও বে বুই কি গুনাতে, এত প্রাতে সরিদ ছেকে.

७ ८४ पूर १४ छन्।८७. या व्याहरू नावर हम्हरू. ७ ८२ विषय स्नामा सामानाका. सिवि नवात्र शासन कहतु । ও রে কুই, কি এনেছিন, কি টেমেছিন্ ভাবের লাগে.
তার থি মূলা আছে থারে। কাছে কোনে। কালে !
আমগ্র: লাতের কালে হাটের মানে থাকি ভোমার,
কুমি কি ফেইছাড়া নাইক সাঙা, গ্লেছ কোন মেশার মোনে।
এ লগং আমর মতে আপুন পথে চলে যাবে,
বসে জুই আরেক কোণে, নিজের মনে মিলের ভাবে,
৪ রে ভাই, ভাবের সাথে ভবের মিলন হবে করে।
মিছে জুই ভারি লাগি আছিম জাগি, মা আনি কোন্ আশার

টোরিভৈরবা---এক ভালান

৩র আমার হঠাৎ দুকে যার।

কোন্ খানে তে কোন্ পাযাগেশ গাল।

নবীন ভরী নতুন চলে, দিইনি পাড়ি অসাধ ছলে,

বালি ভারে খেলার ছলে কিনার কিমারায়।

কোন্ছিল লোভের ভারে, এক। ছিলেম কর্ম ধরে।

কোপেছিল পালের পরে মধুর মূল্যায়।

সংখ ছিলেম আপেন মনে, মেন্ন ছিলেম না গগন-, নাবে,

লাগাবে ভবী শুনুষববন, ছিলেম মুন্ন আবার।

বলিত---আড়াঠেকা।

তোরা বনে গাঁধিনু মালা, তারা গলার পরে ।
কথন বে ওকারে যায়, থেনে ধের হে অনানরে ।
তোরা তথা করিস্ হান, ভারা ওছু করে পান,
ত্বার অরুচি হলে ফিরেও ত নাবি চায়,
ধহরের গালেখানি ভেঙে দিয়ে চলে যায় ।
তোরা কেবল হাসি দিনি, ভারা কেবল বনে আছে,
চোখের কল দেখিলে ভারা, আরে ত রবে মা কাছে ।
আনের বাধা প্রাণে রেখে, প্রাণের আন্তন প্রাণে চেখে,
পরাণ ভেঙে মধু দিবি অরুচাকা হাসি কেনে,
বুক কেটে কথা না বনে, ওকারে পড়িবি শেখে ।

মিশ্র—একভালা 1

তোমবা হাসিয়। বহিন্না চলিয়া বাও. কুৰুকুত্বক নহীন লোভের মত। আমরা ভাঁরেতে দাঁড়ায়ে চাতিয়া থাকি. বহুমে ভবহি মনিছে কাহনা কত। আপনা আপনি কানাকানি কয় সুৰে, কৌতুকভটা উছলিছে চোণে সুৰে, কমল চরণ পঞ্চিতে বরণী নাবে, কনক নুধুয় রিনিকি বিনিকি বাজে।

মলে মন বাবিছ বলপাৰে,
বাহতে বাহতে মড়িত গলিও গণা,
ইঞ্জিবনে ধানির। উঠিছে বাসি,
নমনে নহমে বহিছে গোপন কৰা।
বাধি মত করি একেলা গাঁধিছ কুল,
মুকুর লইয়া ঘতনে বাধিছ চুল।
গোপন ক্ষমে মাপনি ক্রিছ খেলা,
কি কথা ভাবিছ, কেমনে কাটছে বেলা।
চকিত পলকে মলক উড়িয়া পড়ে,
ইয়াং হেলিয়া আঁচল মেলিয়া বাও——

ইবং কেলিয়া আঁচল মেলিয়া বাও--নিমেৰ কেলিতে আঁবি না মেলিতে, দর।
নরদের আছে মা কামি কাইারে চাও !
বৌহনরাশি টুটিতে বৃটিতে চায়,
বস্তে শাসনে বাধিয়া রেখেছ কার।

তত্ব শভবার শতংগ হইয়া হুটে, চরিতে কিবিতে বল্লি চলকি উঠে।

আমরা মুর্য কৰিতে লানিনে করা.

কি কথা বলিতে কি কথা বলিয়া কেৰি ! অসমৰে পিতে লবে আপনাৰ কম

প্ৰকলে বিয়ে চেহে থাকি থাঁথি থেলি । ভোষরা দেখিল চুপিচুপি কবা কণ্ড.

স্থীতে স্থীতে হাসির। স্থীর হও।

स्मम औष्टम ब्राक्टल है।नित्र। गरत

ছেনে চলে' যাও আশার অতীত হ'য়ে।

পামরা রহও প্রোধ বড়ের মত আগন আবেগে ছুটিয়া চলিয়া আদি :

বিশুন আঁগতে স্বীম স্বাকান ছেৱে

টুটিবারে চাহি স্থাপন রলম্বরালি।

ভোমরা বিছ্লি হাসিতে হাসিতে চাও,

শাঁণার ছেবিয়া নয়ম বিধিয়া দাও, গগদের থারে শাগুলের রেধা পাঁকি,

চঁকিত চল্লগে চলে' ৰাও দিলে ক'।কি।

অষতনে বিধি গড়েছে মেনেত কেই,

নরণ অধ্য পেয়লি ভাষায় তরে'

মোহন মধুর বস্ত কানিনে বোরা,

আপনা প্রকাশ করিব কেবন করে' †

তোমরা কোধ্য়ে আমহা কোধ্য় লাছি !

কোন প্রকানে হব না কি কাছাকাছি !

তোমরা কাসিয়া বহিরা চলিয়া বাবে,

আমরা গাড়ারে বহিব এবনি ভাবে !

কীর্তনের হার---রূপক।

বাঁচার পাবী ছিল লোনার বাঁচাটিছে, বনের পাবী ছিল বনে। একলা কি করিয়া বিষ্ণা হল গোলে, ছি ছিল বিধাতার বনে। বনের পাবী বলে, বাঁচার পাবী আই, বনেতে ঘাই গোহে বিলে। বাঁচার গাবী বলে, বনের পাবী আর, সমের পাখী বলে—না,
আমি নিকলে ধরা নাহি দিব।
বাঁচার পাখী বলে—হার,
আমি কেমনে বনে বাহিরিব।

বনের শাষী গাহে বাহিরে বলি বনি,
হনের পান ছিল বক:
বীচার পানী পছে শিবানো বুলি ভার,
গোহার ভাষা হই বভ:
বনের পানী বলে, বাঁচার পানী ভাই,
বনের পানী বলে, বনের পানী ভাই,
বাঁচার পানী বলে, বনের পানী ভাই,
বাঁচার পানী বলে, বনের পানী ভাই,
বাঁচার পানী বলে, নার পানী ভাই,
বাঁচার পানী বলে, নার পানী ভাই,
বাঁচার পানী বলে, নার
বাানি বিশানো গান নাহি চাই,
বাঁচার পানী বলে,—হাহ,
বাঁচার পানী বলে,—হাহ,
বাঁনি কেরনে বন-বাংন গাই;

বনের গাণী বনে, আকাশ বদনীল কোবাও বাবা নাহি ভার ৷ বাঁচার পাবী বলে, বাঁচাটি পরিপাটী
ক্ষেদ চাকা চারিগায়।
বনের পাবী বলে—আপনা ছাড়ি বাও
ক্ষেত্র নাবে একেবারে।
বাঁচার পাবী বলে, নিরালা ক্ষরকাবে
বাঁধিয়া রাব আপদারে।
বনের পাবী বলে—না,
সেবা কোবার উড়িবারে পাই।
বাঁচার পাবী বলে—হার,
বেলে কোবার বাঁসিবাধ ঠাই।

এবনি ছই পাৰী গোধারে ভাৰবাদে
তবুও কাছে নাহি পার।
বাঁচার কাঁকে কাঁকে, পরশে মুখে মুখে,
নীর্ঘে চোখে চোখে চার!
ছ্মানে কেছ কারে, বুবিতে নাহি পারে,
বুবাতে নারে আপনার।
ছ্মানে একা একা, কাপটি মরে পানা,
কাতরে করে কাছে আর!

বনের পাধী বলে—না,
কবে থাঁচার কথি দিবে বার !
বাঁচার পাধী বলে —হার,
ধোর শব্দিত নাহি উড়িবার]

ভৈরবী--কাওয়ালি।

কেম মহন আপনি ভেবে বায় (অবে)।
কেম মন কেন এমন করে !
মেন বংলা কি কথা মনে পড়ে,
মানে পড়ে না গো, তবু মনে পড়ে।
চারিদিকে সব মধুর নীরব
কেন আমারি পরাপ কেনে বর,
কেম মন কেম এমন কেম রে।
মেন কাহার বহন গিরেছে অনারহে,
বালে ভারি অবতন প্রাণের পরে।
বেন ক্রপা কি কলা মনে পড়ে
মানে পড়ে মা গো, তবু বনে পড়ে।

বিজ্ঞা — কাওয়ালি।

ভগো ভোৱা কৈ যাবি পাৰে।

আমি ভগ্নী নিয়ে বদে শাছি নদী-কিনারে।
ভ পারেতে উপবনে, কত খেলঃ কভজনে,
এ গারেতে বৃ-ধ্ মন্থ বারি নিনা রে।
এইবেলা বেলা আছে শাহ কে যাবি!
বিছে কেন কাটে কাল কত কি ভাবি।
হুৰ্যা পাটে বাবে দেমে, সুবাভান হাবে গেনে,
ধেলা বছ চায় যাবে সহায়-শাধানে।

বাগেখ্রী---স্বাড়থেম্টা।

অনয় সাগের মাঝে লাও ভরী ভাসাইরা,
পেছে হুবং, গেছে স্থাং, গেছে আনা কুরাইরা।
নালুবে অনত রাতি,
কানরা কুলনে বাত্রী
কলুবে শরান সিলু, নিথিতিক হারাইরা।
লাবি রাহছে ছিল্ল,
প্রশাস্ত স্থান নীর নীন পুরে মিশাইরা।
নাহি সাড়া মাহি শক্ষ,
ব্যান বাহ বিবং, মুই বাহ প্রসারিরা।

মিঞ্চমেয়ার 🕡

থত কর বহিবে বারিবার।।

হার পধবানী ৷ হায় পতিহীন : হায় গৃহহার৷ ৷

ফিলে বায়ু সাহাখনে, ভাকে কালে

জনহীন অসীম প্রাক্তরে.

तकनी नीशांद्रः !

অধীরা ষমুৰা ভরদ-আজুলা অকুলারে, ভিমির-দুকুলারে !

নিবিড় নীরদ পগনে গরগর পরকে সকনে.

চৰৰ চণৰা চৰকে নাছি শশিতাল্ডা

গৌড় মল্লার---চৌতাল।

प्रकृत पन काहेल प्रशंत पना**रे**गाः.

ন্তিমিত দক্ষিণি, ভত্তিত শাদন,

দ্ব চরাচর আফুল -- কি হবে কে জ্বালে,

ঘোরা রক্ষনী, হিক-দলমা ভয়বিভন্য !

চৰকে চৰকে বহনা দিক উল্লি,

চকিতে চ্কিতে মাজি **হুটল বিজ্ঞা**,

শর ধর চরচের পদকে বদকিয়া,

বোর ভিবিরে ছার গ্রন্থ-বেছিনী ;

গুৰু গুৰু নীয়ৰ সমস্যে কৰু শীখার গুমাইছে, সুহস্য উঠিল জেগে প্রচণ্ড সমীয়ণ কড় কড় বাল।

শক্ষরাভরণ — মিঞ্জজাল।

विश्ववीभावत्य विश्ववस त्याशित्सः !

इति वत्स सक्काल राम छेशवरम

वही माम शिविश्वदः भागावात्तः,

निका कार्य मसम मन्त्रीरु पश्चितः,

निका कुरावम छनियाः;—

सर वम्रदसः नव ध्यासमाः छेदम्य सर !

चिकि पश्चाः छनि सक्ष्य ध्वस्य मृतः,

छनि १४ छनि सक्ष्य श्वस्य मृतः,

शिक-कृष्य शून्यदास विकासः,

वृद्ध वाद् विरामान-विरामान विरामान विनाम महत्रायत्र मार्थः,

শৃষ্ট্ বায়ু বিলেগন-বিলোল বিভোল বিশাল সংগ্ৰেছ **মাথে.** শ্ৰুণীত সুবালিত বাজে !

প্রামল কাভার পরে অনিক সঞারে বীরে রে. নদীতীরে শরবনে উঠে ধ্যমি স্বস্তু মন্ত্রর, কভ দিকে কভ বাদী, নব নব কভ ভাষা,

संज संघ तुमवाचा !

আষ্ঠেচ নৰ আনন্দ, উৎসৰ নৰ !

व्यक्ति क्योर, नीम व्यवस्य क्षत्र वारम,

(यम (त अन्यक्षेत्री भवते मारह ।

করে পর্জন নিক'রিণী স্থনে,

হের ক্ষম করাল বিশাল নিরাল পিয়াল ভাষার বিভারে।
উঠে রব ভৈতৰ ভাষে।

' প্ৰদ মনাধ প্ৰত সাহিছে জীখাৰ বাতে :

উলাদিনী দৌলামিনী বঙ্গতরে বৃত্য করে অভ্যতদে।

হিকে দিকে কত বাণ্ডি, নৰ নৰ কণ্ড ভাৰা,

হার করে রস্থার।

আবিদে নৰ আনত্ব, উৎসৰ নৰ 🛊

অভি নিশ্বন, অভি নিশ্বন উ**জ্জ্ব সাজে**,

ভূবনে নব শার্মসন্মী বিরাজে !

নৰ ইন্দুদোধা অন্তৰে বান্তৰ ;

অভি নিৰ্মন হাস-বিভাহ-হিকাৰ আঞাৰ নী<mark>ৰাম্বর মাৰে</mark>

ে বেত ভূষে বেত বীণা বাৰে !

উঠিছে আলাপ মৃত্ মণুর বেহাগ তানে,

চন্ত্রকরে উনসিত সূত্রবনে বিনিয়বে কল্ড। আনে রে, দিকে হিকে কভ বাই, মব নব কভ ভাষা,

1464 48 4141 44 44 40 014

মর কর বসবারা !

কীর্তনের হুর।

আমার কে নিবি ভাই, নঁপিতে চাই আপনারে !
আমার এই বন গলিরে কাক ভুকিয়ে
সলে তোদের নিয়ে যা বে।
ভোৱা কোন্ রূপের হাটে, চলেছিস্ ভবের বাটে,
পিছিরে আছি আমি আপন ভারে,
ভোদের ঐ হাসিখুসী হিবানিতি দেখে মন কেমন ভরে!
আমার এই বাধা টুটে নিরে যা' ব্টেপ্টে,
পড়ে থাকু মনের বোঝা ঘরের হারে।
বেষন ঐ এক নিষেবে বস্তা এনে ভালিয়ে নে বাম পারাধারে।
এত যে আনারোমা, কে আহে আনালোনা,
কে আছে নাম ব'বে লোর ভাক্তে পারে।
বিদি বে বারেক এনে গাভার হেনে চিন্তে পারি দেখে ভারে।
বিদি বে বারেক এনে গাভার হেনে চিন্তে পারি দেখে ভারে।

शृद्रवी ।

বেলা পেল তেমোর পথ চেরে।
পূচ বাটে একা আমি, পার করে লও থেয়ার নেরে।
তেতে এলেম খেলার বাঁনি, চুকিয়ে এলেম কারা বালি,
সঞ্চাবারে প্রায়কারে ঘূমে নয়ন আমে ছেয়ে।

আৰাড়ে নৰ আনন্দ, উৎসৰ নব ' অতি গম্ভীৰ, নীল অম্বৰে ডম্বক বালে,

ন্ত শ্ৰাহ লাগ প্ৰয়ে ভ্ৰম বাংল। ্ৰেল য়ে প্ৰহঃজ্ৱী শুজুৱী লাচে ।

করে শর্জন দিক বিশী স্থানে,

হের কুম ভয়াল বিশান নিয়াল পিয়াল ভষাল বিভাবে 👚

উঠে রব জৈরব ভাদে !

প্রন মনার গীভ গাহিছে শাবার রাতে; উল্লাদিনী সৌবাধিনী রলভরে মুভ্যু করে অ**ধরভাবে** !

দিকে দিকে ভত বাণী, নৰ মৰ্য ফত ভাৰা,

খার কার ধানধার।

আছিনে নৰ আনন্ধ, উংগ্ৰ নৰ 🛚

লতি নিজন, লতি নিজন উ**ল্লেগ** সাজে,

ভূবনে মব শার্মসন্ত্রী বিবাজে ! মন ইম্পুলেখা অসকে মলকে ;

লব ংশ্বেশ লগতে কলকে; শতি মির্মল হাস-বিভাগ-বিভাগ লাভাগ দীলাক্স মারে

বেত ভূম্মে বেও বীণা বাম্মে 📒

উঠিছে আলাপ বৃদ্ধ যধুর বেহাণ তানে,

इस्टक्र के किनिट बुझर्स्स विशिष्ट्र करा भारम द्राः,

দিকে দিকে কত বাণী, নৰ নৰ ৰুভ ভাৰা,

কর কর রসধারা।

কীর্ত্তমের হার ।

আমারে কে নিবি ভাই, সঁপিতে চাই আপনারে !
আমার এই যন গানিয়ে কাল জুনিতে
সজে ভোগের নিরে বা রে ।
ভোৱা কোন্ এপের হাটে, চনেছিগ্ ভবের বাটে,
গিছিরে আছি আদি আপন ভারে,
ভোরের ঐ হাসিগুলী দিবানিশি দেখে মন কোম করে !
আমার এই খাধা টুটে নিয়ে যা' সুটেপুটে,

পড়ে খাড় মদের যোগা বরের বারে। শেষন ঐ এক নিমেনে বন্ধা এনে ভাসিয়ে নে বায় পারাবারে।

এত যে আনাগোনা, কে আছে আনাগোনা,

কে আছে নাম ব'লে মোর ডাক্তে পারে । বহি সে বারেক একে কাড়ার হেলে চিক্তে পারি দেবে ভারে।

शृत्रवी ।

বেলা গেল ভোগার পথ চেলে।
পূক থাকে একা থাকি, খার করে মত খেলার নেরে।
ভোকে এলেম খেলার বালি, চুকিকে এলেন কারা হাসি,
স্ফাবিলৈ প্রাক্তবারে মুন্দে নয়ন আলে ছেলে।

ও পারেতে বরে বরে বর্মানীপ জনিল রে, আরতির শব্দ বাব্দে সূত্র মন্দির পরে ! এস এস প্রাভিহরা, এস পার্ডি স্থান্তিকয়, এস এস ভূমি এস, এস তোমার তরী বেয়ে !

কার্ত্তন ।

अन अन निरंत अन. वेनू दर किरह अन !

पानांत क्षिण ज्विल जानिज निरंत अन !

अर विदेत किरत अन. जागांत कहने-द्रश्नेका अन.

जागांत नजन जनमं विश्वेकांत्र स्पर किरत अन !

जागांत नजन जनमं विश्वेकांत्र स्पर किरत अन !

जागांत निर्माणिक किरत अन, जागांत निरम्भ किरत अन !

जागांत निर्माणिक अन. जागांत निरम्भिक अन.

अर म्थान किरिया अन. जागांत मिलि स्पर्त अन !

जागांत न्यान क्षित्र अन. जागांत मिलि स्पर्त अन !

जागांत न्यान वर्गान यमान ज्वान निरम स्पर्त अन !

जागांत न्यान वर्गान यमान ज्वान किरत अन !

जागांत मानव वर्गान वर्गान क्ष्यान किरत अन !

जागांत मानव जागांत हानांन, जागांत क्षित्र अन !

जागांत मानव जागांत हानांन, जागांत नक्ष्य करांच अन !

जागांत नव्यान करां अन. जागांत नक्ष्य करांच अन !

हेमन कल्याग ।

পুনি প্রায় মেক শান্ত স্মৃত,
আমার সাবের সাবনা,
মক পুরু পপন-বিহারী (
আমি আপন মনের মাধুরী নিশারে

ভোষারে করেছি রচনঃ ;—
ভূমি ভাষারি বে তুমি ভাষারি,

মৰ অগীন গগদ-বিহারী :

বৰ স্বাস্থ্য ক্ষান্ত ক্ষান্ত

ভব শংগ এ কৈছি সুণা বিষে নিশে সম সুগ রুগ ভাঙিলা :

ভূমি আমারি বে ভূমি আমারি,

स्य विकन-कौदन-दिहाँदी*।*

দম গোটের খগন-সভন কর শঙ্কনে দিরোই গরারে, করি হুর নরম-বিহারী ! ७ (गी

মন স্কীত তব লগে থকে

হিমেছি লড়ায়ে কড়ায়ে;

তুনি আনামি বে তুনি আনামি,

মন জীবন-মরণ-বিহারী।

তৈরবী—একতালা।

ত গো কাঙাল, আনারে কাঙাল করেছ,
ভারো কি ভোনার চাই।

ভিপারী, আমার ভিপারী, চলেছ কি ভাতর গান গাই'! প্রতিদিন প্রাতে নব নব বনে, পুশিব ভোষারে গাব ছিল মনে, ভিপারী, আমার ভিপারী!

হার, পলকে নকলি সংপত্তি চরণে, আর ত কিছুই নাই।

আৰি আমাৰ বৃকের আঁচল বেছির। ভোমারে পথাত্ব বাব ;

শানি থায়ার ভূবন শৃক্ত করেছি খোষার পূরাতে পাশ ৷ ষম প্রাণ মন মৌবন নব,
করপুটভলে পড়ে আছে ভব,
ভিবারী, আমার ভিবারী ;
হাহ, আরো মদি চাও, মোরে কিছু লাও.
ভিবে আমি দিব ভাই ।

মিশ্র হুর্ট।

নে আসে শীরে, বরে লাজে কিরে !
বিনিকি ত্রিনিকি তিনিকিনি থকু যকু মনীরে !
বিনিকিনি কিনীরে !
বিকচ নীপ কৃষ্ণে নিবিত্ত তিমির পুঞ্জে,
কুজল কৃল-যন্ধ আসে অন্তর মন্দিরে,
উপ্যান সমীরে !
পানিত চিগু কম্পিত অভি অঞ্চল উদ্রে চঞ্চল !
পুশিত তুপবীথি, বক্সুত খনগীতি,
কোমল-পদপ্রস্তুত্ল-চুক্সিত শ্রেমিরে !
থিকুক্স কৃষ্ণীরে !

পর্যন্ত ।

কে উঠে ডাকি

বৰ ৰক্ষোনীতে কাকি (—

কৰণ বধুৰ পৰীৰ তানে বিবহ বিধুছ পাৰী।

নিবিছ হাবা গহন খাবা,
গ্লব্যন নিৰ্দান ধন,
গালপ্যনে ভূঞ্জননে
কে ভাগে একাকী!
বামিনী বিভোৱা নিভাবনবোৱা,
খন ত্যাৰ্থখা, নিভাবন বাখা!
ভিনিত ভাৱা চেতন্যাৱা,
গাৰুষক ভ্ৰাৰ্থখন,
চঞ্চ শ্ৰান্ত দিক্সান্ত
নিজাকৰ বাঁথি!

খামার ।

ওবে পূক্র, মন গৃহে আলি পরবোধনর রাভি : গ্রেবেছি কলকালিরে কললালন গাতি। ভূমি এব হাবে এব, প্রদিয়নত হসংয়েশ,

দ্য অপ্রন্তান্ত কর ব্রিবণ করুণ হাক্ত ভাতি !

ভব কঠে দিব মানা, সিব চরণে স্কভানা,

আমি সকল কুল কামন কিরি এনেছি বুলি লাভি।

ভব প্রতক্রীনা, বাজাব বর্ণ-বীশা,
বরণ করিয়া লব ভোষারে সম মানব-সাধী।

ভৈরবী !

পুলি বেলে না এগনি !

এখনো আছে বকনী !

পথ বিধান, ভিনিত্ত স্থান,
কামন কউক্তক পহন, জাবার ধর্মী !
বড় সাবে জালিমু খীপ, গাঁবিমু মালা,
চিরদিনে বধু পাইছু হে তব দল্লদ !

আকি যাব অকুলের পারে,
ভাসাব প্রেম-পারাবারে জীবন-কর্মী !

रेक्स्ब्रा ।

আফুল, কেশে আলে, চার মান নরনে, তে গো: চির বিরহিনী ! 44

নিশিভোকে আঁথি জড়িত মুনবোরে.
বিজন ভবনে, কুসুম-সুরভি মৃত্ প্রনে,
কুব শয়নে, স্থ প্রভাত বপনে।
গিহরি চমকি জাগি ভারি কাগি !
চকিতে নিলায় ছায়াপ্রায়, কুচু রেকে যায়
ব্যাক্তন বাসনা কুসুম্বাননে :

बिँकिटे।

আৰি চিনি সো চিনি ভোষারে ছ গো বিবেশিনী !

ভূমি থাও সিত্ন-পারে ও গো বিবেশিনী !
ভোষার দেখেছি বারদ প্রাতে, ভোষার দেখেছি যাওবী রাতে,
ভোষার বেখেছি করি বাঝারে ও গো বিবেশিনী !
আমি আকাশে পাতিয়া কান, ওনেছি ওনেছি ভোষার পান,
আমি ভোষারে ব পৈছি প্রাণ ও গো বিবেশিনী !
ভূবন ক্রিয়া শেষে, আমি এসেছি বৃতন দেশে,
আমি অভিণি ভোষারি বারে ও গো বিবেশিনী !

বিঁ থিট খামাজ।

হাজিল কাহাব বীপা মধুর বরে. আমার নিভ্ত নৰ জীবন পরে। প্রতাত করন বন, কৃটিন করন মন,
কার হটি নিরপম চরণ করে !
কোন ইটি নিরপম চরণ করে !
কোন উঠে বন শোভা, সব মাধুরী,
পলকে পনকে হিরা প্রকে পৃতি ।
কোনা হতে সদীরণ, জানে নব আনরণ,
পরাধের আবরণ মোচম করে !
নালিন কারার বীণা বধুর করে ।
নাগে বুকে কুবে হুবে কত যে বাধা,
কেমনে বুঝারে শ্রম না জামি কবা !
আবার বাসনা আজি, প্রিভূবনে উঠে বাজি,
কাপে নমী বনরাজি বেসনা ভবে !
বাজিন কারার বীশা মধুর মরে ।

কানেড়া।

বঢ় বিশ্বর লাখে হেরি ভোমারে।
কোথা হতে এলে তৃষি কদি মাঝারে।
গুই মুব ওই হাসি, কেন এত ভালবাসি,
কেন খো নীরবে ভাসি অঞ্চারে।
ভোমারে হেরিয়া বেন জানে স্বরণে,
ভূমি চির-পুরাতন চিব জীবনে।

পুষি দা গাড়াৰে আসি, হৰছে বাজে না বাঁৰি, যত আলো ৰত হাসি ভূবে বাঁৰাৱে !

ইমনকল্যাধ।

সুক্ষর ভাষিবন্ধন তুমি, নক্ষম ফুলছার :
পুমি পানস্ত নববসন্ত পান্তরে পামার !
নীয় অধ্যর চূহন-মত, চরপে ধর্মী বুর নিরত,
অঞ্চল বেরি সঙ্গীত বত শুন্ধরে শতবার !
বলকিছে কত ইন্দুখিরণ পুম্বিছে ফুলগদ্ধ ।
চরণ গ্রাস্থ লালিত অসে চহকে চকিত হুন্ধ !
দি দি সংগ্রি শত বছন, ভোষাপানে ধার হত ক্রন্থন,
লহ হলরের মূল চক্ষন বন্ধন উপরার ।

মিঞার।মকেলি 🛭

কথা ভাষে ছিল বলিভে !
চোৰে চোথে দেখা হল পৰ চলিতে ।
বসে বনে দিবারাভি, বিধনে সে কথা গাঁৰি,
কত যে পুরখী রাখে, কত দলিতে !
সে কথা কুটরা উঠে কুপুন বনে,
সে কথা ব্যাপিয়া বার নীল পদনে ;

ৰে কথা নইন) খেলি, খালৰে বাহিৱে মেলি, মনে মনে গাহি, কার মন হলিছে ! কথা ভাৱে জিল বলিতে !

ধাষাজ-একডালা ৷

আমারে কর তোমার বীণা, গহ শো শহ ভূগে।
উঠিবে বালি ভরীরাজি সোহন অমুলে।
কোমন ভব কমন করে, পরশ কর পরাধ পরে,
উঠিবে বিয়া ভঞ্জিরা ভব প্রবণ-বৃদ্দে।
কর্মনে সুখে কথনো হুখে, কাঁদিবে চাহি ভোমার মুখে,
চরণে পঞ্জি ধ্বে নীরবে, রহিবে ববে ভূলে।
কেই মা কামে কি নব ভানে, উঠিবে গীত শ্রাপানে,
আনম্ভের ব্রেডা বাবে অন্তের ক্লে।

কেদারা ।

কে বিশ আখার আখাত আমার ছ্যারে। এ নিবীৰ কালে, কে আলি বাড়াংল, ৰু'বিতে আনিলে কাহারে। বছকাল হ'ল বগস্ত দিন, এনেছিল এক অভিপি নৰীন,

আকুল জীবন কৰিল ৰপন

অৰ্ণ পুৰক-পাধাতে ! আজি এ বরণা নিবিত ভিমিন্ন,

বর বর জন, জীর্ণ কুটার, বাদকের বাছে, প্রদীপ নিবারে,

ক্ষেত্ৰ বাহে আছি একা বে !

শ্বের বরে আহি একা রে দু শতিথি অহামা, তর কীরতুর

লাগিতেছে জামে তীবণ বরুর, ভাবিতেছি বনে, যাব তব সুনে

থতোছ বনে, যাব তব সনে অচেনা অসীৰ আঁথায়ে !

ভৈৰে।।

এব গো নৃত্ন জীবন !

এস খো কঠোড় মিঠুর দীয়ক, এস গো ভীৰণ শেভিন !

এস দো ভাৰণ শেভন ! এস অধ্যিয় বিহন ভিক্ত.

এন গো অপ্রকৃতিকস্কিং

अन (गा क्यपियोग, तिक,
अन (गा विश्वपीयन !
शास यीपा (दपू, यानकी यानिका,
पृथिया निर्मित, याम्रो-क्र्यमिका,
अन (गा अध्य द्यायामन निषा,
इन्ह-स्मानिक-क्षानम !
अन (गा भद्रम क्र्यमिनम,
वाषा-व्यक्त क्रय विनम,
अन नश्काम, अन नश्काम,
अन (गा यदम मायन !

कानाः छ।

नृत्य परम गृत्य गाहि, चाह्य सकता !
गताय वनस अग कार महाता !
नशित कर भागी, स्ट्रिन स्मोन भागी,
विका जानकवाता मझ द्यासदा !
इत्यद्य करि मा कर, वित्रह द्यासि चय,
मनद्रास स्तृत्य चर् अश्रदा !
सहर ग्रायर वाना, स्त्रह ज्यामा,
वित्रहली कानवान। द्याम भिन्नह !

মূলতান ।

উঠ বে সলিম মূৰ, চল এইবার !
এম বে তুৰিত বুক বাধ বাবাফার !
হয়ে ওই সেল বেলা, ভাতিল ভাতিল মেলা,
লেল সবে ছাড়ি খেলা বরে যে যাহার !
হে তিথাবী ফারে তুমি তলাইছ ছঃ !
রঙ্গনী আঁথার হল পথ অতি দূর !
ছুখিত তুমিত প্রাণে, আর কাম নাহি সামে,
এখন বেশুর তামে বাজিছে লেভার !
উঠ রে সলিন মুখ, চল এইবার !

থাদাক 🕝

চিত পিপানিত রে, গীত সুধার তরে।
তাপিত গুড়নতা বর্ধণ নাচে বধা,
কাত্তর অক্তর খোর সৃষ্টিত ধূলি পথে,
নীত স্থার তরে !
ভাজি বনত নিশা, আজি অনত ত্থা,
ভাজি এ লাএত গ্রাণ, ভূষিত চ্যোর সহাম,
নীত সুধার তরে।

চন্দ্ৰ কতন্ত্ৰ মতে, কাৰিছে মুগ্ৰছৰে, অন্তঃ বাহিদ্ৰ আধি কাঁছে উদাৰ বাবে, বীত ভগাব গুৱে।

K112 002;

ভূপালি।

মধুর মধুর থানি বাজে হলঃ-কমল-বমলাকো !

নিক্তবাসিনী বাঁণাপাণি, অমৃতম্যতিমতী বাণী, হিমুপ কিমুপ ছবিবানি, প্রাণেত কোবা নে বিরাজে। বধুখত্ জাগে নিবানিনি, পিকচুহরিত নিনি দিনি, নানপ বনুপ পদতলে মুর্ছি পড়িছে পরিমনে। এম দেবী, এম এ আলোকে, একবার হোরি ভোষে চোধে, পোপনে থেকে। না মনোলোকে, ছারান্য নাম্মর সালে।

বাহার।

এ কি আরুলতা ভূবনে । এ কি চক্ষণতা প্রনে । এ কি বনুর নদির-রব্-রানি, আদ্দি পুর-সলে চলে তানি, করে চক্ত-করে এ কি ধানি, স্ল-সন্ধ দুটে গগলে । এ কি প্রাণভন্না অমুরানে, আদি বিশ্ব দশত কর কালে, আদি নিখিল বীশ গগনে সূধ-প্রশ কোৱা হতে লাগে । কুৰে শিহরে সকল বনরাজি, উঠে রোহন বাশরি থাজি, ছেন্ন, পূর্ণবিকাশিত আজি, মন সম্ভন্ন কুলছ বপনে :

বেছাই ।

ভূমি ববে নীরবে হয়ৰে মুখ 🕆

নিবিক্ নিক্ত পূৰ্ণিয়া মিনীবিনী সম !

যম কাঁবন ঘোৰন, সম অধিল সুকন,
কৃষি ভৱিবে গৌৱনে নিনীবিনী সম !
ভালিবে একাবী, তব করুণ আঁবি,
তব অধ্যম ছায়া বোরে হহিবে চাকি !
বম ছংগ বেলম, যম ক্কল বগম,
ভূষি ভৱিবে লৌৱন্তে নিনীবিনী সম !

মিকুকানাড়া।

কি রাগিণী বাজালে হুমরে, খোবন মনোযোহন, তাহা তুরি লাম হে, তুরি লাম : চাহিলে বুবপারে, কি পাছিলে নীরতে, কিনে মোহিলে মন প্রাথ, তাহা তুরি লাম হে, তুরি লাম :

चानि क्षमि रिवाशनमी, कादि भनि कादि अकिसनि ।

তুৰি কেইনে সরম পরনিলে হয়, কোণা হতে প্রাণ কেতে আম, তাহা তুমি জাম হে, তুমি জান !

> বেহাগড়া—কাওয়ালি । ধীৰি ধীৰি প্ৰাপে আৰাহ এব হে।

মধুর হাসিয়ে ভাল বেল হে। গুল্ড-কাননে মুল মুটাও, আহ নহনে সুঘি চাও চাও, গুল্ড-কানিমে হিছে হাসিখানি কেল হে।

_

নিজু পাথাজ—ধেষ্টা।

বেগ ঐ কে এনেছে, চাও নাই চাও।

আকুল পরাণ ওর, আঁথি বিজ্ঞালে নাচাও স্থি। ভূষিত ময়ামে চাবে মুখপানে,

হাতি সুবাদানে বীচাও দ্বি :

পিলু—থেষ্টা।

ও কেন ভালবানা ঝানাতে খানে, ওলো স্কনি ! হানি খেলিয়ে মনের স্থাৰ,

ও কেন সাথে কেছে আঁথার মূথে, দিন রজনী 🖯

কালাংড়া-- শেষ্টা।

ভালবাসিলে যদি যে ভাল মা বাসে, কেন যে বেখা ছিল ! মধু ভব্তের মধুর যাসি প্রাণে ভেল ব্যবিক : বাড়ায়ে ছিলেম পথের ধাতে, সহলা লেখিলেম ভারে, নয়ন মুঠ ভূলে কেন মুখের পানে কেরে লেল !

হৈত্রবী—আড়াঠেকা।

কেন রে চান্ ফিরে ফিরে, চকে আর হে চকে আর,
এরা প্রাদের করা বাবেখ না বে—কদর-কুত্রন দলে হার ।
কোনে হেনে কেরে সাম, দিছে এলেছিলি প্রাণ,
নয়নের জন সামে নিয়ে, চলে আর রে চকে আর ।

বেহাগড়া---কাওয়ালি।

ননে হয়ে থেক বনের কথা, গুণু চোগের কব আথের বাধা।
বনে করি ছট কথা বলে যাই, কেন মুখের পানে চেয়ে চলে যাই,
পে ধৰি চাকে দরি যে ভাকে, কেন মুদে আনে জীবির পাতা।
রাম মুখে নথি যে যে চলে বার, ও ভারে ফিরারে ছেকে নিয়ে আর
মুখিক না যে কেনে পেক, ধুনার মুটাইক জ্বন-দ্যা।

ছায়ানট—কাওরালি ঃ

আর তবে সহচরি, হাতে হাতে ধরি ধরি,
নাচিবি মিরি মিরি, পাহিবি গান।
আন্ তবে বীণা, সধ্যম সূত্রে বাধ তবে তান।
পাশ্রিব ভাবদা, পাশ্রিব হাতদা,
রাখিব প্রযোগ ভরি সমপ্রাণ বিহামিশি,
আন্ তবে বীণা, সধ্যম সূত্রে বাধ তবে তান।

সমীরণ বহে বা রে ফুলে কুলে চলি চলি ; উদসিত জাঁদী,—

উধলিত গীতরৰে ধূলে দে তে হন প্রাণ :

ঢাল' ঢাল' বৰধর, ঢাল' ঢাল' জোছনা,

ভৈরবী – ভাল আভাঠেকা।

ষা, একবার গাড়া গো হেরি চল্লানন।
শীষার করে কোষার বাবি বৃদ্ধ ভবন।
মধুর মুখ হাসি হাসি, শবির বাসি বাসি মা,
ভ গাসি কোবার নিয়ে কাস্বরে,
শামরা বি বেশে মুড়ার শীবন।

মিজ্ঞা কালাংড়া—পেম্টা।

এত ব্ৰ বে স্টালে (কামনে)।
লভা পাতার এক হাসিত্তস, বহি কে উঠালে।
সক্ষীর বিয়ে হবে, সুলেয়া গুলেছে গবে,
সে ক্লা কে ব্টালে।

মিজ জয়ক্ষয়ন্তী—খেষ্টা।

আমারের বধিরে কে নিয়ে বাবে রে !
তারে কেন্ডে নেব, কেন্ডে নেব মা।
কে আনে কোবা হাতে কে এসেছে,
কেন সে বোদের সধী মিতে আসে, দেব মা।
স্বীরা গথে যিয়ে টাড়াব, হাতে তার কুলের বাহন অভাব,
থেগে তার রেবে দিব কুন্তুম বনে,
স্বিত্তে মিয়ে বেতে দেব মা!

মূলভানি--কাওরালি।

কোধা ছিলি নজনি কো, মোরা বে ভৌরি ততে বাস শাছি কাননে : अत निव, अन रहवा यनि विकास,
वीवि करिया रहित हानि युवानि।
व्यक्ति नांकाय नदीर्त नांव विकास,
व्यक्ति नांकाय नदीर्त नांव विकास,
विवि क्ष्युवानि क्ष्युत्वि क्ष्युत्तविवित्व क्ष्युवानि क्ष्युत्वि क्ष्युत्तविवित्व वार्तित्व विभू, वार्तिय दृष्ट् मृष्ट्,
कांकाय वार्तित्व विभू, वार्तिय दृष्ट् मृष्ट्,

বেহাগ—ভাল ফেব্ডা।

মধ্র মিলন :

বালিতে মিলেছে হালি পয়নে নয়ন।

মর-মর মুদ্বালী মর-বং মরমে:

কপোলে বিলাম হালি সুমধুর সরমে ;

নয়নে স্বপন।

ভারাথনি চেমে আছে, কুন্থম গাছে শাছে। বাভাস চুপি চুপি কিরিছে বাছে কাছে। বালাথনি গোঁধে মিমে, আড়ালে ব্কাইরে, দ্বীরা নেহারিব দৌহার আনন, হেসে অভিন হল বকুল কাদ্য—

(আনরি বরি) :

le 4

কালাংড়া--- স্মাড়াবেশমটা।

দেশে যা কেখে বা কেখে বা কো ভোরা নাথের কাননে মোর, (জার্নীয়) সাথের কুকুখ উঠোছ কৃটিয়া নলন বহিছে ক্রডি কুটিয়ারে— (হেগা) কোছেনা কুটে, ভটিনী চুটে, গ্রামানে কানন জোর। বি স্থি আয় লো কেখা, চুজনে কবিব ন্যের

মার সার সবি মার লো কেখা, চ্মনে কবিব ননের কথা. তুলিব কুকুর চ্মনে মিলি রে,

(ছবে) গাঁধিৰ মাৰা, গণিৰ ভাৱা, করিব রন্ধনী ভোৱ। এ কাননে ৰসি গাহিব গান, ছবেব স্বপদে কাটাৰ প্রাণ,

খেলিব মুজনে ননের খেলা রে,

(ঝাশে) রহিবে বিলি দিবন নিশি আবো আধো বুরবোর !

মিল্র-একডালা।

কুলে কুলে চলে চলে বাহে কি বা মৃহ্যার— ভটনী হিরোল ভূলে করোকে চলিয়া যায় : পিক কি বা কুলে সুকে সুহ সুহ গায়— কি আনি কিনের বাবি আদ করে হার হায় !

বেহাগ—থেগ্টা।

ধ কেন চুরি ক'রে চার।
স্বেলতে পিরে হাসি, হেসে পদার।
বনপথে কুলের বেলা, হেলে ইলে করে খেলা—
চকিতে সে চমকিয়ে কোথা হিরে যার।
কি যেন সানের মড বেকেছে কানের কাছে,
বেম তার প্রাণের কথা আধেক ধামি লোমা সেছে।
পর্বেত বেডে চলে, মাগান্ট পেছে কেনে—
পরাণের আশাগুলি গাঁধা যেন ডাছ।

ভৈত্ৰবী — খেন্টা।

কবার সবি সোনার স্থ কের সুঝি কের ধরা !

আয় পো তোরা পুরাজনা,

আয় সবে খার বরা !

ছুটেছিল পিরাগভরে,

মরীতিকা বারির ভরে,

ধরে' ভারে কোনল করে

কট্টন কানি পরা' | পর্যারা করিস্থা গো,
তথের মন সে বারা।
ব্যাব সোহাই মান্তে না থো,
এক্টু পেলেই হাড়া।
বাধন-কটো বকটোকে,
নারার কালে কেলাও পাকে,
ভূলাও ভাকে বাশিব ভাকে
ব্যিবিচারহর।।

তোৰৰা স্বাই ভালো ৷

(बांड बहुरहे स्व्यूनि झूरिट्ह, द्वाहे ब्यामारश्च छारमा :)

স্থানাদের এই স্থাধার বত্তে সন্ধ্যা-প্রধীপ স্থালো। কেউ বা স্থতি স্থলমান, কেউ বা শ্রান ছল্ছন,

কেউ বা কিছু গহন করে, কেউ বা দিশ্ব মানে।

ন্তন থেলে ন্তন বধু, আপাখোড়া কেবল মধু, পুরাতনে অয় মধুর একটুকু ধীবালে।

बाका स्थम विभाग करत, रुक् अस्त भारत बरहर

রাবের বঙ্গে অন্তর্যানে ব্যান ভাগে চালো।

আৰৱা তুৰা তোৰতা প্ৰা, তোষৱা তৃথি আদ্যা সুধা, তোৰার কথা ধৰ্তে কৰিৱ কথা তুরালো। যে মৃষ্টি নয়নে আগে, স্বই আমার ভাব লাগে, কেউ বা দিব্যি গৌৱবৰণ কেউ বা দিব্যি কালো।

সিলু—ভৈরবী।

ওংগা হ্বদ্য-বনের শিকারী ;

বিহে ভারে জালে ধরা, কে ভোমারি ভিখায়ী।
সহলবার পারের কাছে, আধমি যে মন ম'রে আছে,
নয়নবানের বৌচা পেভে সে যে অন্ধিকারী ;

ললিড—একভালা।

বেতে হবে আরু ছেরি নাই।

পিছিয়ে পড়ে ব্র'বি কত সধীয়া যে পেল সবাই।
আর রে ভবের ধেলা সেরে, শীধার করে এসেছে রে,
পিছন শিবে বারে বারে ঝাহার পানে চাহিসু রে ভাই।
ধেল্ডে এল ভবের নাটে, নতুন কোকে নতুন ধেলা।
ধেধা হতে আর রে সরে' নইলে ভোতে মার্বে ঢেলা।
নামিরে দে রে প্রাণের বোকা, আরেক দেশে চলু রে লোকা।

নতুৰ করে বাধ্বি ধাসা, দতুৰ ধেকা খেক্বি সে ঠাই :

কাকি :

কার হাতে বে ধরা যেব হার।
(তাই) ভাব তে জামার বেলা যায়।
ভান হিকেতে ভাকাই নধন, বাবের লাগি কাথেরে যন,
বারের হিকে কির্নে তথন হথিশভাকে আহ রে আয়।

রামপ্রদাদীখন।

আমিই ওগু রইছ বাকি !

হা ছিল তা পেন চলে, রৈল বা' তা' কেবল স্থাকি !

আবার বলে ছিল বারা, খার ত তারা দের না লাড়া,
কোধার তারা কোধার তারা, কেঁলে কেঁলে কারে ডাকি !

বল্ দেখি বা ব্যাই তোরে, খাবার কিছু রাখ্নি নে রে,
আমি কেবল আমার মিয়ে, কোন্ প্রাণেতে বেচে ধাকি !

বিভাগ—একতালা।

সারা বর্থ দেখিনে, মা, মা পুই আমার কেমন বারা। সর্মকারা হারিয়ে আমার আর বল নয়ম তারা। এমি কি পাবাদী ওরে, দেখ্য তোরে জাঁখি ভোরে, কিছুতেই থাকে না যে মা, গোড়া এ ময়নের ধারা।

ভৈরবী--ঝাপভাল।

আৰু তোষায়ে দেখুতে এবের অনেক বিনের পরে। ভয় নাই ক স্থাধ বাক, অবিক কণ ধাক্র না ক, আসিয়াহি তু^ন মতের ভরে।

দেখ ব ওয়ু মুগবানি, ওন্ব হুট মধুর বাদী, আড়াল থেকে বাসি দেখে চলে যাব দেশারতে।

খট--বাঁপভাল ।

আনার বাবার দ্বর হল, আনার কেন রাধিন্ ধরে, চোবের কলের বাধন দিরে বাধিস্থান আর নারা ভোরে। সুরিয়েছে জীবনের চুটি, কিরিলে মে ভোর সমন চ্টি, নাম ধরে আর ভাকিস্থান ভাই, বেতে হবে কয়। তরে।

বিঁথিট খাখাজ—ভাল খেষ্টা।

হেদেগো নক্ষরাণী, কামানের কামকে ছেড়ে লাভ :

মানর। রাখান-বালক গাঁড়িতে ভারে

শানাদের সাধকে দিরে বাও।

এভাত হণ ক্রি উঠে, ছের বৌ কুল কুটোছে বনে, ভাৰকে দিয়ে গোটে বাব আৰয়৷ আৰু করেছি বলে। পীতবড়া পরিবে তারে ও প্রেম কোলে নিয়ে আর । হাতে দিও বোহন বেশু , কার ন্শুর দিও পরে। রোদের বেলার বাছের তলার, নাচ্ব যোৱা স্বাই দিলে। বাজ্যে নৃপুর কণুকুত, বাদ্ধে বাশি মধুর বোলে। रमञ्जल गीर्व माना পরিয়ে দিব স্থানের পরে 🛭

কানৰে আর, তোরা আর।

আবোতে ভুল উঠ্ল মুটে, ছায়ায় করে পড়ে যার।

ষ্কভান--আড়া থেষ্টা।

বৃক্তি বেলা বহে যার,

নাথ ছিল য়ে গরিয়ে দেব, মনের মতদ মালা সেঁখে, কই সে হল মালা গাঁখা, কই সে এল হার ! ধনুনার চেউ যাজে ব'লে, বেলা চলে যায়।

ভৈরবী ৷

কৰা কোস্তে লো রাই, ভাষের বড়াই বড় বেড়েছে ! কে লানে ও কেনল করে বন কেড়েছে ! ডবু গীরে বাজার বালি, ভগু হাবে নবুর হালি, গোপিনীলের সদম নিবে তবে ছেড়েছে !

विंविष्ठे।

त्य अवन पून क्छिक् यान करा श्रीका चांच् कि तास्त ! यान चिक्राम चांजिस दिस हम हम कृत बारत ! चांच रकांकिरन रमसाई कुछ, यूह कृष्ट, जांच, कांनरन के नीनि वास्त ! শাল সমূরে বিশাবি বযু, পরাধ বঁধু টাবের আলোয় ঐ বিরাজে : হাম করে বাকা আদু কি সাজে !

मिट्ट ।

पति तम पति,

वासात रीमित्य रहरकाह रक !

एट्टरिहिन्स पत्त तम, रमायाध बाव मा,

से रम वास्तित राजिन नामि यम कि कति !

क्रम्माह रमान क्रम्मान मेति नमेति ,

शे रमा राजिन वास्म वीमि शीत नमीति,

शे रमा राजिन क्रम्माम पति मथ व'रम रम।

काश्रीत वीमित्य रहामि,

(कारत) क्रम्मत सामा भितास वामि,

(कारत) क्रमत सामा भितास वामि,

(कारत) वेरम वामि, राजमात नीमि

(काराज) व्यारम राजमात नीमि

(काराज) वारम राजस्म रम्

বিবিট ধাথাজ—একডালা ৷

वाजित निष, राभि वाजित्य,
कप्तत्रताक करभ ताजित्य।
चक्रम ताजि ताजि, त्याचा द्वा वात्य काणि,
करद नाज वाणि नाजित्य।
व्याद्य वाजिक्षण, कतित्व क्ष्मक्षण,
क्ष्मद्यस्मा यस्म वाजित्य।
यत्य स्वक्षिता, विनादक कार्य विश्वा,
ताके क्ष्म-व्या-वाजित्य।

মিজবোলার—একডালা ।

ষদি আসে তবে কেন থেতে চার !
বেশা নিয়ে তবে কেন গো লুকার ?
চেরে থাকে কুল, ক্ষম আকুল,
নারু বলে এলে থেকে নাই !
ধরে লাখ, ধরে রাখ,
সুধ পানী কাঁকি দিরে উদ্ধে বায় ।

প্ৰিকের বেলে, স্থানিপি এলে, বলে হেলে হেলে, নিশে ঘাই !

क्यान पांच, ब्यान पांच, বর্ষের সাধ নিশিকে ফিলার।

কেদায়া।

যোগি হে, কে তুমি হলি আগমে !

বিভূতি-ভূবিত কন্স দেহ,

বার্চিছ সিক-বশ্বনে । ৰহা আনন্দে পুরির কার,

ক্ষা উধনি উহনি বার,

ভাবে বিভ-ববি হামিরা চায়,

क्रोक्ट भार भगरन ।

শিতা শিল্পু—একডানা।

क्षे दक्षि वालि वारक.

বনবাৰে, কি বনবাৰে :

বদভ বাদ বহিছে কোবার,

কোগায় সূচিছে মূল।

বল সো সঙ্গনি, এ **সুগ রজনী**

কোমবানে উদিয়াছে গ वसमारक, कि सममारक ।

যাব কি হাব না, যিছে এ **ভাব**না, থিছে যার লোকনাকে। কে লানে কোণা দে, বিরহ হতাংশ ফিরে অভিসার-সাজে, वसमारक, कि मनवारक ! মি≝—একতালা । ব্যবের ভূমেরির খোলা পেরে, ছুটেছে সৰ ছেলে ৰেয়ে। रुत्रिरवान् रुद्धिरवान् । রাম্য ক্রডে মন্ত খেলা, यत्र4-दीवन चवरहर्गः. ও তাই, সবাই মিলে প্রাণটা দিলে, স্থপ আছে কি মরার চেরে ! रविरतान् रतिरवान् ! বেকেছে টোল বেকেছে চাক. वरत वरत शरकरम् प्रांक. এখন কালকৰ্ম চুলোচ্ছ বাৰু, কেকো কোক বৰ আৰু রে থেছে।

वदिरवान् वदिरवान् ।

त्रोका क्षेत्रा घटन कहा. থাকুৰে না আৰু ছোট বছ, একই লোডের মুখে তাস্বে ভূবে, বৈতরশীর নদী বেলে ! रक्रियान् रक्रियान् ! গৌরী---কাওয়ালি। লাবি মিশিধিন তোৰাৰ তাৰবাৰি. ভূমি ঋবদর মত বালিরে। ! নিশিদিন হেখায় বলে আছি, আমি বৰন বৰে পড়ে স্থানিয়ে (হোৰার বারানিনি তোমা লাগিয়া, वावि বিরহ ব্যলে হাসিডা, स्य' দিখিকে তবে প্রভাতে <u>चृत्रि</u> ৰুপদানে চেয়ে বাদিয়ে ৷ बदय ছুমি क्रिक्सिंग वशूलंबरन, বিকশিত বন-ভবনে, রিয় ৰলেমভ পৰ ব্যৱস্থা, বের

নিম সুধ-লোতে ভাসিরো :

ভূষি

বৰি ভার মাথে পড়ি আসিয়া, ভবে আমিও চলিব ভাসিয়া, বৰি দূরে পড়ি ভাবে কভি কি, ধোর ভুভি হব হতে নাশিয়ো !

বিভান—একডালা।

বঁধু, ভোষায় কর্ব রাজা ভঞ্জকে। বসস্কের বিনোধযালা দেব সলে। সিংলাসনে বসাইতে, সংবধানি দেব পেতে, অভিবেক কর্ম ভোষার আঁবিজনে :

শিকু।

আমি একুলা চলেছি এ ভবে,
আমার পথের সন্ধান কে কবে ও
ভর দেই, ভর দেই,
বাও আগন মনেই,
ক্যেন, একুলা মধুল খেনে হার
ক্রেন ছবের দেবিতে ।

জৈরে --- এক তালা।

উল্লিখনী নাচে রণ্যকে।
আনহা কুলা করি স্থে !
পশ্চিক্ আঁথের করে মাজিল হিত্-বস্না,
আনে বিদ্-শিখা রাঞা রসনা,
লেখে মরিবারে গাইছে প্রত্তে!
কালো কেশ উদ্ধিল আকালে,
রবি সোম ক্কাল তর্মসে,
রাঞা রক্থারা করে কালো অচ্ছে,
ক্রিম্বন কাণে ভুক্তকে!

মিজ্ঞ — শিক্ষু ।

ওলো পুরবাসী,

খামি ধারে গাড়াথে আছি উপনাসী। হেতিতেছি প্রথমেল। মধ্যে মধ্যে কও খেলা। গুনিতেছি সামাবেলা স্থাধূর বাঁপি। চাহি না অনেক ধন, বৰ না অধিককণ,

বেধা হতে আদিয়াছি দেখা বাব ভাগি !

ভোমরা আনকে রবে, মব মব উৎসাব, কিছু মান নাবি হবে গুরুত্বা বাসি !

ভৈরবী---একভালা।

বাস্তে শার ত পাব্দি যে বা, পাব্দি কৈ ?
কোলের স্বানেরে ছাড়্লি কৈ ?
গোনী শাহি অনেক গোবে, ছিলি বলে শনিক রোবে,
বৃথ ত দিরালি খেবে, অভয়চনণ কাড়্লি কৈ ?

বাহার :

বদ্ধ আওল রে !

নগুকর ভান ওল, অধ্যা মান্ত্রী
কামন ছাওল রে ।

ওল ওল সকলী, হালর প্রাণ বল

কর্মে আকুল ভেলে,

কর কর বিরুলে মুখ কালা ম্ব

মুর মুর চলি শেল ।

স্থিরে, উছ্পত প্রেম্ভারে শ্ব

চল্ডল বিহ্বল প্রাণ,

গার বজন-রস গান।
কহিছে আক্ল বিকচ কুর্যকুল
ভাষক আনহ জাকি,
ভাষ মার বরি, ভাষ ভাষ করি,
গাভত লভ পত পানী:
বস্ত-ভূবণ-ভূষিত ত্রিভূবন
কহিছে - ভূষিনী ভাষা,
কহিলে লো প্রিভ, কবি লো প্রিয়তন,
ব্যি-বস্ত লোভ গহন হয়ন কবি,

मिवित कपर क्षत्र स्त्रप-(छात छहे

বসন্ত সমীয় খাসে, যোগিত বিহস্ত চিন্ত-কুগ্ৰতন সূত্ৰ বাস্কা-আসে।

टेक्ब्रवी ।

ভূমহ গুনহ বালিকা, সাধ সুসুম মালিকা, কুম কুম ফেরছ সুবি প্রায়চক্র নাহিরে। হুলই কুল্ম যুক্তী,
তন্য কিন্তই গুৰুৱী,
অনুন বৃহ্ছি যায় স্থিত গীত পাহিছে।
বিশি-সনাম বামিনী,
হিন্তই-বিগ্রু কাহিনী,
কুল্মযার তইল ভার স্বন্ধ ভার মাহিছে,
অব্য উঠই কাণিয়া,
ক্ষি-করে কর আপিলা,
ক্ষেত্রনে পাপিয়া কাহে গীত গাহিছে।
দুগ্রু স্মীর সঞ্চল
হুলার বিশ্রিল অফ্লে,
চকিত হুলা চক্লে কান্য-পর্ব চাহিছে;
কুল্পানে হেরিয়া,
অক্সব্যারি ভারিয়া
ভালু পার শুকুল্ল ভাষ্যক্র নাহিছে।

नुष ।

বৰুৰি বৰুৰি হাবিকাংগ: দেখ অবহু চাহিন্তা, মূহৰ পথৰ ভাষ আগওৱে

মৃত্ত বান পাৰিছা। পিনহ কটিত কুমুৰ হার, পিনঃ নীল আঙিয়া সুক্ষরি সিপ্র মেকে সীধি করহ মাঠিয়া ৷ সহচরি সহ নাচ নাচ. বিশ্বশ গীত সাওৱে : চঞ্চ মঞ্জীর রাব কুল গ্ৰাম ছাভাৱে । স্কুনি অব উকার বঁটিৰ কমক দীপ জাবিয়া, সুর্ভি কর্ড সুঞ্জ ভবন পৰ সৰিদ ঢাবিয়া : মরিকা চৰেলি বেলি कुमूप जूनर वालिया. পাঁৰ যুঁৰি, বাঁৰ ৰাতি, ৰীৰ বহুল খালিক।।

ত্বিত-নয়ন ভাত্সিক কুল-পথ চাক্রা, মূহৰ পৰ্য স্থাৰ আওৱে

मृद्दन शान शाविद्या ।

কিঁকিট।

গহন কুন্ধুৰ-ভূৰ দাবে মূচুৰ স্থুত বংশি বাজে,

বিসরি আসু লোকসংকে.

নম্বনি, খাও মাও গো।

অংক ভারু নীল বাস. হৃদরে প্রণয় কুরুব রাশ,

হরিণ নেত্রে বিষণ হাস,

कुक्ष पनदम स्थाप (मा a

চালে কুণ্ডৰ প্রভ-ভার,

ভাবে বিহণ সূত্ৰ-দাব,

ভালে ইন্দু অমৃত-ধার বিমল রক্ত ভাতিরে।

यक रक्ष इत्र ७८८,

অয়ত কুসুম কুঞ্জে 🌉 🕿 .

সূচৰ স্থানি প্ৰশ্নে প্ৰে বস্ত ভূবি কাভিয়ে॥ ক্ষে সজনি, জাবরার,
নহনে প্রেব উধন যায়,
নগুর বনন অনুত সদন
চক্রমায় নিশিছে।
আও অগ্ন সঞ্জনি-রুখ,
হেবব স্থি প্রিগোবিক্ষ,
ভামকো প্রারবিক্ষ
ভাত্তিকে ব্যায়িত ৪

বেহাগ।

আন্থ সৃথি মৃত্ মৃত্
গাহে পিক কুত্ কুত্
তুথাবনে হুঁ হু হুঁ হ
টোহার পালে চায়।
চুখন-মদ-বিদসিত,
পুরুকে হিয়া উল্লিভ,
অবশ শুরু অস্থার :

व्याक् रद्र शंक्ती প্রাণ-উনযাদনী, বিধিল সহ বাধনী, বিধিন ভই নাক। বচন সূত্যরমর, কাঁপে বিক প্রথম, শিহরে তমু জরজর कुकूर-वन शांव ! মালর মৃত্ কলরিছে, চরণ দহি চলহিছে, বচৰ মৃত বলরিছে, व्यक्त वृद्धेश्य ! আগত্ট শতণক, বার্ভরে টগবল, বাঁখি ৰহু চনচন চাহিতে নাহি চাৰু ! অলকে ভূল কাপয়ি কপোৰে পড়ে বাঁপেরি, মৰু অনলে ভাপতি

বদরি পড় পার !

क्त्रहे नित्त सूनमन, बसूमा वरष्ट कनकन, कारन निनि स्वस्त कासू गति वास !

ময়ার।

সক্ষনি পো

শাঙ্গ গগনে হোর ঘনগুটা,

ক্ষিণীৰ বাহ্নিীরে।
ক্ষপুথে স্থি, কৈনে যাঙ্ব

হুকুপুথে স্থি, কৈনে যাঙ্ব

হুকুপুথে স্থানিীরে।
উন্নয় প্রনে যুক্না তর্জিত

হুন স্ব পর্জিত যেহ।

ব্রক্ত বিহুতে প্রভঙ্গ সূঠত,

ব্রহপ্প কলাত বেহ।

বন মন রিম্ বিষ্ বিষ্ কিন্ বিশ্ কিন্,

বরশত দীরদ পুঞা। যোর গহন হন তাল তমালে, নিবিড় ভিমির্মর **কুঞা**। বোল ভ সক্ষমী এ ভুক্টোটো কুলে নির্বর কাম, नाजन वानी लाह वकाग्रह সকরশ বাব্য লাব। प्रकृति----যোতিয় ছায়ে বেশ বনা দে नौं'वि गंगा (व छाटा। উবহি বিলোলিড শিবিল চিকুর ময বাঁধহ ৰালত বালে। খোল ছয়ার করা করি সহিরে, হোড় সকল ভরলাজে, কুমছ, বিহণ্ডাম ঋটপট কয়তছি পঞ্চর-পিঞ্জর মাধ্যে। প্ৰদান্তন্ত্ৰে দ বাও খালা নগৰ কিশোর-ক পাৰ। भन्नत्व घम घम, बर् छन्न शांश्व কহে ভাছু তব দাস।

সারার থেলা।

প্রথম দৃশ্য।

कानम् ।

যারাকুমারীলণ ।

भिन्—यक्कानाः :

স্কলে। (মোরা) জলে হলে কত ছলে মারাজাল বাঁথি।
থাৰ্থা। (খোরা) স্থান বচনা করি অধ্যন নম্ম করি।
বিতীয়া। গোগনে হল্যে পশি কৃষ্ণ-আন্দ্র পাতি।
কৃতীয়া। (মোরা) হছিল-ভর্ম তুলি ক্যক্ত-স্থাবে ;
ধাব্দা। কৃষ্ণা কাগায়, প্রাণে প্রাণে, আধ-ভানে, ভাঙা গালে,
শ্রম গুরুবাকুল বকুলের গাঁতি।
স্কলে। বোধা বাবাকাল বাঁথি।
বিতীয়া। ক্রমারী হিন্ম মোদ্ধা বাঁথি বারাপাশে।
কৃতীয়া। কত ভূল করে ভারা, কত কাঁধে হাসে।

ঞ্চথমা। ধারা করে ছারা কেলি মিলনের বাবে, আনি মান অভিযান।

ছিতীয়া। বিশ্বহী প্রপনে পার খিলনের সাধী !

বকলে। যোৱা ৰাম্মজাল গাঁবি।

क्षच्या । हम, अचि, हम ।

কুংক-খণন-খেলা খেলাবে চর ং

দ্বিতীয়া ও ভূতীয়া ৷ নবীন হলতে গঠি নব প্রেন-ছব, প্ৰযোগে কাটাৰ নম বসজের রাভি ¹

ৰকলে। নোহং বারা**দাল স্টাধি** ।

ছিতীয় দৃশ্য।

物 1

পদনোৰ্থ অবয় ে শান্তাৰ কাৰেশ

ইমৰ কৰালৈ - একতালা।

শাষা। পথহার। তুমি পথিক বেন বো স্থেবর কাননে, প্রশো যাও, কোবা যাও। সুখে চল চল বিবল বিভল পালল নরনে, পুনি চাও, কারে চাও। কোবা পেছে তব উধান হানর, কোবা পড়ে আছে ধরনী। যায়ায় তর্মী বাছিয়া বেন লো

কোৰ মাহাতুৰী পানে বাও !

মিল বাহার-- কাওবালি।

শ্বর: শীবনে শাল কি প্রথম এব বস্তা। নবীন বাসনা ভরে হৃদর কেবন করে, নবীন শীবনে হল শীবতা। ক্ষতরা এ ধরার মন বাহিরেতে চায়, কাহারে বদাতে চার হণরে ! তাহারে কুঁজিব হিন্দু-দিবত !

যায়াকুমারীগণের প্রবেশ।

कारिक—(वन्हें। (

ক্ষে । কাছে আছে বেখিতে মা গাও।
ভূমি কাহার স্থানে দূরে বাও !

মিল বাহাও—কাওল্লি।

ক্ষর। (শাস্তার প্রতি।) যেমন দ্বিশে বায়ু **চুটেছে**। কে কানে কোবায় কুল কুটেছে। তেমনি আমিও সুবি বাব, না কামি কোধায় দেখা পাব।

কার সুধান্তর নাবে, জগতের নীত বাজে, প্রভাত কার্মিকে কার নহলে গ

প্রভাত জাগিছে কার নহনে ! কাহার প্রাণের প্রেম অনুষ্ঠ !

ভাষারে পুঁজিব দিক্-সিগস্ত। 🔀 🕻 প্রস্থান।

काकि - (वन्ति :

মানাকুখাতীগণ। সনের হত কারে পুরুষ নতু,

দে কি আছে ভূকৰে, ৰে ত বৰেছে মনে <u>!</u>

থালো, মনের মত সেই ত হবে, ভূমি গুভন্দণে যাহার পানে চাও।

মিদ কাৰ্ডা—কাওঘটি

শাস্ত্রা । ্বেপথ্যে চাহিয়া \ আমার পরাদ কাহা চায়.

ভূবি তাই, ভূমি ভাই গো।

তোমা হড়ো আর ও জগতে

भात्र, कर मारे शिहू मारे शा।

তুৰি কুৰ বদি নাহি পাও,

काश्च, सूरचंत्र शक्कारन गांछ,

খাৰি তোৰাৱে পেছেছি স্বৰঃ ৰাকে.

আৰ কিছু নাহি চাই খো !

শান্দি, ভোষার বিরহে রহিব বিলীম,

ভোষাতে করিব বাদ,

```
तीर्थ दिवन, बीचं उपनी,
                 ধীর্ঘ বরষ যাস।
             যদি আৰু কান্তে ভালবাস,
             যদি ভার ফিরে নাতি আস.
        তবে, ভূমি যাহা চাও, ভাই বেন পাও,
             আমি যত হব পাই সে।।
                     কাষি--শেষটা।
               ( দেপথ্যে চাহিয়া )
মায়াকুৰাত্ৰীপৰ। কাছে আছে দেখিতে না পাও।
            তুমি কাহার স্থানে দুরে বাও !
   এববা। সনের মত কারে খুঁকে সর'।
   ষিতীয়া। বে কি আছে কুবনে।
            সে যে রয়েছে মনে !
   ভূতীরা। প্রণো খনের যত দেই 🖷 হবে,
            তুমি গুভন্দণে যাধার পানে চাও !
   প্রথম তোমার খাপনার যে কন, দেখিলে না তারে !
   হিতীয়া। ভূমি মাবে কাহ ভারে !
   ভুটারা। যাছে চাবে ভারে পাবে লা,
            ৰে নত তোমার ভাছে, খাবে ভাও।
```

তৃতীয় দৃশ্য।

কামন।

প্রমহার দহীগণ :

दवशभ—ध्यम्हेः ।

প্ৰথম। স্থি, সে পেল কোৰাৰ। ভাৱে ক্ষেকে নিয়ে আয় ।

নকলে। ক্লীড়াই বিরে ভারে তরুতনার।

প্রবন্ধ। আজি এ স্পুর সীঝে, কাননে মুলের দাকে,

হেনে হেনে বেড়াবে সে দেখিব ভাষ !

বিজীয়া। আকাশে ভারা ফুটেছে, দবিবে বাজাস **ফুটেছে** । পাধীটি প্রযোগে বেন্দে উঠেছে !

আৰম।। স্বান্ধ কো আনশ্বরি, বগুর বসন্ত লবে, 🗸

ৰকলে। লাবণ্য কুটাবি লে৷ ভক্তলায় !

व्ययमात्र व्यक्तम ।

দেশ-শকাওয়ালি ।

কাৰক। দেশো, সধি দে, পৰাইয়ে খনে, সাধের বনুৰস্কাহার।

আৰক্ট' কুঁইঙলি, বজনে আনিয়া তুলি, গাঁৰি গাঁৰি পাছায়ে যে যোৱে, কবরী ভরিরে মূলভার ! তুলে দেলো চঞ্চল কুত্ৰণ करभारत अधिरह वारववात ! প্রথম। আদি এত শোভা কেন। আদলে বিবশা বেম। দিতীয়া ৷ বিশ্বাবরে হাসি নাহি ধরে ! নাবৰা মরিহা পড়ে ধরাতলে । দৰি, ভোৱা দেখে যা, দেখে যা, প্রথম: । তত্ৰৰ ভতু, এড ত্ৰগৱাৰি ধহিতে পারে ন। বৃত্তি ভার। মিশ্র তুপালী— একটালা । তৃতীয় স্থী। স্থি, বহু পেন বেলা, তথু হানি কেলা, এ কি আর ভাল লাবে ! আৰুৰ ডিয়াহ, ধ্রেয়ের পিয়াস, প্ৰাণে কেন নাতি নাকে! কৰে আৰু হবে থাকিতে জীবন, থাবিতে থাঁবিতে মদির মিলন, मधूर हकारण अधूर नवन,

নিত-নৰ অপুরাধ্য 🔈

তরন কোমল বহুনের জন, নহুনে উঠিবে ভাগি। সে বিবাদ-মীয়ে, মিবে বাবে বীরে, প্রথম্ভ চপল হাসি।

উগাদ নিবাদ আকুলি উঠিবে, আলা নিবাশার পরাণ টুটিবে, মরমের আলো অংগানে সুটবে, সরম-অকুণ-রাগে।

धोषांक—अवद्यास्त्रः ।

প্ৰাৰ্কা । প্ৰনো বেশে দে, সুধি, বেশে দে, সিছে কথা ভালবালা) স্থানত বেদনা, সোহাপ বাতনা, সুবিতে পারি না ভাৰা ।

> কুলের বাধন, স্থের কামন, প্রাণ নীপিতে প্রাণের নাবন, 'লহ' 'লহ' ব'লে পরে আবাধন, প্রের চরণে আশা।

তিলেক বরণ গরণ দাণিয়া, বরব বরণ কাততে লাগিয়া, পরের মুখের হাসির লাগিয়া অল্ল-সামরে ভাসা' ! লীবনের সুথ খুঁ লিবারে সিয়া লীবনের সুথ লালা' ।

ৰিলক— ৰ'প্ৰচাল।

মায়াকুমারীগণ। থেখের জীন পাতা ভুবনে, কে কোধা ধরা পড়ে, কে জানে ! গরব সব হায় কথন্ টুটে বায়, সলিক ব'হে যায় নহলে!

क्षारतत्र अस्तम् ।

इक्षिक्त ने जिल्हान ।

কুষার। (প্রাথসার প্রতি) বেও না, দেও না কিরে;
শাড়াও, বাবেক দীড়াও ক্ষর-আসনে।
চক্ষর স্থীর স্থা ফিরিছ কেন,
কুসুমে কুসুমে, কান্যে কান্যে।

ь

বনে বনে উঠে হা হতাব,

শাদি কছু দিৱে নাহি চাই।

চকিতে ভনিতে ভগু পাই,

চলে ৰাই।

অশ্যেকের প্রবেশ।

পিলু---বেদ্টা ্

অশোক। এগেছি শো এসেছি, মন দিতে এ**গেছি**,

যারে তাব বেনেছি।

কুলঘণে ঢাকি মন যাব তাৰি চরণে.

পাছে কট্টন ধরণী পায়ে বাবেন

বেশ বেশ চৰণ কৰি যাখে,

ন। হর দ'লে, যাবে, প্রাণ ব্যথা পাবে.

আহি ত তেলেছি, মৰুলে ছেলেছি !

ধেয়ার –গোড়ী। বিশ্ব ত তেলোহাঁ, সম্ভূলো কেলোহে ব্

গুকে বল, সুধি বল, কেন বিচ্ছে করে ছুল,

মিছে হাসি কেন, স্থি, যিছে অ'।খিজন !

দানিনে প্রেমের ধাবা, তরে ভাই চই সায়া,

কে জানে কোণায় সুধা, কোণা হলাহল ৷

ব্ৰীগণ। কাঁলিতে লানে না এয়া, বাঁগাইতে লানে কৰু,

क्षेत्रम् ।

গণ। ক্যালতে জানে না এয়া, কাগাহতে জানে কৰা, ৰূখের বচন শুনে বিছে কি কইবে কলা !

প্রেম নিয়ে কগু খেলা, প্রাণ নিয়ে ছেলাকেলা,

क्षित्र साहे करूँ (यना, व्याप स्थल (दनास्कना, फिर्नु साहे कहें (यना, हन, निव, हन ।

A als and Caralla back after a back at

[अशंग (

विकर-३१४ ।

ৰারাত্বারীগণ। ধ্রেনের কাঁচ পাতা ভূবনে।
কে কোবা ধরা পড়ে, কে জানে।
বারব সব লায় কথন্ টুটে বার,
সালিল ব'ধে বার নারনে।
এ ভূথ-ধর্মীতে, কেবলি চার নিতে,
জান না হবে দিতে জাপনা,
কুখের ছারা কেনি, কথন্ বাবে চলি,
বারিবে সাধ করি বেদনা।
কথন্ বাজে বালী, গরব বার তানি,
প্রাণ পড়ে জানি বাঁধনে।

চতুর্থ দৃশ্য ।

কানন।

অহর, কুমার, অবোক।

বেলাবনী—চিমে ভেতানা ।

শবর। বিছে বৃত্তি এ কগতে কিসের পাতে. নমের বাসনা বত নমেই থাকে। বৃত্তিহাছি এ মিথিলে, চাহিলে কিছু দা বিলে, এবা, চাহিলে আপন যন গোপনে রাখে।

রংলরক্টী—-ক্রিপ্রাল্ ।

এত বোক আছে, কেহ কাছে না ভাকে ৷

অংশক। ভারে দেখাতে পারিনে কেন প্রাণ । (বুলে গৌ)
কেন বুঝাতে পারিনে হলহ বেলনা ।
কেননে বে হেনে চলে নার, কোন্ প্রাণে কিলেও না চার,
গুড সাথ এড প্রেম করে অপমান ।
গুড বংশভরা ভালবাস্য, কেন্ হেনে না,
গ্রাণে গোপনে ইছিল !

এ শ্রেষ কুলুৰ ধৰি হত, প্রাণ হতে ছিঁড়ে সইতাস, ভার, চরণে করিখান লাম : বুলি সে তুলে নিত মঃ, গুকাও অনাদরে, ভবু ভার সংখ্য রত অবসাম !

কৈৰ্ম্বi—ৰূপক । कृपोर । अथा, व्यापन यन निरम कैप्तिस परि. পরের মন নিয়ে কি হবে। আপন খন বলি বুকিতে নারি, প্ৰের মন বুবে কে কৰে ৷ অবোধ মন নমে দিরি ভবে, অ্যর 🕛 वानका केएस व्हाल हाहा गर्द । এ মন দিতে চাও দিয়ে ফেন, কেন গো লিতে চাও মন তবে প ৰপন সৰ্ব কালিছে। যান, তোষার কেল নাই এ জিছুবনে , যে জন কিরিভেছে আপদ আশে, ভূমি ফিরিছ কেন ভারার পালে। নৱন খেলি ওপু দেবে যাও, হৰৰ দিহে কৰু শান্তি পাও :

কুষার। ভোমারে মুখ তুলে চাহে না বে, থাকু সে আপনার গরবে ! नक्षीय**ः जगक**ा প্রশোক। স্থানি, স্বেনে ব্যব থিব করেছি গান। প্রাণের আদ। ছেড়ে স'পেছি **প্রা**ণ <u>।</u> যতই দেখি ভারে ভতই ঘহি. আপন মনোছাল। নীয়ৰে সহি. পারিনে চুরে (যতে, মরিতে **অং**সি, ভুৰু লইলো বুক পেতে অনল-বাদ চু यखड़े शांभि दिसा घटन करत, ভত্ত বাড়ে তুষা প্ৰেমের **ভরে.** (প্ৰক-অমূত ধার) তক্ট ৰাচি. যভই করে প্রাণে **ক্রণনি দান**় ভাকি—কাওয়ালি। ভালবেশে ৰদি তুখ নাহি व्यय्य । ভবে কেন, তবে কেন নিছে ভাৰৰাশ্য 1

অশোক। মন মিয়ে মন পেতে চারি।

ভাগে। কেন মিছে এ মুরাশা।

ব্যর ও কুরার। অগো কেন,

আলোক। হৃদয়ে আলায়ে বাস্থার লিখা,
নরনে সালায়ে নামা-সরীতিকা,
তথু পুরে মরি সক্তুদে।
আনর ও কুমার। ওপো কেন,
ওগো কেন যিছে এ পিপানা !
আনর। আপনি বে আছে আপনার কাছে,
নিধিন ক্ষতে কি অভাবে আছে!
আছে মল সনীরণ, পুশাবিভূবণ,
কোকিল-কুজিত কুঞ্ছ!
অশোক। বিশ্চবাচর বুপ্ত হহে যায়,
এ কি খোর প্রেম আছ যাছ প্রায়,
ভীবন যৌবন প্রায়ে!
আসর ও কুমার। তবে কেন,

ৰেছান্তা—ৰীপতাল 1

তবে কেন যিছে এ সুরাদা !

ৰায়াকুৰারীগণ। দেশ চেরে, দেশ ঐ কে আফিছে।
চাঁদের অলোতে কার হাসি থানিছে।
হলর হ্যাত শুলিরে লাও, গোণের নাথাবে তুলিরে লও,
কুলগন্ধ নাথে তার ক্বাস ভানিছে।

প্রমন্ত প্রথীসংগর প্রবেশ।

भिक्त किं किं — लब्हें। ।

अवधा । सूरव व्यक्ति, सूरव व्यक्ति (वर्षः, व्यक्ति वर्षः)
अवधा । स्वयं वर्षः कि क्रु क्रिका ना, पूर्त्र स्वयः ना,
ध्रम् क्रियः स्वयं, च्रम् विद्रः शांक का हा का हि ।
अवधा । त्रथा, भग्रद्ध क्रम् का मार्ग्य अध्यः, मीत्रद्ध निर्द्ध आत्र ।
दिवदः वर्षित्र च्रम्य वर्षे व्यक्ति व्यक्ति का नाम ।
स्वापान स्वीता कूस्य गीविता स्वरं पाद्य स्वता नाहि !
अध्यक्षा अवधिवयं । यस क्रियां स्वाप्तं क्रम् क्रियं वर्षः ।
च्रम् विद्यं पांक का हा क्रियं वर्षः ।
अध्यक्षः । वर्षः क्रीयम, यस्य वक्ष्ती, वर्षः वर्षः वर्षः ।

এই মাধুরী ধারা বহিছে আগনি, কেব কিছু নাহি চায় : আমি আপনার বাকে আপনি হারা, আপন দৌরতে দারা, খেন আপনার বন, আপনার প্রাণ, আপনারে সঁপিয়াছি ;ু

ৰুলভাৰ—একডালা 1

শ্বনোক। ভালবেদে হুধ দেও সুধ, সুধ নাহি জাগনাতে। প্রমন্ত ও স্থীপণ। জালালাল স্থা, ভূলিনে ছলমায়ে। কুমার । বন হাও, লাও, হাও, বাধি, হাও প্রের হাতে । শ্রেম্বা ও স্বীস্থ । না না না, মোরা, ভূলিনে ছলনাতে । অংশাক । সুখের শিশির নিমেবে শুকার, সুখ চেয়ে রুখ ভাল ; আন, সকল বিমল প্রেস হল ছল নলিন নান-পাতে ।

আমেদাও স্থীগণ। নানানা, মোরা, ভূবিনে ছলনাতে।

কুমার। রবির কির্দে সুটিয়ে কবিনী আপনি টুটিখ। খাগ্ন, কুখ পায় তয়ে সে ।

চির-ক্রিকা জন্ম, কে করে বহন চির-বিনির রাচে। প্রমদা ও স্বীগণ । বচনা মা, শোল, ভূমিনে ছলমাতে।

কাৰীর ⊸কংওবালি।

ক্ষমর । এই কে গো হেবে চায় : চায় প্রাধের পালে ! গোপন সদয়-হলে, কি জানি কিসের ছলে

पारनाक वादन।

এ প্রাণ নৃতন ক'রে কে যেন হেখালে মোরে.

ৰাজিল ময়ম-বীশা নুকৰ ভাবে ! এ পুৰুত কোৰা ছিল, প্ৰাণ্ডৱি বিক্ৰিন,

ত্যা-ভবঃ ত্বা-হরা এ মণ্ড কোবা ছিল।

কোন্ টাৰ বেলে চাহে, কোন্ পাৰী পান পাৰে,

কোন্ সমীরণ বহে শতা-বিতানে 😲

বিত্র সাম্মারকী—তাল কের্ডা ।

ध्यमः। पुरव माखारम् चारम्,

কেন থানে না থাছে!

যা, তোৱা ব। দখি, যা ওবাগে,

<u>ঐ আকুল অধর বাঁ</u>থি কি ধন যাচে।

স্বীখণ। ছি, ওলোছি, হল কি, ওলো স্বী ।

প্রক্ষা । লাজ বার কে ভাঙিল, এত দিনে সরম টু**টিল** !

স্তভীয়া। কেমনে যাব, কি ভগাব।

প্রথমার বাজে মরি, কি মনে করে পাছে !

আমিদা। যা, জোরা হা স্থি, যা ভগাগে,

ওই জাহুৰ অধ্য লীৰি কি ধন বাচে !

কালাংডা – সেমটা ।

ষায়াকুমারীপণ। প্রেম-পালে ধরা পড়েছে ছবলে.

দেশ দেখ সুখি চাছিয়া।

হটি কুল খনে তেনে গেল খই.

প্রণরের স্রোভ বারিয়া।

मिय क्रहे -यक्तांना ।

স্থীগণ ৷ (অবরের প্রক্তি) ওগো, রেশি, **জাখি ভূলে চাও**, তোমার চোখে কেন ভূমবোর !

সমর। আহি কি খেন করেছি পান, কোন যদির৷ রম-ভোর ! লাশার চোৰে তাই বুমবোর। वर्षीभग । कि. कि. कि । স্থি, কৃতি কি ৷ कारत । (এ ভবে) কেং জানী ছতি, কেং ভোকা মন, কেই গচেতন, কেই মচেতন, কাহাৰো নয়নে হামির কিবণ, কাহারো নয়নে কোর গ भागात होत्य छपु पूनत्यात ! স্থীপৰ। স্থা, কেন গেঃ মচল্ঞায়, হেথা, দীভাৱে তকুচার চ कवन जनग्रिकारिय, हेर्डन ष्णेचेत् । চলিতে বাহি চার. कार्रे मीकारत क्ल्रहात ! স্থীপুণ। ছি. ছি. ছি. দ্ববি, কবি কি ! व्यवत् ।

> (এ ভবে) কেহ পড়ে গাকে, কেহ চলে যার, কেহ বা খালনে চলিতে না চার,

কের বা আপদি বাধীন, কাহারে। চরপে পড়েছে ছোর ! কাহারে। নয়নে গেবেছে বোড় ।

ৰি বিষ্ট-- কাওগলি।

সৰীসশ। ওবে খোষা গেল না—চকে আছ, চকে আছ !

ও কি কৰা ৰে বলে সৰি, কি চোৰে বে চাৰ !

চলে আয়, চলে আয় ! লাভ টুটে লেবে খৰি লাভে.

शिटाङ् कांटक,

বয়ং দিবে মা ৰে, বন কে পালে তায় ! আসনি নে জানে ভার মন কোবায় ।

চলে আয়, চলে আর 🖰

िधक्ति ।

कांब्रोहको — स्वयुक्ति ।

মারাকুমারীখন। প্রোম-পানে বরা থড়েছে ছুকলে,

দেশ দেশ দুখি চাহিয়া !

হটি মূল খলে ভেলে খেল **ভট**,

এনমের লোভ বাদিরা :

চাদিনী বানিনী, বৰু পৰীয়ণ, আৰ বুম বোৰ, আৰ জাপরণ, চোণোচোৰী হতে বুটালে প্রমাদ, কুচ অরে পিক পাছিছা। দেও দেও স্থি চাচিয়া।

পঞ্চম দৃশ্য।

ক।মন।

নিম নিম্ন একচাল।

শ্বন । বিবৰ রশনী, সানি থেন কার আশায় আশার থাকি । (তাই) চম্বিত মন, চকিত কাবশ, ভূবিত আকুল নীথি । চঞ্চ ব্য়ে বৃদ্ধিয়ে বেছাই, ব্যান হয় বহি শেখা পাই, "কে সামিছে" বলে চম্কিয়ে চাই, কাগরণে তায়ে না থেখিতে পাই,
গাফি কপদের আশে;
গ্যের আড়ানে যদি হল দেয়,
গাঁথিয় অপন-পালে !
এত ভাগবাদি, এত যারে চাই,
মনে হর না ত সে বে কাছে নাই,
বেন এ যাদনঃ বাাকুল অম্বেংগ,
ভারারে আনিবে ভাকি !

প্রমদা, স্থীগণ, অশোক ও কুমারের প্রবেশ।

बाकांस- (शहद्वी ।

কুমার। স্থি, সাহ করে যাহা দেবে তাই বইব।
স্থীপণ। আহা মরি হরি, সাধের ভিথারী,
ভূমি মনে মনে চাহ প্রাথ মন !
কুমার। লাভ যথি সূল, লিতে ভূগে রাখিব।
স্থী। দেই যদি কটো!
কুমার! ভাভ সহিব।
স্থীগণ। আহা বহি মরি, সাধের ভিথারী,
ভূমি মনে মনে চাহ প্রাণ মন!

বহি একবার চাও দুখি বধুর ন্যানে, কুমার (**धरे चीवि-ए**शाकारन, চিত্ৰ স্বীবন ৰাতি বহিব। ৰদি কঠিন কটাক বিলে ! স্বীসণ। ভাও হলরে বিবাহে চিরজীবম বহিব ! কুৰার । আহা মরি মরি, সাধের তিবারী, সন্ধীপথ ৷ ভূমি মনে মনে চাহ আশ বল। দিক সিভু—একহালং। শানি স্বদয়ের কথা বলিতে ব্যাক্তর, दर्श योगा । ওধাইল না কেহ। দে ত এৰ না, যায়ে দ'পিলাম এই প্রাধ মন দেব। নে কি মোর ভরে পণ চারে. নে কি বিবহু গীত গাহে, शंद बैलिदी-क्दनि कनिएम আমি তামিলার গেছ। বিলু —**ভা**তগালি ১ ৰাষ্ট্ৰাকুমারীপণ । নিমিবের তরে সরবে বাছিল,

बद्रायम् कथः। इत ना ।

জনমের ভরে ভাহারি লাগিরে হুইল সরহ বেলনা !

শিলু—আ≱াবস্টা ।

ন্দাকে। (প্রয়নার প্রতি)

ভাগো সুখি, দেখি, দেখি, মন কোখা আছে। সুখীগণ। তত কতির জন্ম খুরে খুরে, ধের কারে বাচে।

বৰ্কে। কচকাত্র জন্ম বুলে বুলে বেল কালে বা। অংশাক। কি মধুকি সুধাকি সৌরভ,

কি হণ বেশেছ পৃথারে !

স্থীপণ। কোন্ প্রভাতে, কোন্ রবির **ভালোকে,** দিবে ধুলিয়ে কাহার কাছে।

অশোক। দেবলি না আলে এ জীবনে, এ কামৰে পৰ না পার।

দৰীগণ। যারা এসেছে, ভারা বসর ছুরালে.

দিয়া**শ কাপে ফেন্নে পাছে** !

সমূক্ষা – কাওচারি ।

আৰম্ভ । এ জ শেলা নয়, খেলা নয় ! এ যে হৰৱ-সহন-মালা, দৰি !

3

এ বে, প্রাণভরা ব্যাক্রবতা,

(वीशम क्राचीत वाशा.

अ (य, कोहांत्र रुप्रत्यस्थित्यः वीयम मद्यः होत्रः) ।

কে বেন সক্তত মোরে,

ভাকিন্দে আকুল করে,

বাই বাই করে প্রাণ, বেতে পারিনে !

যে স্থা বলিতে গাহি,

ভা বুৰি বনিতে নাতি, কোণায় নামায়ে কাখি, দখি, এ প্ৰেৰের ভাকঃ ।

যুক্তনে স্থাধিয়ে শেষে, গুৱাজে পাছিনে মালা !

विश्वा दरम्--- दश्यकी ।

প্ৰথম স্থী। সে দৰ কে, স্থি, বোৰা গেছে,

আমাদের স্থী যাতে মন গ্রোপ স্পৈছে !

বিতীয়া ও ভূতীয়। । ও শে কে, কে !

Moth a folkly a fall car fat Ca i

প্রথম। ওই যে ভক্নতলে, বিনোদ মালা গলে,

ৰা জামি কোন্ছবে বনে **থনেছে** !

विक्रीतः। तवि कि शत---

ও কি কাচে আদিবে কছু, কথা কৰে 🖰

```
ভতীয়া।
             ও কি প্ৰেম ভাষে, ও কি বাঁধন হাদে ?
          ও কি মারাওশে বন বরেছে ৷
              বিভোর আঁথি ভূমে আঁথি পামে চায়,
ৰিতীয়া।
          বেন কি পথ ভূলে এল কোথায় ৷ (ও গো)
স্তৃতীরা ।
             ধেন কি গানের হারে, প্রবণ মাছে ভারে,
          সেন কোনু টালের আলোম ময় ক্রেছে !
               विक रेक्सरी - अवलांना ।
          अहे समृत कृत लाइन यहन !
व्ययत् ।
               ভূলিব না এ জীবনে,
               কি মণনে কি কাগরণে !
            कृषि कान, या, मा कान,
               মনে সন্ধা কেন মধুর বাশবী বাকে---
                    ভগরে বলা আছে ব'লে <u>1</u>
              অ্যান প্রকাশিতে পারিলে,
                    কুণু চাহি কাতর নরনে 🔈
```

হিলে তৈয়ে^মা—কাওৱালি।

প্রবিশ। তারে কেনমে ধরিবে, স্থি, যদি বরা দিবে ! প্রথম:। তারে কেনমে কাদাবে, যদি আগনি কাদিবে ! বিতীয়া। বহি যম পেতে চাও, মন রাধ গোপনে !

```
ভূজীয়া। কে তারে বাধিবে, তৃবি আপনার বাধিকে।

সকলে। কাছে আসিলে ত কেহ কাছে বহে না।

কথা কহিলে ত কেহ কথা কহে মা।

থাব্যা। হাতে পেলে ভূমিতলে কেলে চলে বাব!

বিজ্ঞীয়া। হামিহে ফিব্রায় মুখ কামিহে সাধিকে।

বিজ্ঞানিয়া—চিন্ন কেতালা।

মধ্যা। (নিকটে আসিয়া প্রস্থার প্রতি।)

সকল সময় দিয়ে ভাল বেসেছি বারে,

সে কি কিরাকে পারে, দখি।

সংস্থি আহিমে থাকি

অধিনে কি বটে সংসাহে।

কে আনে, ধ্যায় প্রাণ্ডান প্রাণ্ড বারে চার,

ভারে পার কি না পাহ, (আনিমে)

ভার ভার ভাই এসেছি পো.

মুখানা স্বন্ম-বারে!
```

ভোমার সকলি ভালবাসি,

ভই হৰ বালি ৷ ভই বেলা, ভই গান, ভই ষ্টু হাসি <u>৷</u> ওঁই দিয়ে আছ ছেতে শীৰন আমাতি, কোমার তোৰার সীয়া ভূবন মাকারে !

কেপাছ –বেৰ্টা ।

গ্ৰীগণ । তুলি কে গো. শ্ৰীতে কেন কানাও বাসম। ! কিতীয়া । কে কানিতে চায়, তুনি ভালবান, কি ভালবান ম। ।

প্রথম। হাসে চঞ্জ, হাসে সন্ধা, সুর সুঞ্জানন, হাসে সময়-বস্ত্তে বিকচ যৌবন।

ভূমি কেন দেশ খাদ, ভূমি কেন হাদ মা ! স্কলে । এলেছ কি ভেঙে দিতে খেলা !

স্থীতে স্থীতে এই হৰতেও ৰেল। !

বিজীয়া। আপ্স হুংখ আপ্স ছারা কয়ে খাও। প্রথম। কীবনের আদক্ষ প্র ক্রেডে গাঁচাও।

ভূতীয়া। দুব হতে কর পূকা হৃদয়-কমন-মাসনা।

বেহাস—ক্ষেত্ৰাৰি।

भगतः । जार पूर्ण शाक, शृर्ण शाक, वाकि वाहे--वाहे ! श्रीमा । अवि, श्रुरत काक, मिरह (वनांत्र कांच माहे !

স্থীৰণ। অধীনা হোৱো না, স্থি,

আশ বেটালে ফেরে না কের.

ব্যাপৰে কেরে 🎉

শ্বন্য। ছিলাৰ একেলা নেই আগন ভূবনে,
এগেছি এ কোধায়!
কোনার পথ লানিনে ! কিরে বাই !
কমি নেই বিরাম কবন কিরে পাই !
(প্রস্থান ।
প্রিণ, করে ডাক কিনে !
কিছে বেলা কিলে নাই !
সধী। শ্বনীয়া হোৱো না, স্বিন,
শ্বনি নেরে না কের,
শ্বনি রাধিলে কেরে !
(প্রস্থান ।

নিয় - কাওগালি। বারাক্ষণারীসপ । নিয়েকের ওকে সর্বে কাবিল,

মরবের কথা হ'ল না ! জনমের তবে তাহারি মালিরে

রহিল মরখ-বেদনা ! চোগে চোগে সলা রাখিবারে সাব.

পদক পড়িল, ঘটন বিষয়ে, মেলিতে নয়ন, হিলাল হপন, এমনি প্রেনের ছলনা !

यकं मृभ्या।

須利 1

শক্ষা। অমরের প্রবেশ।

কাকি – কাওয়ালি।

শ্বর। সেই শান্তিক্যন জুবন কোবা পেল !
সেই ববি শলী ভারা, সেই শোকশান সন্ধা-সনীরশ,
সেই শোভা, গেই কারা, সেই কণন !
সেই শাপন হলমে লাগন বিয়াম খোবা গেল,
গৃহহারা হলম লবে কাহার শ্বণ !

(শাস্তার প্রতি) এসেছি ফিরিয়ে, **কেনেছি ভোমারে,**

এনেছি চন্দ্র তব পার— শীতক মেহসুধা কর দান :

যাও প্ৰেম, যাও দাকি, দাও নৃতন জীবন ৷

मानादेश — बाद्ध्यपृत्र ।

বারাস্থারী। কাছে ছিলে য্রে গেলে, দূর ছতে এস কাছে !
ভূবন কমিলে তৃতি, সে এবনো বলে আছে !
ছিল না প্রেমের আলো, চিনিতে পার্মি ভাল,
এবন বিরহানতে প্রেমানত অভিযাহে।

कृतन-शक्ताति ।

नाचा । (सर्वा, नवा, छून करड जनरदन ना ! আহি ভালবাসি বলে কাছে এব না ! ভূমি বাবে স্থাী হও তাই কর স্থা, আমি কুৰী হব ধলে বেদ হেম লা ৷ আপন বিশ্বহ সরে আছি আমি ভাস, कि करव छित्र औशास्त्र मिरमरपद भारताः ! আশা ছেড়ে ভেনে বাই, যা হবার হবে প্রাই, আমার অনুষ্ঠ-লোকে তৃষি কেনো লা !

কলিত বসৰ—কাওয়ালি।

শব্দ ৷ ভুল করেছিছ ভুল কেভেছে !

এবার ক্ষেবেছি, ক্ষেমেছি,

এবার মার ভুল নয় – ভুল নর ৷

কিবেছি মারার পিছে পিছে,

জেনেছি ৰপন পৰ দিছে !

বিৰেছে বাসনা-কাটা প্ৰাণে,

थ छ पूर्व नय—पूर्व नव ! পাই যদি তালবাসা, হেলা করিব মান

दममा कडिव ना महा पर !

ওই ধ্যেষ্ণর প্রাণে, দইব আন্তর দ্বি, অতল দাসির এ সংস্থিত, এ ত কুল সয়—কুল নহ !

্ষিত্র বেশ—থেন্টা ।

(প্রমদার সধীগণের প্রবেশ)

স্বীগণ। (পূর হইতে) শ্বনি বার বার কিরে শার, শ্বনি বার বার ফিরে আনে!

ভবে ভ কুৰ বিকাশে ! প্ৰথম : কৰি মুটজে চাহে ফোটে না, মরে নামে মরে নামে :

ভূলি বাদ অপধান, ক্লাক্সিমান, নিশি দিন রহ পাশে !

বিভীরা। খণো, মানা ছেড়ে তরু মানা রেখে দাও,

त्रपत-अञ्च-व्यादम 💡

বকলে। কিয়ে এন, কিয়ে এন, যন মোদিত কুমবালে। আজি বিরহর্থনী, কুম কুসুৰ, শিশির-সদিলে ভাসে।

पृत्रवे—काउपानि ।

মনর । ঐ, কে আমার কিরে ডাকে । কিরে বে একেছে তারে কে মনে রাখে । कांगांसा -१९४

बार्बाक्यांदी। विवाद करवह दांद्र व्यव-वर्ण,

এখন কিবাৰে ভাৱে কিলের হলে (

আম্মি বঙু দ্বীয়ণে, নিশীৰে কুকুৰ বনে, তারে কি পড়েছে মনে বকুল-তলে ৮

এখন কিয়াৰে আৰু কিলের ছলে।

পুরবী— কাওমারি ।

ক্ষর। আমি চলে এর বলে কার বালে বাধা।

কাহার বনের কথা বনেই থাকে ! আমি তথু বুঝি দখি, সরুল ভাষা,

সরল জন্ম আরু সরল ভালবাসা।

তোষাদের কত আছে, কড ষম প্রাণ,

আমার স্থায় নিখে কেনো না বিগাকে !

च जांखा— १**५**

মাহাকুমারীগণ ে লে দিনো ত সধুনিলি, প্রাণে বিয়েছিল নিশি,

মুকুলিক দপদিশি কুল্ল-দৰে।

ছটি লোহালের বান্ধি, যদি হ'ত কান্যকামী,

ৰদি ঐ বালাধানি প্রাতে গলে।

এখন ফিরাবে তারে কিলের ছগে !

ভূপালী – ভাওমালি।

পালা। (অসয়ের প্রতি)

না বুৰে কারে ভূমি ভাসালে কাঁথিকলে !

প্রণো কে আছে চাহিয়া সুক্ত প্রশামে,

কাহার জীবনে নাহি তুব, কাহার গরাণ জলে ! পড়নি কাহার বরনের ভাষা,

ৰোক্ষনি কাৰাৰ ময়মের আশা, দেশনি ফিলে,

कात बाकून व्यारगंत गांव अरम्छ न'रन !

বেছাদ⊸ ভাডাঠেকা ।

অমর। আমি কারেও বৃত্তিমে ওপু বুবেছি ভোষারে।

ভোষাতে পেরেছি বাজে। সংশব-শ্রীধারে ।

ফিরিয়াটি এ ভূবন, পাইনি ত কারে। যন,

পিলেছি ভোমারি ওখু দদের মাঝারে !

এ বংসারে কে কিরাবে, কে নইবে ডাকি,

মাজিও বৃঝিতে দায়ি, ভবে ভবে খাকি!

কেবল তোমারে লানি, বুঝেছি ভোমার বাদী,

জোমাকে পেয়েছি কুল অকুল পাধারে 🖫

(अञ्चन ।

विकाल-कार्याद्वेका ।

স্থীপ্ৰ। প্ৰভাগ ধুকৈ নিশি কামন গুৱে,

चित्रक-विश्वत हिन्ना महिन बृद्ध ।

য়ান শ্ৰী অভ ধেন, য়ান হালি নিবাইন,

কামিরা উট্টল প্রাণ কাতর করে।

(अभगात आदर्भ)

প্রমায়। চলু স্থি চলু তবে বরেতে কিরে,

যাকু ভেষে লান শাখি নয়ন-দীয়ে ! বাকু ফেটে দুৱ গ্রাণ, হোক আনা অধ্যাদ,

ক্ষর যাহারে ভাকে বাক্ দে দূরে !

िटांश्वर ।

कानाङा—वरः।

হারাভুহারীগণ। মধুনিখি পুর্ণিহার, ফিরে আমে বার বার,

নে অম কেরে না ভার, থে মেছে চমে।

ছিল তিৰি অন্নুকুল, ভগু নিবেখের ভুল,

চিৰ দিন ভ্ৰাকুল প্ৰাণ জলে :

এখন ভিরাবে ছারে কিলের ছলে !

मक्षम मृगा।

কাৰৰ।

অধ্ব, শাস্ত্রা ও শতাত পুরনারী ও পৌরস্কন

विभ परम्य-प्रशंस ।

স্কীলণ। তল এল বসত ধরাতলে 📒

বাদ কুছভাদ, প্রেশ্বাদ,

আম গৰুমনকরে অলব সমীরণ ; আন সৰবোহন-হিল্লোন, সৰ আগে,

প্রত্র নবীন ধারন। ধয়াতলে !

পুক্ৰণৰ। এস বর্বত-কম্পিত, ন্ম্প্র-মুখ্রিত, ন্ব-প্রব-পুস্কিত

হুল-অকুল খালতী-বল্লি-ছিডানে,

सूर्वहारक, मभूवारक, अन, अन ।

এৰ অকুণ-চৱণ কমল-বরণ **ত**কুণ উবাই **লোলে** !

এন জ্যোৎছা-বিহণ-নিশীখে,

কল-কলোল ভটনী-ভীরে,

ছুখছুগু সর্জী-শীরে, এন, এন।

धन रवीयन-कार्डड क्रवरण, होत्रन ।

এম বিশ্বন-স্থালস মহনে,

এশ বধুদ্ব শরম মাঝারে,

দাও বাহতে বাহু বাখি.

মধীন কুছৰ পাশে হচি হাও নবীন মিলন বাধন।

शांकांचां — १५ । অসর। (শান্তার প্রতি) মধুর বদন্ত এসেছে মধুর মিলন বটাতে।

মধুর বলম-সমীরে মধুর বিলন রটাতে :

कुरक दवधनी कृतिहा, कुलूब कृतिहार कृतिहार, निरिद्राह थ्यंगत-काहिनी विवित वर्ष कृतेगळ।

তের, পুরাণ প্রাচীন বর্মী, হরেছে প্রাথল বর্মী,

ষেন, বৌৰন-প্ৰবাহ ছুটিছে কালের শাসন টুটাভে; পুরাণ বিরহ হানিছে, নবীন মিলন আনিছে:

নবান বদন্ত আইল নবীন জীবন ভূটাতে !

মিম ব্ৰডাৰ কলাওয়ালি।

আৰি বাঁধি দুড়ান হৈরিয়ে, ত্রীসণ।

মনোনোহম বিলমমাধুটী বুগল মুরজি :

মুলগতে আকুৰ করে, বালে বালরী উদাস করে, পুরুৎগণ ৷ নিকুল প্লাবিত চন্দ্ৰকরে :---

বীপদ। তারি বাবে, মনোমোহন বিলবনাগুরী বুপন বুগতি ।
ভান আন ফুলমালা, ছাও গোহে বাধিছে।
পুরুষগণ। ভানয়ে পনিবে সুনপান, অক্য হবে প্রেমবছন,
বীগণ। চিরু দিন হেরিব হে —
মনোমোহন মিলনমাগুরী বুগল বুরতি।
(প্রমন্য ও স্থীগণের প্রবেশ)

বেকাপ—ৰাওয়ালি।

অমত ে এ কি স্বগুএ কি যায়। 🥍

এ কি প্রমন। এ কি প্রমনার ছার। ।

শাপ্তা : (প্রযাধার প্রতি) আছা কে শো ভূমি মলিন বয়নে, আং-নিশীলিত মলিন-নয়নে,

কেশ আপ্ৰায়ি হল্য-শহৰে

আপুনি বয়েছ বীন !

পুকুৰণণ। তোৰা তল্পে দৰে স্বৰেছে চাৰিছা,

তোমা ৰাগ্নি পিক উঠিছে পাহিছা,

ভিৰাতী সুৰীত কামন বাহিয়া

ফিবিতেছে সারাধিন ্

অসর। একি হয়ে।একি যায়।

এ কি প্ৰমন্ধ্য এ কি প্ৰশংক ছানা !

পুরুষপথ ।

नीका १

বেদ শহুছের বেছবালি ছেনে, शिक्त मुखारन वीश्वासक् अस्त,

এখনি মিলাবে রাম হানি হেলে,

কাছিল। পঞ্জিবে করি ! কাপিছে পূৰ্বিদা পূৰ্ব নীলাখনে,

कामरम हार्त्यकि कृत्वे रहत वहत्र. शानिष्ठि कथम् सुष्टित वशस्त्र

রহেছি তিরাব ধরি ৷ चमदा अस्ति दशा अस्ति योगाः

এ কি প্রসদা । এ কি প্রসদার ছায়া ।

किय-विकिष्ठ । স্থীপণ। আহা, আজি এ ধনতে এত কুণ কুটে,

এত বাৰী বাজে, এত গাৰী গায়,

নখীর হতর কুল্লম-কোমক—

কার অনামরে থাকি করে বার : কের কাছে আর, কেম মিছে হার,

কাছে বে আনিত নে ত অনিতে না চাই 🖰

কুৰে আছে বাতা, কুৰে বাকু ভাষা,

কুৰের বসন্ত শুখে হোড় দারা,

इचिनी भावीत महस्मत्र भीतः

খুবী ধনে যেন হেৰিতে দা পাছ : ভারা বেখেও বেখে না, ভারা ব্ৰেও বোৰে না,

ভাষা ক্রিকেও মা চার ।

विकिट-- वीचकान ।

শান্তা। স্মামি ভ বুবেছি সব, যে বোৰে না বোৰে,

গোপনে হুবর চুট কে কাবারে বৌজে ! আগনি বিরহ গড়ি, আগনি রয়েছ গড়ি,

वासना कैषिएक दिन क्षतप्र-मद्वारक ।

শায়ি কেন বাবে গেকে, চুকনাৰে গাৰি চেকে, এমন প্ৰৰেশ ভাব কেন থাকি ম'লে।

त्या छाणा स्कन साथि मास्य ।

অশোক। (প্রবলার প্রতি) এতহিন বৃদ্ধি নাই, বৃধেছি বীরে।

कांत्र याद्य यात्र, ठाटम चास्ति क्षित्र ।

পৌত সাক্ত— বহু ।

হনতে হান্য বাৰা, দেখিতে না পাছ আঁবা,

নয়ন রয়েছে ছাকা নয়ন-নীরে :

সেংকিনী—খেমটা।

শক্তা ও বীষণ। উদে, হাস, হাস।

হারা হদর হুট কিরে এনেছে !

#

পুরুষ। কড় ছবে কড় মৃত্যে, জীধার নাগর পুরে, নোনার তরদী হুটি তীরে এনেছে ! নিলন দেখিবে বলে, ফিরে বারু কুতুখনে, চারিধারে ফুলগুলি বিরে এলেছে ! होप, शंत्र, शंत्र ! বৰুৱে । হাবা হাংস মৃষ্ট ফিরে এলেছে ৷ रेक्सनी – भारतक्षेत्रमा । আর কেন, আর কেন, क्षीयम्। । দলিত কুছুমে বহে বসৰ স্বীদুৰ ৷ **क्रूतार**प्र शिक्षांक्ष (वना, अथन् अ यिरक्र (पना, নিশান্তে মলিন দীপ কেন অলে পকারণ ! अधीशन । ৰজ ধৰে সুৱায়েছে তইন্ মুছাতে এলে, অঞ্চলা হাসিভরা নবীন নহন কেৰে 🔈 এই ৰও, এই ধৰ, এ ৰালা ভৌৰৱা পৰ, क्षंत्रहा ।

क्रिज्ञबर्डे—वी।च्छाय ।

এ থেলা তোমরা খেল, সুধে ধান্ধ অচুন্দণ ৷

ক্ষমর। এ তাঙা স্থাবর মাথে ময়ন-মালে, এ মদিন মালা কে লইবে : রাব আব্যে মান আশা হ্লহ-তবে, এ চিম বিবাল কে বহিবে ! ভূথনিশি অবসান, গেছে হাসি গেছে গাব, এবন্ এ ভাঙা প্রাণ কইয়া পলে, নীরব মিরাগা কে সহিবে !

जम्दर्शन⊸काक्षक्रील ।

ৰাজা। বাদ কেব নাবি চায়, আমি কইব, ভোৰায় সকল হব আমি সহিব ! আমাত হুলহ ৰম, সৰ দিব বিদৰ্জন, ভোষায় হৃদয়-ভাৱ আমি বহিব ! ভূল-ভাঙা দিবালোকে, চাহিব ভোষায় চোধে, প্ৰশাস্ক সুক্ষের কথা আমি কহিব ।

ि छेक्स्प्रज व्यक्तान ।

টে।ডি—ৰ'পডাল।

নারাকুমারীসণ। স্থের মিলন টুটবার নর ! নাহি আব জয়, নামি সংশম ! নমন-শলিলে যে হাসি স্টে গো, রয় ভাতা বয় চির্দিশ ব্যা !

কৈন্দ্ৰী—ক'।গড়াল।

কাৰণ। কেন এলি বে, ভালবাসিনি, ভালবাসা পেলি লে। কেন শংলাবেতে উন্ধি মেহে চলে সেভিনে।

দ্বীপদ। সংসার কটিন বড় কারেও সে ভাকে না,

কারেও লে ধরে রাবে ন) গ

(र शांदक दन शांदक, चांत्र दव सात्र दन शांत्र,

কারে। করে ফিরেও না চায় ! কার্যা। হার বাদ, এ সংসারে ঘটি না পুরিত্

> আৰুলের প্রাণের বাসদা, চলে যাও মানসূপে, ধীরে ধীরে কিরে যাও,

ধেকে ৰেতে কেহ বলিবে ন।।

ভোষার বাধা, ভোষার অঞ্চ তৃমি নিয়ে ধারে,

শার ও কেহ শক্র কেলিছে না ੵ

[अज्ञांन ।

যায়[কুযারীগণ।

যি**শ বিভাস—এক**তালা :

ককলে। এরা, ভূগের লাগি চাবে থেবন, থেবন বেলে মান এবিয়া। ভঙু ভূগ চলে বার। ৰিজীয়া। এমনি নারার হলনা ।
তৃতীয়া। এরা ভূলে বান, কারে হাড়ে কারে কার।
সকলে। ভাই কেনে কাটে নিলি, ভাই হার প্রাণ,
ভাই খান অভিযান,
প্রথমা। ভাই এত হার হার।
কিতীয়া। প্রেমে কুই হুই ভূলে ভবে কুই পার।
সকলে। স্থি চল, গেল নিলি, বুপন কুরাল,
হিছে আর কেন বল।
প্রথমা। বাই ভূমের ভূমক নিরে থেল অভাচল।
কুকলে। স্থি চল।
প্রথমা। প্রেমের কাহিনী খান, ইনে গেল অবসান।
কিতীয়া। এখন কেন্ বানে, কেন্ ব্যের ক্রেক্সান।

नवांथ ।

বান্মীকি-প্রতিভা।

क्षेत्रम पृथ्य । व्यत्ता । व्यत्स्वीश्रम ।

रिष्**र सामि** ।

সংহ দা সংহ না কালে পরাণ !
সাধের অরণা হ'ল খণান !
দল্লাদলে আসি শান্তি করে নাক.
আনে দকল দিশ কম্পদান !
আকুল কানন, কালে সমীরণ,
চাকিত মৃদ, পাবী সাহে দা দান !
ভামন ভূপদন, শোনিতে ভানিদ,
কাতব বোদন-রবে কাটে পাবাণ !
দেবি হুর্গে চাহ, আহি আ বনে,
রাখ অধিনী কনে, কর শান্তি ছাম।

(अज्ञाम ।

(প্রথম দম্যুর প্রবেশ)

किय निक्रा

ष्याः, (रहिहि अधम १

শৰ্মা ও হিকে স্বার নন !

গোলেৰাৰে কাঁকতালে পালিয়েছি কেবন !

লাঠানাঠি কাটাকাটি, ভাৰতে লাগে দাত-কপাটি, (छाँदे) जानके, द्वरण ब्यानके स्वित्त्र प्रकृत्यद्धि द्वरमा ।

আৰুক্ তারা আতুক্ আংগ, ছ্লোছনি নেব ভাগে,

ভাষামিতে আমার কাছে দেশ্ব লে কেমৰ !

অধু মুখের খোরে পলার চোটে, বুট্-কলা ধন মেব বুটে,

গুধু ছলিয়ে ভূ'ড়ি বাজিবে ভূড়ি কর্ব সর্পরম 🛚

(পুটের দ্রব্য লইয়া দম্বাগণের প্রবেশ)

এনেছি যোৱা এনেছি যোৱা রাশি রাশি **স্টের** ভার <u>৷</u>

ক্রেছি ছারপরে !

কত প্ৰাৰ পল্লী সৃষ্টে-সৃষ্টে করেছি একাকার !

দিল বি'বিটাঃ

काकि ।

>২ হয়: ।—আজকে ভবে যিকে সবে কর্ব মুঠের ভাগ,

এ বৰ আমৃতে ক**ত সঙ্ভঙ স্বগ্ৰু বন্ধ বাস**।

২র দক্ষ্য ।—কাজের বেলার উনি কোঝা বে কাগেন, ভাসের ধেলার আনেন আবে (আরে নারা)। ১ম।—এড বড় আন্দর্জা কোনের, মোরে নিয়ে এ কি কানি ভাষানা। এখনি মুক্ত করিব থক্ত খবর্ণার রে খবর্ণার।

২ব।—হাঃ হাঃ, ভারা বাগা বড়, এ কি ব্যাপার ! আদি বুলি বা নিয় ক'বুবে নস্ত, এগ্নি বে আকার।

ক্ষ।—এৰ্মি ৰোম্ব: উদি, পিঠেতেই দাগ, তলোমাৰে মহিলা, ৰূখেতেই লাগ ;—

১ৰ ৮---খার বে এ সব সহে লা প্রাণে, নাহি কি ভোষেত প্রাণের সারা হ

বারণ সাথে কাগিছে অন,

কোখারে গাটি কোধারে চাল 🛚

সকলে ৷—হাঃ হাঃ, ভাষা খাদা খড়, এ কি ব্যাপার <u>:</u>

আজি বৃধি বা বিং ক'লবে নক্ত, এম্নি ৰে আকার !

(বালাকির **প্রবে**শ)

ना परिच

সকলে (—এক ভোৱে বাঁধা আছি যোৱা সকলে।

ना बामि बाइर, सः बामि भौतम, सः बामि काराहर !

त्क रा बाका कात्र बाका, भारत कि कामि ! श्रीष्ठ करनरे बाका स्वाबा, उनरे बाकशानी ! बाका श्रका केंद्र मीडू, श्रिष्ट मा विते ! बिकूचन बारत कावता नकरन काशास मा कवि का, मावाश केंगरत श्रीसहन श्राची, नमूर्थ उरस्टक्ष का !

বিৰু ।

১ৰ দশ্য । – এখন কৰা কি বন্ ।
বক্ষে । – (বান্ধীকিৱ প্ৰতি) এখন কৰা কি বন্ !
১ৰ দশ্য ।—হো বাদা, হাদির ব'রেছে গল !
বৰ্ষে ।—বন্ বাদা, কৰা কি বন্, এবন কৰা দি বন্ !
১ৰ দশ্য ।—পেলে মুখেতি কৰা, আমি বনেরি বাধা,
ক'রে হিই বনাতল !

ব্যবে।—ক'রে দিই রসাকল। ব্যবে। –হো রালা, হালির র'য়েছে দল, ক্লু রালা, কর্মাণ কি বল্, এবন কর্মাণ কি বল্যু

Rifer.

বাজীকি।—শোন্ হোর। বংগ শোন্। সমানিশা সাজিকে, পুলা বেব কানীকে, দ্বরা করি হা' তবে, সবে নিন্দি দা' তোরা,

रनि निरम् चात्र !

[वाबोकित क्ष्मांम ।

রাসি**টা** বেলা**ম্বরী** ।

বৃহত্যে।—ত্রিভূবন হাবে, আসহা প্রতন, কাছারে না করি ভয়,

নাৰার উপরে হতেছেন কালী, সমূৰে হয়েছে সম 1

ভবে আৰু সূবে আয়, তবে আয় সূবে আয়, তবে চাল্ সূবা, চাল্ সূবা, চাল্ চাল্ গ্

বরা বায়া বৈধন্ হার, হারখায় হোকু ! 👚

কে বা কাঁদে কার তরে, হাঃ দাঃ হাঃ !

তবে আনু তৰোয়ার, আনু আনু তৰোয়ার, ভবে আনু বহুবা, আনু আনু হৈথি ঢাল্।

>न बन्दा :-- चार्श ८भटिं किट्ट होत, भरत भिटंट निवि होत.

বাং হাং, হাং হাং হাং হাং !

सार सार सार सार, सार सार १

জনা ভূপালি :

नवरन ।—(छेडिया) कानी कानी रामा ता चाक,

यन (रा, (रा, (रा, यन (रा, (रा, (रा, यन (रा, १

নাবের লোৱে সাধিব কাল্য

বল হো, হো, বল হো, বল হো !

ঐ থোর মত করে নৃত্য রক বাঝারে,

ঐ লক লক 🖙 রক বেরি স্থান্থরে,

ঐ লটু পটু কেশ, অটু মটু হাপেছে ;

বাহ। হাহাহ। হাহাহা, ।

भारत रल् ८६ श्रीमा मारतह सह, सह सह,

क्या करे, बढ करे, क्या क्ये, कर ब्या !

भारत यस् (त श्रामा सारवय स्वर, स्वर स्वर ! सारत थल् (त श्रामा सारवय स्वर !

(গম্মেন্ডেম —একটি থালিকার **প্রবেশ**)

क्ति प्रशास

राणिका ।—क्षे ८४व करत वृक्षि गगरम !

चौंशात शहिल, अवसी चारेन.

পৰে কিৱে বাব কেম্বৰে চ

চরণ অবশ হার, প্রাক্ত ক্লান্ত কাম,

সার। বিষয় বন প্রমণে।

षदव स्टिय वांच (कंबरमः १

वस्त्र ।

বাসিক। —এ কি এ বোর বন।—এর কোবার ! পথ বে কালি লা, কোরে কেবারে কে না ! কি করি এ কাঁবির রাতে !

কি হবে হায় ৷

হন হোর নেয় ছেয়েছে গগনে, চক্তিতে স্পথা চরকে স্থনে,

তে সম্বাচনকৈ স্বলে, একেনা বালিকা

তরানে কাঁপে ঝার !

क्षित्र

ঃৰ মত্যা া--- (বালিকার আতি)— পৰ ভূৰেছিদ্ স্তিঃ অটি গু সিংহ বা**ভা দেব**তে চাসু দু

এমন ভাৰণাৰ গাঠিছে দেব, হ'ৰে বাক্ৰি বার হাস্ !

নকলে। হাঃ হাঃ হাঃ, হাঃ হাঃ হাঃ ! ২ঃ (— (প্রথমের প্রতি) কেমন হে ভাই !

কেবন লে ই'টি 🔈

>ৰ)—- সম্প নহে বড়, এক দিন'না এক দিন স্বাই সেধাৰ কৰ কড়।

এক য়েন'না এক ফেন স্বাছ সেধার হব কড়। সকলে ৷--হাঃ হাঃ হাঃ ! ্য।—আৰু সাধে সায়, রাজা জোরে হেবিছে বিইংগ তবে,

আর জা' হলে ছালা ভূলে পূর্তে নাহি হবে !

नक्त 🗁 🧪 सो। सो। साः 🖯

্ৰকলের গ্রন্থান।

(वगरमवीशरशत थरवन)

মিল বিভিন্ন

মন্ত্ৰিও কাহাৰ বাছা, একে কোধান নিয়ে মাৰ !

আহা ঐ করুণ চোৰে ও কাৰ গাৰে চায় :

বাবা ভটিন পাশে, মদ কাপে তাবে,

থাপি-কলে তাবে, এ কি দশা হার 🕍

এ বৰে কে আছে, যাৰ কার কাছে,

কে খবে বাঁচাছ !

ষিতীর দৃশ্য। অরপো কাদী-প্রতিম।

বাল্যীকি স্তবে খাদীন ৷

वाद्यवै ।

রাধা-পদ-পদ্যবুদে প্রশ্মি সো ক্রমারা।

আদ্দি ও ৰোৱ নিশীৰে পৃদিৎ ভোষাংগ হারা।

ভুরুমর বহুহর'—ব্রহাণ্ড বিল্লার কর, दनदरक पारका या (भा, (बाजा केबाफिनी पावा ।

খননিয়ে দিনি বিনি, গুৱাও ভড়িত অনি, ছুটাও শোশিত-ল্লোড, ভালাও বিপুদ বরা।

উর কালী কণালিনী, বহাকাল-দীমভিনী, কহ কৰা পুলামনি মহাদেখী প্রাংশবা।

(वालिकारत लहेगा पञ्चाशरणत थारवन)

कारि⊤

মন্ত্রগণ।---দেশ, হো ঠাকুর, বলি এনেটি বোলা । বভ সবেস, পেয়েছি বলি সবেস,

धनम मरत्रम नक् नि त्रांका, स्रांता मा भरक् धना !

বেরী কেন ঠাছুর, সেবে কেল' বরা !

कांगंका ।

বান্মীকি।—নিয়ে ভার স্থলান, বরেছে ভূবিতা ভাষা বা, শোণিক পিয়াও, যা' পরার :

লোল কিছে। লকুলকে, ভঞ্জিত খেলে চোৰে,

করিরে বঙ দিক্দিগঞ্চ, খোর দরা ভার !

倒物。

वान्दिन। 🛏

কি লোবে বাহিৰে আমায়ে, আনিলে কোণার !
পথহারা একাকিনী বনে অসহার,—
সাথ বাধ বাধ, গাঁচাও আমার !
দলা কর অনাথারে, তে আমার আছে,
বছনে কাতর তহু বহি বে মাধার !
বন্দেৰী ।—(নেগ্ৰো) দলা কর অনাথারে, দলা কর গোঁ,
বছনে কাতর তহু কর্মার ব্যধার !

निष् देववरी ।

বাজীকি ৷—এ কেমন হ'ল মন আমার !

কি ভাব এ যে, কিছুই বৃক্তিত বে পারিনে !

পাবাণ হলনো গলিল কেমছে,

কেন আজি লাঁ খিন্নল বেখা দিল নহমে !

কি নায়া এ লানে গ্যে,

পাবাণের বাব এ বে টুটিল !

নব ভোবে গেল গো—ন্য কেনে পেল গো—

বচকুৰি ভূবে গেল ককুলার হাবিবে !

1804

>न रहा :—बार्ट, कि जर कावना, किছू क वृत्ति ना !
>त रहा :—नवह व'रट बाद (व !
क्ट रहा :—कथन् जरनहि स्थाता, जबरना छ र'न ना !
वर्ष रहा :—ज कथन् जरनहि स्थाता, जबरना छ र'न ना !

বাহীকি।—মানা হবে না, এ বলি হবে না, অৱ বলির ভরে, বা' রে বা'।

১ৰ দম্ম ।— **লক্ত** বলি এ বাতে কোৱা বোৱা পাব ?

২র দক্ষা া—এ কেমন কথা কও, বাধ্যব ়

মেণ্ডসিরি।

ৰাঝীকি।—বোন্ তোরা শোন্ এ মাধেশ, রূপাশ খর্পর ফেলেদে দে।

a and a contained of i

বাঁধন কর ছিল,

যুক্ত কর এখনি রে !

(বধানিট কন্ত)

ভৃতীয় দৃশ্ম। অরণ্য। বাল্মীকি।

वीक्शकः।

বাখীকি ৷—বাকুৰ হয়ে যনে কৰে,

ব্যম একেলা দুরু মনে।

কে প্রাবে মোর কাতর প্রাণ, শ্বড়াবে হিচা ভ্রমা বরিষণে !

[क्षेत्र्म

(সন্ত্যুগণ বালিকাকে পুনর্বার ধরিরা আনিয়া)

নিখ বালেনী।

ছাড়্য না ভাই, ছাড়্য না ভাই, এমন শিকার ছাড়্য না !

হাতের কাছে অৱি এল, অন্নি হাবে :—

শন্তি হৈতে দেবে কে 🗇 !

রাঞাটা থেপেছে তে, তার কথা মারে মান্য দা : আল নাতে ধ্য ছবে ভারি,

নিয়ে আর কারণ-বারি, জেলে যে যশালগুলো, মনের মতন পুজো দেব—

নেচে নেচে স্থার স্থার--রাজ্যটা খেপেছে রে.

লচে নেচে খুরে খুরে—রাজ্যন গেপে**ছে রে.** কাল কথা ভাল মানত লা

कात्र क्या चात्र मन्दि ना !

कामाही ।

প্ৰবৰ্ষ মৃত্যু :---

ৰাজ। মহালাকা কে জানে, আমিট হালাধিয়াল। ভূষি উমীয়, লোভোৱাল ভূষি,

ঐ হেছি।খলো বৰ্কদাৰ ।

त्य किञ्चला स्कलान र

ৰত বৰ কুঁছে, লাছে ঠাই ছকে, কালের বেলার বৃদ্ধি বার উদ্ধে। ना द्वाचार कर मिल जार करे. কর ভোরা দৰ যে বার কাল ৷

भाषांच ।

विजेत रहा 🛏

লাহে তোৰাৰ বিজে বাধ্যি আন। চ বাৰত্ব কৰা এ কি তামালা শেৱেছ !

প্ৰথম ।- জামিদ্ হা কেটা আমি <u>!</u>

ষিতীয় —েচের চেরু জানি—চেরু চেরু স্কানি— শ্রেপথ।—হাসিদ্ধে হাসিদ্ধে বিছে বা যা—

সৰ লাগনা কাছে বা বা.

ষা আপন কালে।

বিত্তীয়।--পুৰ ভোষাৰ লখা চৌড়া কৰা।

নিতার দেখি তোমার হতার থেকেছে ৷

किंश निष्

ততীর।—মাঃ, কাফ বি গোলযালে, ना इस राजादे राजारम !

মর্বার বেলায় মর্বে ওটাই, বাক্ব কাকভালে !

প্রথম ৷— হাম হাম, বরি ব্রি. ওয়া থাক্তে আমি বরি !
ভেমন তেমন হেখ্লে বাবা গুক্ব আড়ালে !
ক্তলে ৷— ভারে চলু তাবে বীশ্ সিমি.
ভামি প্রোর কামিণ্ বিরি !

কৰাৰ কৰাৰ হাত পোহালো, এখনি কাজের ছিবি। প্রিয়ান।

পায়া তৈপৰী ৷

বালিকা। হা কি ধৰা হ'ল আৰার !
কোধা পো মা করুবাময়ী, অৱশ্যে প্রাণ বার পো !
নুহুর্তের তত্ত্বে বা খো, ধেখা সাও আমারে,
কন্মের মন্ড বিদার !

(প্রভার উপকরণ লইয়া দহ্যগণের **এবেশ** ও কালী-প্রতিমা দিরিয়া দৃত্য)

कार्देशनि ।

এত ব্ল নিংগছ কোগ। মুগুমালিনী । ভোমার মুত্য দেখে চিন্ত কাপে চমকে ধর্ণী । কাপ্ত যে দা, লাভ হ' মা, সন্তানের মিদজি । রাঙা নমন দেখে নয়ন মুখি ও মা নিবেহনী ।

(বাধ্মীকির প্রাবেশ)

(利利) 1

বালীকি:—হচো আস্পর্কা এ কি তোবের নরাধম !
কোবের কারেও চাহিনে আর, আর আর না রেমৃত্ দৃত্, আধারে আর গ্লুস্মে !
এ সব কাল আর না, এ পাপ আর না,
আর না আর মা, আধি, সব হাছিছ ।

क्षथम :— शीम शीन अ भवन भागि विदूरि मानित्म तामा !

এত করে বোকাই বোকে দা !

কি করি, দেখ বিচারি ! বিজীয় :— বাঃ—এও ত বড় মকঃ, বাংবা !

এরাই ত বত বাধানে কঞান,

वक कुरतात (वीहा ७३ छ, चारत वस् मा रह ।

क्षथर !— 🞅 रूत् पृत् , भिगव्य चार परिनृत्म !

ৰাজীকি।—তকাতে সৰু সত্তে বাং । এ গাগ ভাৱ না, ভাৱ না, ভাৱ না, ভাবি, সৰ ছাড়িৱ ।

্লিকাসংগ্র **গ্রন্থান**।

रेक्क्ष्मी । ५

বাজীকি। আয় মা আমার সাথে, কোন ভা মারি আর । কত ছংগ পেনি বনে আহা বা আমার ! নয়নে মরিছে বাবি, এ কি বা স্থিতে পারি !

কোমল কাজর ভত্ কাঁপিভেছে বার বার 📒 🦠

[व्यक्ति।

চতুর্ব দৃশ্য। বনদেবীগণের প্রবেশ।

महाति ।

বিশ্ বিশ্ খন ঘনরে বরবে। গগনে হনবটা, শিবরে ভক্ত শভা,

मब्द मब्बी नाहित्य दशरर !

দিশি দিশি সচকিত, দাসিমী চৰকিত,

চবকি উঠিছে হরিণী তরাগে !

🛮 ब्रह्मम ।

(বান্মীকির প্রবেশ)

समृत्य ।

কোধার মৃত্যুকে লাছে ঠাই---কেন প্রাণ কেন কাথেরে : বাই দেখি শিকারেতে, রহিব লাবোৰে বেতে,
কুলি স্থ থালা, বনে বনে চুটিয়ে—
কেন প্রাণ কেন কামেরে !
আপনা ভূলিতে চাই, ভূলিব কেমনে,
কেনমে যাবে বেমনা !
বহি ধন্ন আমি বাব, গাহিব ব্যাবের গান,
ধলবল নয়ে যাতিব—
কেম প্রাণ কেন কামেরে !

(শৃক্ষধ্বনি পূর্ব্বক দল্পগণের আহ্বান) দল্পগণের প্রবেশ।

216 i

দত্তা । → কেন রাজ। ভাকিন্ কেন, এনেছি সবে ;

বুকি আবার স্থান নায়েত্র পূজা হবে ;

বাজীকি । → নিকাবে হবে বেতে, আম য়ে সাবে ;

প্রথম । → ওয়ে, রাজা কি তন্চে, নোনু ;

সকলে । নিকাবে চন্ ওবে ;

সবাত্তে আমু ভেকে যত বলকল সবে ;

[বাজীকের এইনি ।

हेनम कल्लान् ।

बहे राजा गरा विश्व क्वरहा, क्वरहा, कुछ चाह, विकास स्वरह वादि चाह,

अवन वजनी वरह वाद (व !

ধৰ্মাণ বর্ম লয়ে হাতে, আর আর আর আর আর ! বাজা শিলা খন বন, শঞ্জে কাঁপিবে বন, আফাশ কেটে বাবে, চন্ডিবে গড় পাণী সমে,

ছুটে বাবে কাননে কামনে, চারিদিকে **বিহে** বাব পিছে পিছে, কো হো হো হো হ

(বাগ্মাকির প্রবেশ)

বাঁহার :

বাৰীকি : — সহনে পহনে বাবে কোৱা, নিশি বহে বাছ বে !

তর তর করি পরণ্য, করী, বরাহ গোঁজ্গে,

এই বেন্দ্র যা সে !

নিশাচর গণ্ড সবে, এখনি বাহির হথে, ধছর্মাণ মে তে হাতে, চলু বরা চলু !

আলায়ে মশান আলো, এই বেনা আছু রে 🛚

[अञ्चार ।

चर्: ।

अभव र−क्तु क्यु करि, प्रश्ना करत त्यांता भारत वाहे र বিতীয়।—প্রাণ পণ বৌহ্ন এ বন সে বন,

চন বোৱা ক'কৰ গুমিকে বাই।

अध्य ।—नामा चारे, काय नारे,

ওঁই কোপে বৰি কিছু পাই !

এখন ।---সারে টাড়া টাড়া, শত বাড হলে করাবে শিকার

চুণি চুপি আয়, চুপি চুপি আয়, অৰ্থ তৰার.

এবার ঠিক ঠাকু হরে সর মাকৃ.

नावशाम रह रान, नावहाम हाछ वान,

শেল পেল, ঐ ঐ, পালায় পালায়, চক্ চল্ ৷

कार्ते का गिरक भार का पता गाँ**र** !

(वनत्त्रवीशर्यत्र व्यव्यम)

শিকা লোলার।

কে এল আদি ও বোর নিশীবে :

বাধের কামনে শান্তি মাশিতে।

रक्ष कड़ी यक शहरम महन,

বিমল প্রোক্ত বভিগ্ন :

प्रमुख विकास (कम ५८५ हा.

ন্থনে খব খব স্থিকা !
ভবালে চম্পিছে হবিশ হবিশী
ভবিত চবণে ছুটিছে ।
ভবিত চবণে ছুটিছে কামনে,
কল্প নৱনে চাহিছে—
ভাকুল স্বনী, সাবন সাবনী
লৱ-বনে পশি কালিছে !
ভিনিত দিশ্ভবি খোল বামিনী
বিপদ খন ছায়া ছাইয়া—

করানে আশ ওঠে কাপিয়া। (প্রথম দক্ষ্যর প্রবেশ)

কি লানি কি হবে আছি ৬ নিশীবে.

रमणे ४

প্রাণ মিরে ত সট্কেছি রে কর্বি এখন কি ! ভারে বরা' কর্বি এখন কি ! বাবারে, আমি চুপ ড'বে এই কচুবনে কৃতিরে ধাকি ! এই ব্যবহে ব্যুক্তামা, দেখেও কি রে ভছু কালি না,

বাহবা সাবাস ভোৱে, সাবাস রে ভোর ভরসা দেখি :

(ব্যেড়াইতে খোড়াইতে আয় এক জন দহার প্রবেশ।)

বৌৰী ১

আৰু মধ্য ।—বল্ব কি আৰু বন্ব ধুড়ো—উ উ 🛊

আমার বা হয়েছে, বসি কার কাছে--

এক্টা বুনো ছাগৰ চেড়ে এবে সেরেছে हैं। এবৰ ⊢ তথৰ বে ভারি ছিল ভারি ভূমি,

এখন কেন কর্ছ বাপু উউউ—

কোন্ বানে বেগেছে কাবা, দিই এক্টু কুঁ ়

(দহাগণের প্রবেশ)

情况。

দৰ্মার মশার দেরী লা সয়, भेक्ताचन ।—

তোৰায় জাশার নবাই ব'লে।

শিকারেডে হবে বেভে, বিধী কোমৰ বীৰ ক'লে।

बनवाराष्ट्र जब दर्ब हो चूँ हो,

चानका सक्त (बटडे ब्रूटे,

ভূমি কেবল গুটে পুটে

পেট পেয়োবে ঠেলে ঠুনে !

এখন :— কাজ কি খেলে ভোকা আছি,
আনার কেউ না খেলেই বাচি,
শিকার কর্তে হাল কে মর্থে,
চুকিলে থেবে হলা' মোহে |
চুঁ খেলে ত পেট ভারে না—
নাবের পেট্টি বাবে কেঁলে ।

(হাসিতে হাসিতে প্রস্থান ও শিকা**রের** পশ্চাৎ পশ্চাৎ পুনঃপ্রবেশ)

বাদ্মীকির ক্রন্ত প্রবেশ।

यांसीच ।

বাজীকি :—স্থাণ্ রাখ্ কেন বহু, চাড়িস্নে বাণ ! হরিণ শাবক ছটি, আগতরে বাস ছুটি, চাহিডেছে কিরে ফিরে কক্ষণ নরাল : কোম দোঘ করেনি ত, স্কুমার কলেবর,

কেমনে কোমল গেতে বিধিবি কঠিন লয় ! থাকু থাকু ওৱে থাকু, এ লাক্তণ খেলা রাণ্ লাভ হঙে বিলালিক এ ছায় বহুক বাণ !

🗓 क्षेत्राम ।

(দহ্যগণের প্রবেশ)

ন্ট্ৰাৰ্থাণ।

হক্সসণ।— আই না আঁর না, এখানে আর না,
আার হে সকলে চলিরা ঘাই।
ধরক ধান কেনেছে বাকা,
এখানে কেবনে থাকিব ভাই।
চল্ চল্ চল্ এখনি বাই।

(বাল্মীকির প্রবেশ)

ৰকাৰণ। – তোৱ ধশা, গ্লাহা, তাৰ ত মন্ত্ৰ, বক্তশাতে পান্ধ্য তথ্য নাকে মোৱা হ'বে বাই ! পাধীট নাবিদে কাদিয়া ধুন, না হানি কে তোৱে ক্ষিত্ৰ ভণ্

হেন কড় দেখি নাই !

[मञ्जाभरनम् अञ्चार ।

পঞ্স দুশ্য ।

शक्षिय ।

বাঝীকি।—জীবনের কিছু হ'ল মা, হার !--হ'ল মা গে। হ'ল না হায়, হায় !
প্রতন গছনে কত ভার এথিব, মিরাপার এ খাঁধারে !
পুত হুলয় ভার বহিতে যে পারি না,
পারি মা রে। পারি মা ভার ।

কি ল'হে এখন ধৰিব শীৰন, যিখন বৰ্জনী চলিয়া বাৰ— দিবন বৰ্জনী চলিয়া বাৰ—

ক**ড কি কৰিব বলি** কত উঠে ৰাদ্না,

কি করিব শানি না বৌ !

সহচর ছিল বাবা, ভোকিয়া হেব তারা ; ধহুৰ্কাণ তোৰেছি, কোন আর নাহি কাক—

কি করি কি করি বলি, হাহা করি ত্রমি গো,—

कि कवित बानि से (व !

(न्यांश्वरात्त्र व्यादन्त)

दिक पूर्वी ।

তাৰৰ :—দেশ দেশ, হটো পাৰী বসেছে পাছে। বিতীয় :—শাহ দেখি চুপি চুপি লাৰ যে থাছে। क्षचन ।-- चारत्र करे, करन करेगार र एए रह रह रह गरन । ষিতীয়।—রোস রোস আগে আমি করি রে সম্বান।

भिन्न रेक्टरवें।

ৰাৰীকি ৷ প্ৰাৰ্থাণ্, কি কৰিবি বৰি পাৰীটির গ্ৰাণ্ ছটিতে র'য়েছে ভাবে, মনের উল্লাসে গাবিতেছে গাম।

কাচে মোলের এল না ক হেখা.

১ৰ বাৰে। বাৰ' যিচে ওলৰ কথা,

চাইনে ওদৰ শান্তৰ কথা, সময় ব'হে ৰাছ বে।

ৰাধীকি।—শোন পোন যিছে রোর কোর বা।

कार ।-- वाम वाम शेकुब, এই ছাছি वान !

(একটি ক্রৌঞ্চকে বধ)

বালীকি ৷—ৰা মিষাৰ প্ৰতিষ্ঠাং ব্যুগমঃ নাম্বতীঃ স্বাঃ,

হং ক্রৌঞ্চারপুলাদেকমব্দীঃ কামনোহিত।।

वांसंह ।

কি বলিন্তু আমি !---এ কি সুললিত বাৰীরে <u>!</u>

কিছু না খানি কেমনে ৰে লামি, প্ৰকাশিত্ব দেবভাৰা,

এমন কথা কেমনে শিবিত্ব ছে।

পুরুকে পুরিল সমপ্রাণ, মধু বর্মীল প্রবংশ, এ কি 🗠 হদয়ে এ কি এ দেখি 💬

ৰোৱ **অহবার মাবে, এ কি ক্যোতি** ভায়, चर्चान ।-- करूपा क कांद्र :

(সরস্বতীর আবির্ভাব)

फ्लांगी।

বাৰীকি।—এ কি এ, এ কি এ, স্থির চপদা।

কিবৰে কিবৰে হ'ল ধৰ দিক উল্লা কি প্ৰতিদা মেৰি ও.

লোচনা সংবিয়ে,

কে রেখেছে পাঁকিরে,

আ বরি কমল পুতলা গু

[न्यांवनंदवंत **अस्**ति ।

(वनस्ववीधरगद्ध व्हारवर्ग)

ৰবলেৰী ⊢—নৰি নমি ভাৱতী, ভব ক্যৰ-চল্লং,

भूगा र'न यनकृषि, ५७ र'न कान १ বাজীকি।—পূৰ্ণ হ'ল বাসনা, দেবী কৰলাসনা,

বত হ'ল হস্ত্যপতি, গলিল পাৰণে !

...

বন্ধব্ৰী ⊨—কঠিন ধরাভূতি এ, কম্মালয়। ভূতি বে.

হ্বর-কম্পে চরণ-কমল কর দান । বাক্রীকি।—তব ক্ষম-পরিমনে, তাব ছদি ভয়িয়ে,

ভিত্ৰমিকৰ কমিব তব চৰণ-স্থল পান।

िटरशैषस्य व्यवशीय ।

(বান্মীকি কালী-প্রক্তিমার প্রতি)

মান্ত্রসূপী হর।

ক্রামা, এবার ছেডে চলেছি মা ।

পাৰাদের ৰেয়ে পাৰাণী, ন। বুহৰ হা বঙ্গেছি মা !

এত দিন কি ছব ক'ৰে তুই, পাৰাণ ক'ৰে ৱেবেছিলি. (আৰু) আপন বায়ের দেখা পেয়ে, নৱন-মধ্যে পৰেছি যা।

कारना दशरण जुनितम जान, जारना दशरण जुदलराह यन,

সামায় ত্যি হলেছিলে. (এবার) সামি ভোষার হলেছি বা।

ঘালার মালা কাটিলে এবাত, মান্তের কোলে চলেছি মা !

ষ্ঠ দৃশ্য।

क्रीड़ी ।

বাধীকি।—কোধা বুকাইলে ? সৰ আশা নিভিন, দৰ্দিবি অভকার,

সংব লেছে চ'লে ভ্যেছিয়ে স্বামারে, ভূমিও কি ভেয়াবিলে গ্

(লক্ষ্মীর আবির্ভাব)

河東 (

করী।--কেন গো আপন নদে, ত্রমিছ বনে বনে, স্কিক ছ্নরনে কিলের ছবে গু

ক্ষলঃ দিতেছি আসি, রতন রাশি রাশি, কুটুক্ ভবে হাসি মলিম মুখে !

ক্ষলা যারে চায়, বল সে কি না পায়, ছুঃখের এ ধরার পাকে সে স্থান,

ত্যেলিরা কৰলাসনে, এসেছি ঘোর বনে, আমারে গুভক্তে হেল গো চোগে।

क्षाकी (

বাজীকি :-- কোধায় সে উষাময়ী প্ৰতিয়া !

তুৰি ত নহো সে দেবী, কমলাসন:-
কোৱো না আমাৰে হলনা !

কি প্ৰকেছ বন মান ! তাহা যে চাহে মা গ্ৰাণ ;

১২

দেখি গো, চাহি না চাহি না, ৰণিয়য় ধূলিয়াশি চাহি বা-

ভাষা গরে সুধী বাদা হর হোক্—হর হোক্ —

আমি, দেবি, সে ক্ৰ চাছি না ! বাও সন্ধী অসভাহ, বাও সন্ধী অসহাহ,

এ বংশ এই মা এই মা,

এৰ নাএ হীনজন কুটাৰে !

বে বীণা ভবেছি কামে, নদ প্রাণ আছে তোর, আর কিছু চাহি না চাহি মা।

্ বন্ধীর অন্তর্ধান, বাব্যকৈর প্রস্থান।

বনদেবীপশের প্রবেশ 🕟

रेकाओं ।

रानी वीवाशानि, कक्रवामही 🕫

ব্দ্ধবনে নয়ন দিয়ে, অধ্যক্ষরে কেবিলে,

দৰ্ক দিয়ে লুকালে কোথা দেবি অন্তি!

ৰপন সম মিলাবে বলি, কেন গ্লেঃ দিলে চেতদা,

চকিতে ভগু লেখা দিলে, চিত্র স্বস্থেদনা,

তোহারে চাহি কিরিছে, হের, কাননে কাননে ঋই !

(বনদেবীগণের প্রান্থান। বাল্যীকির **প্রাবে**শ)

সবস্তীর আবিষ্ঠাব।

नांसंख ।

বানীৰ্মিক ।—এই যে হেবি গো দেবী আবারি ! বৰ কবিভাষর কগত চরাচর, সব শোভাষয় নেহারি ।

> ছব্দে উট্টছে ওজনা, ছব্দে কনক বুৰি উদিছে, ছব্দে ৰগ-মধ্ব চলিছে :

অগন্ত কবিতা তারকা দরে।

এ কবিতার যাকারে ভূমি কে লো দেবি.

আলোকে আলে। জীধারি ; আমি বসং আকুল, বনে ধনে এ কি ও গীত গাহিছে,

ত্বল কহিছে প্রাণের কাহিনী :

ৰূপ কাৰ্ছে আগোৰ কাৰ্যনা

মৰ রাগ রাগিণী উছাসিছে,

এ সানক্ষে স্থান্ধ, গীত গাহে, যোর ভদয় সব স্থারি : ভূমিই কি দেবি ভাষতী, কুশান্তদে স্বন্ধ স্থানি ভূটালে,

উব: ভাদিলে প্রাণের **ভারারে** ;

প্রকৃতির রাবিশী শিখাইলে :

ভূমি ধক গো,

হব' ভিয়কাল চরণ ধরি তোলারি (

সরস্করী। – দীনহীন বালিকার গাছে,

এদেছিত্ব ঘোর বনমানে,

পলাতে গাবণে তোর বন,— কেন বংগ, গোন, ভাষা শোন !

আমি বীশাশ্যমি, ভোৱে এমেছি শিশতে সান,

ভোর সামে গ'লে যাবে করত পাছাব-প্রাব।
বে বাসিবী ভানে ভোর স'লেছে তারার হন.

লে রাগিনী জোরি কঠে বাধিবে রে অহমণ ।

শ্বীর হইয়া সিন্ধু কামিবে চরণ-তাবে,

চারি দিকে দিক্-বধ্ আকুন নয়ন-জনে।

ৰাধার উপরে তোর কাদিবে বহল ভাগা,

অশনি গলিয়। সিয়া হইবে অঞ্চর ধারা।

বে করুণ রচে আর্কি ডুবিগ রে ও রগছ, শত-লোতে ভূই ভাহা চালিবি কগভয়া।

শক্তেছেত তুৰ ভাৰা লাগাৰ লগতন্ত্ৰ। বেধার হিৰালি আছে, বেধা তোর নাম রাবে,

বেধার ভাক্তী বাহে, ভোর কাব্য-লোভ ম'ৰে !

त्म मारूवी परित्वक चमूठ रुसर विद्या

প্ৰদান পৰিত করি নক্ত্ৰি উক্রিয়া :

ৰোৱ পদাসনতলে ৱহিবে শাসন ভোৱ.

মিত্য নৰ

নীতে সতত বহিবি ভোৱ |
বসি তোৱ পদত্তে কবি বাসকেরা যত,
তানি তোৱ কঠবর শিশিবে সমীত কত।
এই সে আনার যীদা, হিছু তোৱে উপহার,
বে গান গাহিতে সাধ, গ্রনিবে ইহার ভাই!

সমার

জাতীন্ধ-সংগীত।

বেহাগ।

মাপে চল্, মাপে চল্, তাই !
লড়ে বাকা পিছে, দ'রে বাকা নিছে,
বৈচে হ'রে কি বা কল, তাই ।
আগে চল্, অংলে চল্, তাই !
প্রতি নিমিবেই বেতেছে সময়,
নিমকন চেয়ে থাকা কিছু নর,
সমর স্থ্য ক'রে পাঁকিপুঁ বি থরে'
সম্য কোখা গাবি, বল্ ভাই ।
মাপে চল্, আপে চল্, তাই !
অতীতের মৃতি, তারি ম্বথ নিতি,
সভীয় ব্যের আঘোষদ,
(এ বে) স্পানের মুখ, প্রেছ ছলনা,
মার নাই ভাবে ক্রেয়েছন!

হুঃশ আছে কড, বিহ শত শঙ, জীধদের পৰে বংগ্রাম সভত,

চলিতে হুইবে পুরুষের মত হুৰত্নে বহিত্ৰা বল, ভাই। चारम हत , चारम हन् , छाडे ! হেৰ ৰাজী বায়, এয় গান পায়, बाकशाच भवाधित. এ আনন্দ করে, কে রয়েছে ঘরে, क्लाप करत्र स्वाधिन ।

दिश्व এ दश, हक्ष्ण नवद, यहाटदर्भवान् यानव-कृतव्,

বার। বলে আছে তার। বন্ধ নর, काक काक पिटक क्ल, खारे। আগে চলু , আগে চলু , জাই ।

গিছারে যে আছে ভারে ডেকে মাও, নিয়ে হাও সাথে করে,

কেহ নাহি খালে, একা চলে যাও

वरुष्कृत श्रेष श्रेष्ट्र ।

ণিডু হতে ডাকে ৰারার কাবন,

ছিঁছে চলে যাও মোহের বাধন,

নাৰিতে হট্যে প্ৰানের নাৰন--

पिष्ट सहस्त्र कन, छाँहै।

वार्त्त हन्, वार्त्त हन्, छाँहै।

हित्र पिन व्यक्ति दिवातीत वस्त्र

धर्मस्य प्रदेश विश्वातीत वस्त्र

धर्मस्य प्रदेश विश्वातीत वस्त्र

धर्मस्य प्रदेश व्यक्ति हिल्लाम् ।

धृतिनशा हाड़ि दें दें त्रे तर्द्यः

श्वास्त्र तास्त्र स्थाप प्रिष्ट हर्द्यः

ध्री यदि या श्रीतः हिस्स स्थ्य छर्द्यः

ध्री यदि या श्रीतः हिस्स स्थ्य छर्द्यः

ध्री व्यक्ति ह्याह्य ह्याह्यः छोहै।

थाम हत्, बाल हत्, कांह ।

সিজু : (ভৰু) পাৰিমে সঁপিতে প্ৰাণ ।

পলে পৰে ৰব্ৰি. বে ও তলে, সহি পলে পদে অপন্যৰ !

আপনারে ভগু বড় বলে জানি.

করি হাসহোসি, করি কানাকানি,

কোটরে হাজর ছোট ছোট প্রাণী, ধরা করি দর। আন । অবংধ আনছে করি বরের কোণে ভা'বে ভা'বে করি রুগ।

মাণনার জনে বাধা দিতে কমে, তার বেলা আগরণ :

স্থাপনার সোধে পরে করি লোখী. আনন্দে সবার বারে ছড়াই মসী,

(হেখা) আগন কলক উঠেছে উজ্বি, রাশিবার নাহি স্থান।

(बिर्द्ध) कथात बाधुनी काहनीत लाला हार्य नाहे कारता मीड.

মাধ্যেকৰ আৰু নিধ্যেদ্যৰ আলা ৰ'তে ব'তে মত শিৱ। কাদিতে সেহাল হি ভি ও কি লাজ.

सगालत मारव लिथाजीव नास.

ব্যাপনি করিনে অপেনার কাম, পরের পরে অভিযান। (চি চি) পরের কাচে অভিযান।

(ওলো) আপনি মানাও কল্বর প্রবা, বেও না প্রের বার :

পরের পায়ে ধরে' যান ভিক্স কর।, সকল ভিক্সার দার ।

মতে লাভ ব'লে পত্রের পিছ পিছ কাসিয়ে বেড়ালে মেলে না ও কিছু,

(ৰবি) নাম পেতে চাও, প্ৰাণ পেতে চাও, প্ৰাণ আগে কৰু লবি :

রাগিন্দ প্রভাতী।

এ কি শন্তকার এ ভারত-ভূমি.

ৰুকি, পিতা, ভাবে ছেড়ে গেছ ভূমি,

প্রতি গলে গলে, ভূবে রসাতদে,

কে ভাৱে উদ্ধার করিকে ৷

চারিদিকে চাই নাহি হেরি হতি, নাহি ৰে মাশ্ৰয় স্বস্থাৰ মতি, चाकि अ चौंशास्त्र विश्वन-शांधादर কাছার চরণ ধরিবে ! তুমি চাও, শিতা, মুচাও এ ছুখ, অভাগ। দেবেয়ে হয়ে; না বিষ্ধ, মহিলে শীধারে বিপদ-পাবারে কাহার চরণ ধরিবে !

বেখে চেয়ে খব সংল সম্ভান. লালে নত শিৱ, তত্তে কম্পানান,

কারিছে সহিছে শত অপসান

লাক বান আর থাকে না।

বীনতা লয়েছে মাৰায় তুলিয়ঃ, ভোমারেও ভাই শিয়াছে ভূলিয়া,

হয়াময় হলে আ*ৰু*ল ভ্ৰুৱে

তোৰাবৈও তারা ভাকে না ্

তুৰি চাও, পিডা, ভূমি চাও চাও,

এ বীনতা, পাপ, এ ছঃধ বৃচাও,

ন্নাটের কনৰ মুহাও মুহাও, নহিলে এ দেশ থাকে না।

তুমি যবে ছিলে এ পুণ্যাত্তবনে, কি লোৱত তুখা ৰহিত প্ৰনে, কি আনন্দ গান উঠিত গগনে,

কি প্রতিভা-খ্যোতি অলিভ ৷

ভারত-অর্ণ্যে শ্লবিষ্টের গবি অনন্ত স্বানে করিত প্রয়াণ,

কোলারে চারিয়ঃ পুণ্যপথ দিয়া। সকলে বিলিয়া চলিক !

শালি কি হবেছে, চাও পিতা, চাও,

এ ভাপ, এ লাপ, এ ছঃৰ ঘুচাও

শোর। ত ররেছি তোমারি **দভান,**

যদিও ব্রেছি পতিত।

হাস্বিয় -- তাল কের্তা ।

আৰম্মনি কাগাও গগনে ! কে আছু কাশিয়া পুরণে চাহিছা,

वन, डेंड डेंड नवरन, पछोद निजा पर्यरन ।

দেশ, ভিনিত্র রক্ষনী বাব ওই, হাসে উহা নব জ্যোতিকাঁইী,

नव चानाच, नव चीवान,

সূচ কৃষ্যে মধুর প্রনে ; দিহপ্**কক্জন**ে।

ছেছ, আশার আনোকে জাগে ভকতার। উদয় মচল পথে, কিয়ণ-কিবীটে তরুণ ভগম উঠিছে অরুণ-য়থে।

চল ষাই কাল্ডে, যানৰ-স্**যাজে**,

চল বাহিরিয়া **লগতে**র **দাবে**

বেকো না মগন শহনে, ধেকো না মদন কপৰে ! ব্যুব লাক আস, আৰল বিবাস, কুহক মোহ বাঃ ।

🗟 পুর হয় লোক সংশয় হুংখ বপন প্রায় :

ফেল জীৰ্ণ চীয়, পয় মৰ নাজ,

चातस चंद भीरानंत कांट. नदन प्रदेश भागक परन, चरण चहेन सीवरन १

কাৰ্কি।

কেন চেয়ে আছে গো বা, মুগগানে ! এখা চাহে লা ভোমারে চাহে লা বে.

লাপন মায়েবে নাকি লামে 🏴

এরা তেইবার কিছু প্রেয়ে না ছেবে না, বিখ্যা কৰে কৰু কত কি ভানে ! ভূমি ত দিতেছ মা, যা আছে ভোমাত্রি, বর্ণ শক্ত তব, লাহুবীবারি,

জান ৰ্থ কত পুণ্য-কাহিনী ; এর। কি লেখে ডোরে, কিচ নঃ কিছু দা,

দিখ্যা কৰে গুৰু হীন প্ৰাণে। यस्यत (वर्षना वर्ष मा. यस.

নয়ন-বারি নিবার' নয়নে, मुख जुका ७ भा, धृत्रिभग्रदन,

ভবে থাক হত হীন সম্ভাবে। প্রপানে চেয়ে প্রাহর গণি দণি,

त्वथ, काट्डे कि ना मौर्च इकनी.

s:च चामारा कि स्टब्सनमें।.

पारात

নিৰ্থম চেত্ৰাহীৰ পাৰাশে দ

সি**ন্ধু**—কৃণ্ডয়ালি।

্যোলো না গাহিতে যোগো না ! कर् राजि (बना, क्षारपारवार राजा,

এ কি ৩৭ বিছে কথা, ছলনা !

এ বি

43 নরবের জল, হতাবের খাস,

কলকের কথা, দহিত্রের আশ, বুৰুফাটা ছবে, অমরিছে বুকে,

य (र গতীর দর্শ কেন্দা।

ভগু হাসি খেলা, প্রযোধের খেলা, এ কি **७५ मिट्ट क्था, इ**लमा ।

এমেছি কি বেখা বশের কাঙালি,

ছখা গেঁখে গেঁখে নিতে করতালি**.** মিছে কথা কৰে, সিছে ৰূপ লয়ে,

বিছে কাছে দিলি যাগনা।

কে আগিবে আজ, কে করিবে কান্ধ,

কে বুচাতে চাহে খননীয় লাজ. কাডবে কাদিবে, মাবের পান্তে দিবে,

দকল আপের কারন।।

ওবু হাসি খেলা, প্রমোদের মেলা,

গুণু নিছে কৰা, হলনা !

ভৈরবী--রপক ।

चांकून नगरनद नीरद ∻

কে এবে বাহ কিবে ভিবে.

কে হথা স্থানাকরে, চাহিছে মুখপরে ? সে বে স্থানার স্বলনী রে !

কাহার প্রাময়ী বাণ্ডী,

নিলার জনালর নানি গ কাহার ভাবা হার, ভূনিতে সবে চার গ দে যে আযার জননা তে:

ores also accides,

ক্ষনেক যেহকোল ছাড়ি' চিনিতে আরু মাধি পাছি।

আপন সম্ভান কবিটো অপ্যান,--

दम दम कांगांत करती दर !

বিৱল কৃটিংগ কিবর,

কে বদে' স্কোইয়া অর গ

দে কেহ-উপহাৰ.

ত্তে না সূথে আর ।

নে ৰে সাবাহ কৰনী ৱে :

বি বিট—একডালা।

একবার ভোৱা

বংগিছা ভাক্,

বংগিজনের অবণ কুড়াক্,

হিবানিপাবাণ কেনে গলে বাক্,

মুব কুলে আজি চাব বে !

দাড়া দেৰি ভোৱা আত্মণত ভূলি, নদৰে সময়ে চুটুক্ বিজ্লি, গুডান্ড-সগনে কোটি দিব ভূলি, নিউৱে আছি গাল বে।

বিশ কোটি কঠে মা বলে ভাকিলে, রোষাঞ্চ উঠিকে অমন্ত মিনিলে, বিশ কোটি হেলে মানেরে যেরিলে, দশ্যিক স্থান হাসিবে।

লে দিশ প্রভাতে নৃতন তপন, নৃতন জীবন করিবে বগন, এ নহে কাহিনী, এ নহে বপন, আসিবে সে দিশ আসিবে। আপনার বাবে বা বলে ডাকিলের আপনার ভারে জহরে রাখিলে, সৰ পাপতাপ দূরে হার চকে. সুদা প্রেবের বাদালে !

সেখার বিরাজে হেব-জনীর্কান, না থাকে কলক, না থাকে বিবাহ, যুচে জপমান, জেগে ভাঠে গ্রাণ, বিহল গুভিতা বিকাশে :

बायअमारी छ्व।

আবরা নিলেছি **মান** নায়ের ছাকে ! মনের কমে পরের মতন ভাই ভেড়ে ভাই ক'দিন মাকে !

আবের যাবে থেকে থেকে, আৰু বলে গুই ডেকেন্ডে কে ! গভীর করে উদাস করে,

লার কে কারে ধ'রে রাধে <u>:</u>

ৰেশ্যৰ পাকি বে বেশ্যনে, बैक्त चारह खोल खाल, क्षारवड वेहन क्षेत्र काल. आदित (नमन कांद्रन ना दक !

ৰুত দিনের সাধন দলে,

বাৰ প্ৰথমান পেছে মূচে,

मजामात्र जन ८५८६ वृत्हः, মবীন খালে রহর ভাবে,

ভাইৰের পাশে ভাইকে লেখে :

বিলেছি পাল দলে দলে, খরের ছেলে স্বাই নিলে

দেখা দিয়ে আয় রে বাকে !

হামির—একভালা।

कमनीय गाउर माकि धरे

क्षम (शा शंका बारक ।

থেকো না থেকো না, খনে ভাই, वर्गन विश्वा कारण (পৰ্য্য করিয়া আনি,

थर (ता पृक्तार धानि,

রতন-প্রদীপ ধানি,

বতনে দান গো দালি,

ভয়ি লয়ে চুই পাশি

বহি খান সুদ-ভাবি,

মা'র আহ্বান বাবী রটাও ভূবন মাধে :

লননীর বারে আলি ওই

उस (वी भेषा वीरक)

আজি একর প্রমে,

नवीय भीरम दृष्टिए !

সাধি একুল কুছনে,

তব **স্থান্ধ ভুটা**ছে।

দাভি উজ্জ্ঞ ভাবে,

জোন উন্নত বাবা,

मय अभीच-कारम,

ৰাঞ্বতীয় পাথা,

প্র বালা কথালে.

নৰ পছৰ গাঁখে।.

গুড় সুকার কার্টেল,

বাজ সাক নৰ বাকে '

कननीय चारव जाकि ७३

क्षमें दश नाम रहिन ।

ভৈর্বী ।

অন্তি ভূবনমনোযোহিনী।
আনি নিৰ্মান স্থাকে বােজ্যা বর্ধী
কান-কননী-জননী।
নীল-সিভু-জন-বেলিত চরণজন,
আমল-বিকম্পিত খ্যামল অঞ্জা,
অহুত-চুম্বিত ভাল হিছাচল,
গুল-ভূমার-কিরিটিনী।
গ্রেধন প্রভাত উল্লেখন ব্যামন্ত্রিত তব বনভব্যে,
আমন্ত্রিক ত ভাবা্লাহিনী।

চিরখন্যাৎস্থী ভূমি **গছ,** দেশ নিদেশে বিতরিছ অর, আছবী বৃদ্ধা বিগলিত করুণা, পুণাপীযুদ-অক্তথাহিনী। নববংশির পান।

হে ভাৰত, **সাভি** নবীন বৰ্ণে,

শুন এ ক্ষিত্র গান !— ভোষার চরণে নধীন হর্মে

এনেছি পুজার দলে !

এনেছি যোগের সেকের শক্তি. এনেছি বোগের মনের তক্তি,

এনেছি লোদের ধর্মের মতি.

এনেছি হোদের <u>আ</u>ৰু I

बदनकि स्वरस्य (वर्ष वर्ष)

ছোনাতে করিছে দান ।

কাৰন-থালি নাহি আআদেহ, অগু নাহিক মুটে গু

বা পাছে গোলের, এনেছি সালায়ে নবীন পর্বস্থাই। সমারোহে আৰু নাহি প্রয়োজন, দীনের এ পৃথা, গীন ভালোজন, চিবলারিটা করিব যোচন,

ठबरभंब धृता लूरहे १

ত্বর-মূর্বত জোমার ক্রেশার লইব পর্যপুটে।

রাখ। তুমি নহ. হে হহাতাপদ.

ভূমিই কানের প্রিয় ! ভিকাভ্যণ কেলিয়া পরিব,

ভোষারি উপ্তরীর !

দৈক্তের সাকে আছে তব বন, সৌমের সাকে সংগ্রেছে গোপেন,

কোমার মঙ অধিবচন,

ভাই স্বামাদের বিহো।

পরের ককা ফেলিয়া পদ্ধিক.

ভোষার উন্তরীয় 🦠

্যাও সামালের সভয়মত্র,

কাৰ্শেকিমছ ভৰ।

ৰাও আবাদের অনুভবয়,

ाराङ (था जीवन स**र**्

ৰে শীবদ ছিল তৰ অপোৰনে,

स्य कीयम हिम छद स्राकामस्यः मुक्त सीक्ष हम महामीयस्य

চিন্ত ভবিন্না নব :

মৃত্যুতরুগ শকাবরণ হাও বে বয় ভব ে

হুৱট—চৌভাল।

এ ভারতে রাধ মিত্য প্রভু,

তৰ ওত **সাপি**ৰ্মাহ,

তেমার শতর,

তোমার **অধিক অসূত** বংশী,

তোমার স্থির **অমর আন**া ্

তোমার স্থির অধর আশা

चनिसीर धर्च-चारमा,

স্বাহ উৰ্ছে আলো আলো, সৃহটে ছুৰ্ফিনে হে,

রার ভারে শরণো জোনারি পরে।

ধকে বাধি দাও থার.

বর্গ তব নিবিদার.

নিঃশলৈ বেন স্কারে নিতীক।

পাপের নির্ধি লয়,

নির্ধি তবুও বর,

থাকে তব চরণে অটল বিবাবে!

বিশ্ৰ বিবিট—একডালা।

নৰ বংগ্ৰহে কন্মিলায় পণ্

नय चटमरभंत्र सीचा ;

ছব আশ্রমে, তোমার চরুপে, হে ভারত, লব শিক্ষা ।

হে ভারত, লব শিক্ষা । পরের ভূষণ, পরের বসম,

ट्यांचिर चाक गरत्र चनन,

यंति हरे तीम, मा बहेर हीम,

ছাড়িব পরের ভিকা ৷

মৰ ৰংগৱে কহিলাৰ পৰ,

नर करतत्त्व रीका ।

খাকে প্রাস্থান, আছে ত কুটার,
 কল্যাণে স্থপবিত্র।

বা খাকে নগর, আছে তব বন

ফলে স্থাবিতিত্র।

কোৰা বতে যত দূরে গেছি সরে' ভোষারে দেখেছি ভত ছোট করে' কাছে দেশি আঞ্চ কে হুদ্যরাক,

ভূমি সুয়াভন নিজ ৷ হে ভাগন, তব পৰ্বক্ৰীয়

কল্যাণে স্থপবিত্র !

শরের বাছে) তব পর ধ্যে

সিয়েছি গেঙাছি শব্দা !

জোমারে ভূসিতে ফিরামেছি মুখ. পরেছি পরের স**ল্লা** <u>৷</u>

किছু नादि गंगि' किছু नादि करि'

লগিছ বন্ধ অভাবে নহি'.

তৰ সমাতৰ বাংনের আসন

বোদের শহিনকা !

পৰের বৃদ্ধিতে, কোমারে ভূদিতে হিয়েছি পেরেছি ক্**লা**।

নে গকন নাম, কেরাধিব আরু,

লইব তোমার **হীকা** :

তৰ প্ৰভা**লে, ৰ**দিয়া বিশ্বৰে,

বিবিত ভোষার বিকা

তোদাহ ংখ, ভোদার কর্ম,

তৰ মনোৰ গভীৰ মৰ্থ

স্ট্র পুলিয়া সকল জুলিয়া, ছাড়িয়া পরের ভিক্ষা।

ভৰ পৌরুকে পরব মানিব.

লইব হোৰার দীকা :

বাউল।

দাৰ্থক জন্ম।

ेठ वरी ।

ৰাৰ্থক মন্দ্ৰ আবাহ,

দার্ঘতি এই মেশে :

नार्बक भगव या ८गाः

ভোমার ভালবেলে।

আদিদে তোর ধন রতন,

আহে কি ■ রাণীর মতন, ঋগু আমি আমার অদ কুজার

ভোখার ছারার **এ**লে।

Column State and a

কোন্ ৰমেতে কানিনে সূল

গছে এমন করে **আকুল,**

কোন্ৰবাদে ওঠেৰে টাদ

এখন হাসি **হেলে** !

পাঁথি মেলে ভোষার আংলা.

প্ৰথম আনার চোপ ভ্ডাকো. ঐ আলোতেই সমন বেৰে

भूगृय मेशन (नाट ।

পথের গান।

ৰামকেনী— এক ভালা ।

ক্ষামতা গৰে পৰে যাৰ বাবে সাকৈ, ভোষাত্ৰ লাম কেলে ফিলিব ছাত্ৰ ছ'বে : বৰ্ব, "ক্ষনীকে কে দিবি দাস, কে দিবি ধন ভোৱা, কে দিবি প্ৰাণ—"

(তোৰেয়) মা ডেকেচে, কৰ বাবে আছে। তোৰাহ নামে আপের সকল সুর,

টঠ্বে আপনি বেজে ভূখা-সমূর—

(মোদের) ক্ষর ষয়েরই ভারে ভারে। বেলা গেলে শেবে তোলারি পাতে,

এনে দেব প্ৰান্ত পূৰা কুড়ায়ে, তোমার) সন্ধানেরি দান ভারে ভারে !

জোনরে বাংলা।

ব্যাইনের হুদ

শাষার সোনার বাংলঃ, পারি তোষার ভালধানি। চির্বিদ তোশার পাঝাশ, তোষার বাভান, শাষার প্রাশে ব্যক্ষার বাণী॥ ও মা, কাগুনে তোর আমের যদে জাবে পাপল করে. (যত্তি হায় হায় রে)—

অয়াণে ভোর ভরা কেতে. W TO কি হেংগছি মধুর বাসি ঃ

কি শোভা কি ছায়। গো.

কি সেহ কি মাছা গো.

কি আঁচল বিহায়েছ বটের মূলে.

नमीत कृरण कृरण ।

মা, তোর স্থাত বাণী আলার কালে

লাবে স্থধার বত্ত, (সন্থি কায়-ছাত্ত কে)---হা, তোর বদমধানি দলিন হ'লে,

আমি নয়ন্ত্ৰে ভাগি ।

তোদার এই বেলাঘরে,

শিশুকার কাটিব রে.

ষোধারি ব্লামাট অলে যাখি

१७ कीयन शनि।

দিন কুরালে স্ফ্রাকারে

কি দীপ আলিন্ দরে, (মন্ত্রি হার হার রে 📜

তথ্য খেলাগুলা মুকল ফেলে,

ভোষার কোলে ছুটে সামি।

হেন্দ্-চরা ভোষার মাঠে.

পালে বাবার শেরামাটে,

সাৰাদিন পাৰি-ভাগ। ছাহতে চাক। ভোষার পরিখাটে,—

ভোষার খাদে-ভরঃ আভিনাতে

ৰীৰনের হিন্দ কাঠে, (মরি কর হার রে)—

ও ৰা, আবার ধে তাই তালা স্বাই, তোমার লাখাল তোমার চামী ॥

৬ খা, ভোগ চৰণেতে,

হিলেৰ এই নাৰা পেতে,

হে গো তৌদ্ধ পারের খুলো, সে বে আবাহ

যাৰার বাশিক হবে :

ও খা, গরীবের ধন বা আছে তাই

দিব চন্ত্ৰণ-তলে, (দরি ছার হাম রে)—

হ্মামি পরের বরে কিন্ধ না তোরে ভূষণ মনে' স্বার কাঁদি ॥

দেশের মাটি।

া বাইলের প্রথ (

ও আবার বেশের যার্টি,

জোমার 'পরে ঠেকাই বাখা।

ट्यानसङ विश्वमतीयः

(জোমাতে বিশ্বসায়ের)

ৰীচন বাতা !

ভূবি ্যিশেছ লোৱ হেছের সমে, ভূমি িমিলেছ মোর প্রাণে মনে,

ভোষার ঐ প্রায়লবরণ কোমসর্ভি

मार्च गेंग्या---

তোদার কোলে ক্রম লামার, বরণ ভোষার বুকে ;

তোষার 'পরেই বেলা ভাষার,

इश्रम स्राम्।

ভূষি चन्न मूर्य कूरन मिरन,

ভূৰি শীক্ষ দলে ভূড়াইলে,

ডুৰি ৰে। সকল-সহা সকল-বহা

ৰাভার নাভ।

খনেৰ ভোষার খেষেছি খে৷

चरतक मिलाहि वा,

লানিলে থে কি বা ভোষায় ন্তবু, দিভেছি বাং

দনৰ পেল বিছে ফালে. चौसोत्र লাবি কাটাছ দিন ব্যৱর বাবে:

র্থা আমার শক্তি দিলে শক্তিয়াতা ! ७ मा.

বিধা।

বেছাল-একটাকী।

वृक (बेर्स कुट माम्रा समित

বাবে বাবে হেলিস্নে, তাই !

গুৰু ভূই ভেবে ভেবেই

হাতের লক্ষী ঠেলিস্বেন, ভাই 🕫

একটা কিছু করেনে ঠিক,

ভেবে কেরা হরার অধিক,

বাবেক এ দিকু বাবেক ও দিকু

এ খেলা আৰু খেলিস্বে, ভাই !

ৰেলে কি না কেলে রতন, কৰুতে ভৰু হবে ৰঙন,

না দদি হয় মনের মতন,

চোবের জনটা ফেলিম্নে, ভাই !

ভাুনাতে হয় ভাষা ভেনা, করিস্থে ভার হেলাকেলা, পেছিরে বৰদ যাবে বেলা,

তৰদ জাৰি খেলিস্তে, ভাই ্

व्यक्षयः (

ভূপালি—একটালা ।

আমি ভয় কর্ব না, ভয় কর্ব না।

হু বেলা বরার আকে.

मञ्द ना, धारे, मङ्ग मा !

ভবিশানঃ ৰাইতে গেলে, হাকে হাকে ভূকান মেলে;

তাই বলে, বাদ ছেড়ে দিয়ে

কাছাকাটি বছুব বা।

58

শব্দ বা ভাই দাধ্যে হবে, মাৰা ভূদে রইব ভবে,

নহল পৰে চল্ব তেবে

পাঁকের গৈলে গড়্ব না। বৰ্ণ আমার মাধায় রেখে :

চৰ্ব সিধে হাণ্ডা হেৰে.

বিপদ্যদি একে পড়ে যরের কোনে সমুব না ্

रुदवर सदय।

্বাইরের হুর ১

নিশিমিন ভর্গা রাধিন্ . থয়ে মন হবেই হবে :

वित त्र करत्र शक्तिन्,

সে পণ কোষার রবেই ববে।

ভাৱে মন হাবেই হবে ! পাহাণ সমাল আছে পড়ে'

ब्यान श्रास्त्र (न डेर्स्ट्स फाउ.

মাহে বারা বোবার বতন,

काञ्चाक कथा करवष्टे करव । श्रात यन दर्शि दर्श ।

भवत हरना, जयब हरना,

বে বার স্বাপন বোকা ভোকো;

ভূঃৰ বৰি মাৰায় ধৰিল্, দে দৃঃগ তোর সবেই সবে।

अद्र यन रावरे स्वा

ঘটা ৰগৰ উঠ্বে বেজে,

দেগ্ৰি সৰাই আস্থে সে**লে** ;

এক সাৰে সৰ যাত্ৰী বড

अकड़े ब्राप्ता महपड़े गरंव। श्रास मन कर वर्षे करत !

বান ৷

। বারি পরবর হয় 🤈

এবার ভোর যর। গাঙে যান এগেছে, ৰয় মা বলে ভাসা ভয়ী :

ভাষে রে ভারে মানি, কোণার ফানি, ঞাণগণে তাই, ডাক হে আজি ; ভোৱা নৰাই মিলে বৈঠা ৰে বে, শুনে কেন্দু সম দড়াদড়ি।

দিনে দিনে বাড্ৰ বেদা,

থা ভাই, কর্লি নে বেচঃ কেলা,

হাতে নাইবে কড়া কড়ি ।

বাচে বাধা দিন গেলরে,

কুধ হেখাবি কেহন করে,—

থার হে খুলে দে, পাল ভুলে হে,

কা বহু হবু বাচি সরি ।

山村[

(गरितम् एम)

ৰবি ভৌৰ ভাক গুৰু কেই মা আৰে, গুৰুৰ এক্সা চল রে ! এক্সা চল, এক্সা চল, এক্সা চল রে ! ববি ভেউ কথা বা কয়—

(মরে ৬রে ও মতাগা [)

ৰখি দ্বাই ৰাকে দুখ কিয়াৰে, দ্বাই কৰে ভয়— ভবে প্ৰাশ ধূলে, ও চুই মুখ সূচে তোৱ কৰেৰ কৰা, এক্লা বক বে !

ৰ্দি স্বাই কিরে বার—
(ওরে ওরে ও অভাবা !)
বিদি সহম পথে হারার কালে
কেন্ট কিরে না চার—
ভবে পথের কাটা,
ও ভূই বক্তবাধা চরণতলে

এক্লা ইল বে !

বলি আলো বা বার --(গুরে গুরে গু জ্বাগা !)
বলি বড় বাদলে জীধার রাতে
হুরাই স্বের বার—তবে ক্লানলে,
আপন বুকের গাঁজর জালিরে নিয়ে

ক্র্ণা শ্বদ রে !

বৰি ভোৱ ভাক ভনে কেট না মালে, ভাৰে একুলা চদ গ্লেঃ একুলা চল, একুলা চল, একুলা চল বেঃ

মাভূমূর্টি।

विवास-अवकारां :

আজি বাংলাদেশের হৃদ্য হতে
কথন্ আপনি,
ভূমি এই অপ্রপ্ত রূপে আছির
হ'তে কম্মী !

ভগো বা— ভোৰায় হৈথে দেখে আঁখি না ফিবে !

ভোষার হুৱার আজি পুনে গেছে গোলার বন্ধিয়ে !

> ভান হাতে ভার বড়গ অনে, বা হাত করে শকাহরশ,

ছুই দয়নে গেতেব হাসি, স্বাট-বেক আগ্রন বরণ (श्रामा हा---

জোমার কি বুরতি আজি হেপিরে !

তোমার বুৱাৰ আজি খুলে গেছে

লোদার বন্ধিরে গ্

ভোনার ব্জকেশের পুঞ্জ মেবে পুঞ্জর অবনি,

ভোষার খাঁচল বলে আকাশতনে,

রৌত্র-বদনী !

প্রশোমা—

ভোষার দেখে দেবে জাবি মা কিরে !

ভোৰার স্থাত শালি খুলে বেছে

শোনার মন্তিরে।

वयन जनामदा हार्रेन पूरम.

ভেবেছিলের হুঃখিনী মা !

শাহে ভারাব্যে একুল্য পড়ে.

হংগের বৃঝি নাইকো দীয়া <u>!</u>

কোৰা সে তোঃ সন্তিত্ব বেশ,

কোণ্য দে তোর বলিন হাসি :

ৰাকাশে ৰাঞ্চ হড়িয়ে শেল,

ঐ চয়পের দীবিকাশি :

ধ্বৰো ৰা—

ভোষার কি মূবতি আজি বেখিরে 🖠

স্থাবের রাতে, স্থাবের শ্রোতে, থাছি

ভাষাও ধরণী।

তোষার অভয় বাজে হদর্যাথে, হণর-বর্ণী গু

ওগো মা—

তোৰাছ দেখে হেখে অ'থি না কিরে <u>!</u>

তোমার হুয়ার আজি পুনে পেছে সোদার বলিরে <u>।</u>

বাউদ।

(>)

ৰে ভোৰার হাড়ে হাড়ুক,

আৰি ভোনায় ছাড়্ব না, বা إ वानि ভোমার চরণ কর্ব শরণ,

শাল কাজো ধার ধার্ব মা, মা।

কে বলে ভোর দক্তির হত, হৰৰে তোর রতম রালি. বানি গে তোর বৃদ্য বানি,

भरतंत्र भारतं काञ्च मा, मा १

ব্যাসি ভোষায় হাড়্ব না, যঃ !

वारनद काल जन विश्वत.

বে বলে বে বরুকু পুরে, ভোষার হেঁড়া কাবা খাছে গাজা--

ভূৰতে সে যে পাৰ্ব না, যা।

ব্যামি ভোষার হাড়্ব মান্য। !

श्राम शास्त्र होत्म,

ভূলিয়ে নিজে চার বে আবায়→ ধ্বমা, শুরু বে জাগে শিবর বারে,

কারো কাছেই হার্ব না, বা ।

আৰি তোষায় হাড়্ব না, না :

()

ৰে তোৱে পাগল বলে,

ভাবে ভূই বলিস্মে কিছু !

আলুকে ভোৱে কেবন **ভে**বে,

चरत रव रखोड धृतना स्परन ;

কান বে প্রাতে, বালা হাতে, ন্দাস্যে রে জোড় পিছু পিছু !

चाक्टर चांशन बारनड घटर, থাকু লে বলে গরির পরে ; কাল্কে প্রেয়ে, আস্বে নেমে, क्तृत्व 🙉 कांत्र गांवा मीडू । (9) থকে ফোরা (नहें दा कथा वर्ता ! शास्त्रिय हात्वेव मध्य थारन, त्मरे जाशनि भन्ने ! শবিদ্ বিধ্যে বলে ককে, দেৰে কেবল ছাগে ভোকে: মাহর, নিরে অপেন যমের আঙ্ক, बरन यरनई व्यक्ति--ৰেই ভাগাদি পত্নী। মন্তবে ভোর ম্বাহে কি বে, त्वरे कोलि नित्य मित्य. না হয়, বাছগুলো বৰ বেখে,

> চুপেচাপেই চ≣ি— নেই ভাগালি পত্নী :

ভাষ থাকে ল বৰ্গে না কাল,
লাক থাকে ভ ব্চাপে লাক,
থার, কে যে ভোরে কি বংলছে,
নেই বা ভাকে টার—
নেই কাগালি পরী !

(৪)
বি ভোর ভাবনা থাকে,
কিরে বা না—
ভবে ভুই দিয়ে বা না !

ইছি ভোর ভয় থাকে ভ করি হানা।

বলি ভোর বুন জড়িরে থাকে গালে,

ক্ষা তোম প্ৰ আভ্যে বাবে গায়ে,
ভূল্ৰি যে পথ পাছে পাছে,
বৰি ভোৱা খাত কাপে ত নিবিৰে খালে।

বৃদ্ধি ভোর খাত কাপে ত নিবিরে আলো, স্বাহ কর্যি কানা !

স্বায় কর্ম কানা ! বিদি তোর হাড়্তে কিছু দা চাবে বন, কবিলু ভারী বোঝা আগদা,

অবে ভূই সইতে কভু পারিবিবেশ্র

তবে পূক্ স্থাতে কতুশারাবলেরে বিবৰ প্ৰের টালা : যদি ভোর আপন হতে অকারণে,
স্থা সদা না আমে মধ্যে,
ভবে কেবল তর্ক করে সকল কথা
কবিই দানা খানা !

(a)

আগমি অবশ হবি, তবে
বস হিবি তুই কাৰে !
উঠে হাড়া উঠে হাড়া,
ভেঙে পড়িস্ না বে !
করিস্মে লাজ, করিস্নে তর,
আপনাকে তুই করেনে কর,
স্বাই তথ্য সাড়া গেৰে,

সৰাহ তথন সাড়া গোৰে,
ভাক দিবি যায়ে !
বাহির হয়ি হলি পথে,

কিরিস্নে আর কোনো দতে, বেকে থেকে পিছনপানে

চাস্তে বারে বারে <u>†</u> নেই বে রে ভয় ত্রিসূবনে, ভয় গুলু ভোর দিজের কবে,

অভর চরণ শরণ করে, বাহির হবে বা'রে : (6) ছোনাকি. कि चूरन के कामा इंके (परनह ! ďξ चौधाय नारक, चटवय साटक, উল্লাবে প্ৰাণ চেলেছ ! षूमि মণ্ড ত হাৰ্য্য, মণ্ড ত চল্লা, ठाँहे बत्तहें कि कम सामन ! শাপন থীবন পূর্বকয়ে पृषि ৰাপদ আলো জেলছ ! তোৰার স্বাস্থাছে, তা তোৰার স্বাচ্ছে, नक्ष ह्या बनी कारतः कारक, ভূষি অ্রুবে বে শক্তি আছে, তোৰার ভারি আবেশ গেলেছ ! ভূমি শাঁব্যর বাবন ছাড়িয়ে ওঠ, ভূবি ছোট হয়ে নও গো ছোট,

ৰেধার মত আৰো, স্বায়

আপন তরে কেনেছ !

क्षेत्र क

मांजुग्रह् ।

(वाजिश्मव एव)

ৰা কি ভূই পরের বারে.

পাঠাবি ভোর মবের ছেলে ?

ভারা বে করে হেলা, থারে চেলা,

তিকাধূলি নেখতে গেলে।

ধ্ববেছি যাবা নাঁচু,

চলেছি বাহার পিছ,

वर्षि या दश्व (न किंहु व्यवद्दरक---

ভবু কি এখনি করে, কিবুব ওবে,

শাপন দায়ের **গ্রা**নাদ **ফেলে** ্

কিছু যোৱ নেই ক্ষতা,

লে যে যোৱ মিখ্যে কথা,

এখনো বহনি মধ্য শক্তিশেলে — আমাদের আগন শক্তি, আগন তক্তি,

চরণে ভোর দেব কেলে।

নেব গৌ যেগে গেছে, ধা আছে তোর বরেতে,

দে গো তোর খাঁচল পেতে চিয়কেলে-

ভাষাৰের কেইবেনে যান, কেইবেনে আগ. সেইখেনে দিই হুবর ফেলে !

প্রয়াস ।

(বটিক।

ভোৱ আগন কৰে ছাড্ৰে ভোৱে,
ভাবৰে ভাবৰ কলা চলুবে না।
ভোৱ আশালভা গড়ুবে ছিড়ে,
হয় ত রে কৰ ফক্বে না-ভাবৰে ভাবৰ কলা চলুবে না।

আদ্বে পথে আঁবার নেমে.
তাই বলেই কি রইবি থেছে,
ও ভূই বারে বারে আক্বি বাতি,
হর ত বাতি অক্বে না—
ভা বলৈ ভাবনা কৰা চল্পে না!

তৰে ভোৰাত মুখের বানী, আনুবে বিশ্বে বনেও প্রাণী,

```
হয় ত ভোষার আপন ববে
ক্তব
         পাৰাৰ ছিৱা গল্বে ন⊱—
         ভাবদা করা চল্বে মা 🖠
কা বলে
          বন্ধ ভ্যার দেখ্বি বলে,
          প্ৰদি কি ভুই আস্থি চলে,
         बारत चारत केम्एक शरप,
তোৱে
          হর ৩ হ্রার উলুবে না---
          ভাৰমা কলা চলুৰে মাণু
ভা বলে
              বিলাপা।
             ্বাউলের স্থায় ৷
विकि.
           চোধের বহল
           তেহাপুৰে খান্ন নাটে চু
          কটিন হয়ে খাকু না ওয়ে
এবার
              বৰু হুৱার পাঁট—
          रक पृश्व चीहि ।
লোবে
       পরাণটাকে পলিবে কেলে.
       দিশ্লেরে ভাই, পরেইাঞ্জের,
              विश्व चकार्य !
```

নিয়ে ভারে, চলুবি পারে, SCT কতই বাবা কাটি --পৰের কন্তই ৰাখ্য কাই : হেণ্কে ও ভোর কলের বার), যবে পরে হাস্বে হারা, ভারা চারদিকে— चारवरे निया कांत्र) कृष्टिश्, ভাষের ৰাহ না কি বৃক কাটি⊷ লাকে বাম না ফি বুক ফাটি। विरावत (यंगांत्र क्यंद मांद्रकः नवाँदे भवन स्वतः कारकः, আপন পরবে— भरवद बारत रावा मित्र. কোৱা कतिन् वीष्टीवीक्ष-কল্পিস প্রিটার্থাটি। কেবল

বাউল।

মনে মূপ মদিন মেখে পৰিস্নে—গুৱে ভাই, বাইরে মূপ জীগার মেখে টনিস্নে—গুৱে ভাই∤ বা ভোনার আছে যনে, নাথো ভাই পরাশ পশে, তথু ভাই দশ জনাতে বনিস্কো—ওরে ভাই ্

একই পথ আছে প্ৰৱে, চল পেই স্থান্ত। বন্ধে, যে আনে তাৰি পিছে চলিগলে—প্ৰৱে তাই চ

থাক না থাপন কাছে, বা পুনি বৰ্ক না থে, আ নিৰে সানেত থালার অলিন্দে—গুৱে ডাই ।

ব্ৰহ্মদঙ্গীত।

রাগিণী বেছাগ—তাল **বাঁপতাল**।

অন্তরে লাগিছ অন্তর্গমি !
তবু বদা হুরে এমিতেছি আমি ।
কংসার কুখ করেছি বরণ,
তবু তুমি বম শীষ্মকামী !
না কামিয়া পথ কমিতেছি পথে,
আগম গরুবে অনীম অপতে।
তবু বেহুনের ভাগে এবতারা,
তব ভত আমিষু আসিছে নামি !

রাগিণী দেশ—তাল আড়াঠেকা ৷

অনিমেদ আঁৰি সেই কে দেখেছে ! বে আঁৰি লগত গালে চেয়ে রয়েছে ! ববি শলী গ্ৰহ ভাৱা, হব বা ক দিশেহারা, সেই আঁথি গরে ভাৱা আঁপি রেখেছে ! ভৱানে আঁথারে কেন কাছিয়া বেড়াই, র্যন্ত-আকাশ পানে কেন না ভাকাই ! ক্রব-জ্যোতি বে সংগ্র, লাগে সেখা সহক্রণ, বংলারের বেবে যুখি বৃষ্টী চেকেছে !

রাধিণী স্মানাবরী—ভাল কাওরালি।

শ্বেক দিয়েছ নাথ,
কানায় থান্যা তবু পৃথিব বা ।
ধীন দশা বৃচিল দা, অঞ্চাতি বৃছিল মা—
বৃতীয় প্রাণের ভূষা নিটিল মা বিটিল মা ।
দিয়েছ বীষ্ণ মন, প্রাণাশ্রিয় পরিক্রন,
ক্রাতির স্থীয়েশ, নীস্কাল ক্ষর,
প্রাণাশ্রিণ গর্মী ।

এত বৰি দিলে সৰা, আহে। দিতে হৰে হে, ভোষাতে না পেলে আমি, কিমিৰ না কিচিব না।

রাগিশী ধুন-ভাল ঠুংরি :

লৱ বনে বেহ লালো, বৃত লমে *বেহ* প্রাণ । ভূবি করুণায়তসিমূ কর করুণা-তণা দান । শুক করে বন, কঠিদ প্রোধ্যর,

(क्षर-मनिन-भारत निकट सक नदीन।

খে তোষারে ভাবে না বে, ভারে ধূৰি ভাক ভাক, ভোষা হতে দ্বে বে বার, ভারে ধূৰি রাব' রাব'! ভূষিত বে কর কিছে, তব ক্থানাগর-ভীরে, ভূজাও ভাহারে বেহ-নীরে, ত্থা করাও বে পান! ভোষারে পোরেছিছ বে. কথন হারাম্থ অবলেন, কথন ত্রাইছ বে, আঁখার মেবি আঁখি মেলে! বিরম্ব আনাইব কার, সাক্ষা কে দিবে হার, বহব বহুথ চলে বার দেখিদি প্রোয-বহান,—

যাক্ত কেপারা—চৌভাল।

অসীম আকাৰে অগণা ফিবণ, কত এছ উপএই, কত চন্দ্ৰ তপন কিবিছে, বিচিত্ৰ আলোক আলাৱে, তুমি কোণাৰ—তুমি কোণাৰ ! হাৰ সকলি অৱকাত—চন্দ্ৰ, বুৰ্ণা, সকল কিবণ, আগাৰ নিবিল বিষদ্ধগত, ভোষাৰ প্ৰকাশ হল্ম মাৰ্কে সুস্থৰ যৌৰ নাথ, মনুষ্ব প্ৰেৰ-আলোকে, ভোষাৰি মানুষ্টী ভোষাৰে প্ৰকাশে!

রাগিণী কেদারা—ভাল আড়ার্চেকা।

আইন আজি আধনতা, দেব যে মিবিল হয়। আসন বিছাইন নিউখিনী গ্রম থলে, গ্রহতারা সভা ঘেতিয়া গাড়াইন। নীর্মে বনপিত্রি আকালে ছবিল চাহিয়া, ধানাইন ধরা দিবন কোনাইন।

কাহি—চৌভাল।

আছ অন্তরে চির্লিন, তবু কেন কামি !
তবু কেন হেরি না আেনার ক্যোতি,
কেন দিশাহাব্য অন্ধনারে !
অকুনের কুল কুমি অংলার,
তবু কেন ভেলে বাই বছবের পালালারে !
আনক্ষম বিভূ, ভূমি বাব বাবী,
লে কেন ভিয়ে পথে বাবে বারে ।

রাধিশী দাহানা-ভাল কাওয়ালি।

আৰু বুৰি আইন প্ৰিরতম, চরণে সকলে আকুৰ বৃট্ন । কত বিন পরে মন বাতিক গামে. পূর্ণ লাগন্ধ জাগিন আগে, ভাই বৰে ভাকি নবাবে, ভূতন সুবধুর প্রেবে ছাইল।

রাগিণী টোড়ি—ভাস কাঁপভাস।

আজি এনেছে ভাহারি খানীর্নাদ প্রভাত-কিরুপে।

প্ৰিয়া কর-প্রশ প্রেয়,

ধৰত্বী সুঠিছে ভাৰাবি চরণে ! স্থানন্দে অক্লবতা নোৱাইছে যাথা,

কুকুৰ কোটাইছে খত বয়পে :

আশা উল্লাসে চরাচর হাসে,

কি তর কি তর ছব তাপ নরংগ।

রাগিণী বাহার--ভাল ভেওরা।

আজি বহিছে বসর পরন স্থমক কোষারি ক্রথম হে ! কত আকুল প্রাণ আজি পাহিছে গান, চাহে ভোষারি পানে

শান্দে হে।

ৰৰে ভোৰার অংলোক ছালোক ভূলোকে পগন উৎস্ব-

व्यापरम—

চিয়-জ্যোতি পাইছে চন্দ্ৰ ভাগা, चौथि পাইছে বন্ধ হে।

তৰ মধুৰ-মুখ-ভাতি-বিহসিত প্ৰেম-বিকশিক অভাৱে— ৰুত কৰত ভাৰিছে, "নাখ, বাচি দিবশ বুধনী তব **সহ হে** !" উঠে সম্ভাবে প্ৰান্তৱে লোক লোকান্তৱে বলোগাখা কৰু ছলে কে. ঐ কৰ্মানৰ প্ৰাকু, ক্ষতবৰ্গৰ তথ পুৱ নামৰ সুনি বাৰো হে !

রাগিণী কর্ণাটী ধাহান্ত—তাল ফের্ডা।

আজি ৩ভ ছিনে, পিতার ভবনে, অমৃত-সদলে চল বাই---वन वन वन कारे। না কানি সেখা কত সুখ মিলিবে, আনম্বের নিকেলনে,— চৰ চৰ চৰ ভাই : মহোৎসবে ত্রিপুৰন মাভিল, কি আনন্দ উপলিল,—

চল চল চল তাই :

বেবলোকে উঠিয়াকে জন গান. नीव नदर अक्लाम,---

दम गत्न, जब बह !

বেলাবলী—চৌভাল।

শালি হেরি দংশার শন্তময় ।

মনুর পথম, বিষল কিয়প, মূল কম,

হণুধ বিহপকলক্ষনি ।

কোধা হতে বহিল সহলা প্রাণ্ডরা গ্রেমহিয়োল, শাহা,

হন্যকুত্ম উঠিল মূটি পুলক্তরে ।

শতি আন্তর্গা, কেই সবে লীমহীন কুত্র হ্লয়মাকে,

শ্বনীন ক্রতথানী বিয়াকে কুল্ব শোক্তম ।

ন্তে এই মানব-নীবন, বক্ত বিশ-ক্রগত,

ংল জীয় কোন, তিনি বছ বছ ।

রাপিণী যালকোষ—ভাল কাওয়ালি।

নিনরজনী কড অন্তর্গ উপনি বাহ অন্তর্গণনে !
পান করে রবি নশী অঞ্জনি ভরিয়া,
সদা দীপ্র রবে অক্সর জ্যোতি,
নিভা পূর্ণ ধরা জীবনে কিরণে !

च्यानम्बदाता वहिष्क भूवस्य.

বৰিয়া আছু কেন আপন নৰে. আৰ্থ-বিষয়ন কি কাৰণে গু চামিবিকে বেৰ চাহি হবছ ক্ৰসায়িত কুত্ৰ বুংৰ সৰ কুকু মানি, প্ৰেম ভবিদা নহ পুত্ৰ জীবনে !

রাগিশী হাষির—ভাল চৌভাল।

মানন্দ রুৱেছে বাগি ভূবনৈ ভোষার, ভূমি সদা নিকটে আছু বদে 🕆 ক্ষম অবাদ নীলাখনে হবি দলী ভারা, গাঁকিছে হে গুড় কিন্তুসালা। বিশ্বদ্যবিদ্যার ভোমার কেরে স্থাপে আকাপে, ভোৰার জ্যোন্ড প্রসাহিত ব্যোহে যোগে।

আমি দীন সন্তান আছি মেই তৰ আন্তয়ে,

তথ সেহ খুখ পালে চাফি চিম্বিল !

রাগিণী মহীশুরী ভরন—ভাল একভালা।

আনদ্ৰ-লোকে বছণাগোকে বিরাশ সত্য স্থলর (মহিৰা তব উত্তাসিত

ৰহাগপন বাবে।

বিশ্বস্থ মনিভূবণ ৰেষ্টিক চৰণে : প্রহতারক চল্রতগন ब्राक्न कठरदरभ, क्तिट्र शान, क्तिट्र पान, ক্ষম কিয়গে 🖠 **বরশী** পর করে নিঝ'র যোহন মধু লোভা, কুল পায়ৰ গীত গন্ধ ক্রমার বরগে গু बद्ध कीयन बक्को पिन, চিল্লুতন ধারা, করুণা তব অধিস্রাস भेनरम यत्रपः ! সেহ প্ৰেম দয়তিত কোংগ করে প্রাণ ; কত বাল্প কর ধর্মণ সন্তাপ হরপে 🛚

ৰগতে তথ কি নহোৎসৰ, ৰখন কৰে বিশ্ব, ্রীসন্সদ ভূষাপার নির্ভর পরণে।

রাগিণী ভেঁরো —তাল বাঁপেতাল।

স্থাবেও কর নার্কনা ! স্থাবাবেও ফেল, নাথ, অন্তের কথা। গৃহ ছেছে পথে এবে, বনে সাছি রাম বেলে, স্থামারো হৃদরে কর আসন রচনা।

জানি আমি, আমি তব বলিম সন্তাম, আগারেও ছিল্লে হবে পদত্রে দ্বাম :

আপনি ভূবেছি গাগে, কাদিতেছি ফলভাগে, ক্সন গো আমারো এই ক্সম-বেষন।

স্বাপিণী দেশ দিল্প-তাল একতালা।

আৰার বা আছে মানি সকল লিভে পারিনি ভোষারে নাথ গু

আৰার বাক্তঃ, আনার নাল প্রবাদ, কুব হুখ ভাবনা।

নাৰে রয়েছে সাধনণ কম্ব পত কত নত,

ভাই কেনে কিন্তি, তাই তোনারে না পাই,

থনে থেকে বায় ডাই হে, খনের বেছলা।

বায়া রেখেছি ভাগে কি পুৰ,

ভাহে কেনে মরি, ভাগে ছেবে মরি।

ভাই দিরে বদি ভোগারে পাই—

কেন ভা বিতে পারি মা।

মামার মাগতের সব ভোগারে হেব,

বিরে ভোগার কেন নাগন।

রাগিণী মূলভান—ভাল গ্রুকভালা।

মামার হ'কনার মিনে, পথ দেখার বলে,

গ্রুল প্রে প্র ভুলি হে।

সংশ্যে তাই ছবি হে :
ভোষার কাছে বাব এই ছিল সাং,
ভোষার বাবী গুনে মুচার প্রবাহ ;
কানের কাছে স্বাই করিছে বিবাহ—
শত বোকের সত যুদি হে :

নানা কৰার ছলে নানাত্ তুমি ধলে,

কাতর প্রাণে আমি ভোষার বৰন বাতি, আড়াল করে সবাই ইড়োর কাছাকাছি, वत्रीय शुना छाउँ मिदा चाहि, পাইনে চৰৰ-ধূলি হে :

শত তাগ ৰোৱ শত দিকে ধার,

चांगमा चांगमि विवास वांशात,

কারে সাধালিং, এ কি হব নাম, अका (र चरनक अणि (र (

भाषांत अक कत (कामांत (आम (रेटन,

এক পৰ সামায় দেখাও অবিচ্ছেদে, বাঁধার মাৰে পড়ে কত মরি কেঁদে,

চম্বৰেকে বহ ভূলি হে।

কার্তনের হুর : (আনাত) জনর-সৰ্জ-তীরে কে ভূমি বাড়ারে ৷

কাত্য প্রাণ ধার বাত্ বাড়ারে 🖠 🥫

(বৃহত্তে) উপলে ভরত চরণ পদ্ধের ভবে,

(ভাষা) ভরণ-কিমণ লয়ে ভাড়াকাড়ি কবে ৷

व्यक्तिक श्रम भाषात्र देवत्रम मा पारम,

কোমারে হেরিতে চার বাচে সমমে। (স্থা,) ঐ বেনেতে বাক ভূমি বেয়ে মা চলে,

(चार्षि) । सरा-भाषातप्र वेश कानि नगरन ।

বোধা হতে সাজি গ্রেমের পদন চুটেছে, (মানার) বাবে ভাল কড যেতে উঠেছে : ভূমি নাড়াও ভূমি বেলো মা— (মানার) শ্বরে ভারত সাজি মেটে উঠেছে !

রাগিণী বেহাগ—ভাল একভালা।

আমি জেনে ভানে তবু ভূবো আছি,
দিবস কাটে রবার হে—
আমি বেডে চাই ভব পর পানে,
কত বাধা পার পায় হে !
চারিছিকে কের বিরেছে কা'রা,
শত বাধার প্রতার হে,—
আমি ছাড়াতে চাবি, ছাতে না কেন পো,
ভূবারে রাবে মারার হে !

কান্স নেই এ খেগার হে— আমি ভূকে থাকি বঙ অবোরের হড, বেলা ব্যুং ডক্ত বার হে।

যাথ কেলে যাও, এ ভাবের কুখ,

হান তব বাজ কলা-পহনে,

হ্থানৰ আন' তাহ হে;—

নহনের জলে ভালারে আমারে,

কে জন লাও মুহামে হে!

প্রুক করে বাও ক্যম আমার,

থাকন পাড' সেধার হে,

ভূমি এন এন, নাথ হ'মে বন,

ভূমো না আর আমার হে।

রাখিণী রামকিরি--ভাল বাঁশিভাল।

শানি হীন অভি দীন—
ক্ষেত্ৰত বিধি নাথ মাধ হৈ, তথ ক্ষুণা-ৰণ ।
তব হেই শত বাবে, ভূবাইছে সংগালে,
ভাপিত ক্ষদি নাথে ক্ষিছে নিশি দিন ।
ক্ষেত্ৰ বা আছে, যিব তব কাছে,
ভোষাবি ও প্ৰেম দিব ভোষাবে—
চিম্নিদ তব কাছে, দুবিৰ লগত বাবে,
ভীবন ক্ষেত্ৰি ভোষাধ চন্ত্ৰভাৱ কীম ।

রাপিণী খট্—তাল একতালা।

অ'থার বন্ধনী পোহাল, কাত পুরিল পুনতে,
বিষল প্রভাত-কিরণে নিনিল হালোক হ্লোকে।
কাত নরন পুনিরা, ভংগ-হরার খুলিরা,
হেরিছে ব্যরনাথেরে, আগন হার-আবোকে!
প্রেম্যুখহানি ভারারি, গড়িছে ধরর আমনে,
কুমুন বিকণি উঠিছে, ননীয় হহিছে কামনে।
সুধীরে অ'াবার টুটিছে, ননীয় হহিছে কামনে।
সুধীরে অ'াবার টুটিছে, ননীয়ে হালিভা বালকে!
কাণ থে বিকে চাহিছে, লে নিকে বেকিছ চাহিয়া,
হেরি নে ক্নীম মাধুরী ভদর উঠিছে গাহিরা।
নবীন আলোকে ভাভিছে, ম্বীম আশার মাভিছে,
দ্বীম কীবন সভিয়া কয় কয় উঠে জিলোকে।

রাখিণী ইমৰ্ ভূপালি—ভাল কাৰ্যালি।

এ কি এ স্কার শোভা, কি বুখ হেরি এ ! আজি নোয় ঘরে আইল বল্য-নাথ, এোন-উৎস উধবিদ আজি ! ৰল হে প্ৰেৰ্থন, ভগৱের আমী, কি ধন ভোৰাতে দিব উপৰায় গু ভ্ৰম প্ৰাণ বহু বহু ভূমি, কি বলিব,

ৰাহা কিছু আছে মৰ, গকৰি গও হে নাৰ !

রাগিণী মিল্ল—ভাল ঝাঁপডাল।

ও কি সুসৰ-বিল্লোন বহিন, সালি প্ৰভাতে, লগত মান্তিন তার।

হ্বদয়-মধুকর ধাইছে দিশি দিশি পাগণ প্রার !

ৰৱৰ হলগ পৃশ্বাকি, সৰব পুলিয়াছে ভাকি,

শেই প্রতি-দ্বধা করিছে পান, পুরিয়া ঝাণ, সে দ্বধা করিছে দান,

সে সুবা অনিলে উ≮লি যাব !

রাগি**ণী পূর্ণ বড়জ—তাল একতালা**।

(এ কি) দাবণ্যে পূৰ্বপ্ৰাণ প্ৰাৰেশ হে,

मामक रमस जनाबंदर ।

বিকলিত গ্রীতি-কুত্র হে,

পুৰকিত চিত-কাননে ! কীবনদভা অবসভা তব চরণে । হরক-বীত উচ্চ্ বিত হে, কিরণ-মগন গগনে ! রাগিণী আসাবরি—ভাল চৌভাল । এখনো আধার রবেছে, হে নাব, এ প্রাণ দীন মলিন, চিত অধীর, সব প্রমন্থ ! চারি হিতে চারি পথ মাহি মাহি,

শান্তি কোন্য, কোনা আনন্ধ : কোনা ভাগহানী সিধানার বানি—

क्षमस्यव विव भावम ।

রাগিণী বাহার—ভাল ধাষার।

ত্রত আমন্ত কৰি উঠিত কোধার, কণতপুরবালী সূবে কোধার ধায় !

কোন্ অসূত ধনের পেরেছে সন্ধান, কোন্ স্থা করে পান !

কোনু আলোকে আঁধার সূরে যায় 🛚

রাগিশী সিদ্ধু—ভাল মধ্যমান।

এ প্ৰবাদে ধৰে কৈ হাৰ ! কে ববে এ সংগ্ৰে সকাপে শোকে ! হেখা কৈ তাৰিবে ভূখ ভয় সকটে, তেমন আপন কেহ নাহি এ প্ৰান্তৱে, বাৰ ৱে !

রাগিণী ইমন্—তাল আড়াঠেক। । এ মেত-মাবরণ গুলে লাও লাও হে ! স্থার মুখ তব দেখি নরন ভবি, রাও কার মাধে চাও হে ।

রানিণী মিশ্র বিভান-ভাল আভাঠেক।।

এবার ব্রেছি স্থা, এ কেলা কেবলি কেলা।

দানবলীবন লয়ে এ কেবলি অবংকলা।

ভোষারে মহিলে পার, স্চিবে না হাহাকার।

কি লিয়ে ভূলারে রাখ, কি বিরে ভাটাও বেলা।

বুধা হাসে বৰি পশী, রুখা খালে দিবলিপি।

সহলা পরাণ কাঁলে পুত্র হারি দিবিলিপি।

ভোষারে খুঁ জিতে এলে, কি লয়ে রাগছি শেহে,

কিবি লো কিলের লাগি, এ অসীম মহামেলা।

রাগিণী আনন্দরৈত্রহী—তাল কাওয়ালি।

अन (र पृश्यम्था :

अ व्यन पृथा-अव्याद कर पविज :

रिशांक करनी नवार कीवन व्यक्ति,

त्वथांक व्यक्ति नवार कीवन व्यक्ति,

त्वथांक व्यक्ति कर्मा, कर्मार क्यां,

अभादा साथ वरन कर्म केवभा,

तक्य देवरी क्यांस—

वृश्य कृष्य नवार व्यक्ति किया :

(पथांक स्वनीतिया, विषय विका,

विका पृश्यम्म देवा-विक्रिया !

नार क्या (क्यांमान, पृश्यम क्यांमा,

कृषाद साथ नथा, व्यक्ति व्यक्ति ।

नार क्या (क्यांमान, पृश्यम क्यांमा,

कृषाद साथ नथा, व्यक्तिमान ।

नार देवरी स्टम कृत—

তোমারে বর্গ করি জীবন-বিজ্ঞ।

রাগিণী হাস্বির—ভাল চৌভাল ৷

জনেছে সকলে কভা আংশ, বেশ চেরে।
বে প্রাণেশ, ভাকে সবে ঠা ভোমারে।
থস হে বাবে এস, কাছে এস,
ভোমার বিভিন্ন চারি ধারে।
উৎসবে বাতিব হে ভোমার লরে,
ভূবিব আলম্ব-শারবাবে।

রাগিণী আলাইয়া—ভাল কাওয়ালি।

ঐ পোহাইন ভিমির রাভি;
পূর্মপদনে রেখা দিল দব প্রভাতহটা;
ভীবনে, যৌবনে, হদরে বাহিরে
প্রকাশিন অভি অপরপ মধুর ভাতি।
কে পাঠানে এ তভদিন দিরা মারে,
হয় মহোরাসে ভাগাইশে চরাচর,
ভূমনন আশির্দার হরনিনে,
ভূমি প্রচার পূর্ববারভা—
ভূমি চির সাবের নাবী;

রাঞ্জি বিভাস--ভাগ চৌতাল।

ষঠ বঠরে—রিকরে প্রভাত ধরে বয় বে । বেল জাঁখি, কাবেঃ কাগো, থেক আ রে অচেকন । দকলেই তাঁর কাকে, ধাইল মগত বাবে,

লাগিল প্ৰস্থাত বাৰু, ভামু বাইল আকাণ-পৰে।

একে একে শান ব্যৱভাকিছেন বুঝি প্রভু—

একে একে মুমগুলি তাই সূটিয়া উঠিছে বনে।

গুল সে আহ্বনে-বাণী—ভাহ সেই বুংগানে— ভাছার আশিস্করে,

চল লে যাই সৰে তাঁর কালে !

कीर्छन ।

ধাৰে জীবন-বক্সড, ওচে সাধন-চ্চাডি ;
আমি মুৰ্যের কথা অন্তর ব্যথা কিছুই নাহি কৰ,
শুধু জীবন মন চরণে দিছ, বুবিয়া সহ সম !
আমি কি আর কব !

এই প্ৰায়ণৰ স্বট অতি কৰীক্ষয় হে.

चानि मीवरर यांच जनरत जरह दक्षमनुत्राचि चर !

ষ্মামি কি খার কর।

শ্বৰ হুৰ দৰ ভুক্ত করিছ, প্রিয় শব্রির হেং, कृषि निक्ष बारक रात्। मॉशिटव, कारा, माधार कृतिहा नव)

দাৰি কি পার কর ! অপরাধ ঘদি করে থাকি পদে, না কর বদি করা,

তৰে প্রাথশ্রিয়, দিহো হে দিয়ো খেলনঃ নব নব ৷

कबू (करना न। पूर्त –शिवनत्थरन एकटक निर्देश हजाते, ভূষি ছাড়া ভার কি আছে আমার, মৃত্যু-শাঁষার ভব !

শামি কি থার কৰ !

রাগিণী দেশকার—ভাল চৌভাল।

কামনা করি একাংস্ক.

হউক ব্যবিত মিশিল বিখে তথ শান্তি।

পাপভাপ হিংলা লোক,

শাসরে দক্ত লোক,

বৰুৰ আণী পাছ তুল,

সেই তৰ তাপিত-পর্গ অভয়-চর্গ-প্রান্তে গু

ভজন — তাল ঠুংরি।

কি করিলি সোহের ছলনে ! গুই তেরাগিয়া প্রবাদে ভ্রমিলি, পথ বারাইলি গহনে ! (ঐ) শবর কলে গোল, আঁথার বলে এল, বের চাইল সগনে। **নার** হেছ লার চলিতে চাছে না. বিধিছে কউক চরণে ৷ গুৰে মিকে যেতে প্ৰাণ কালিছে, এখন কিব্ৰিৰ কেমৰে 🛚 **१६ दान हो ७. तथ दान हो** ७. কে জানে কারে ভাকি স্থনে ! বছ বাহার৷ ছিল, সকলে চলে গেল. কে আর রহিল এ বলে। (ধারে) ক্ষান্ত-স্থা আছে, ঘা'রে জার কাছে, বেলা বে ৰার বিছে ভোরনে ! বাড়ারে গৃহ-যারে জননী ভাকি**ছে**,

আৰু য়ে ধরি ভার চয়াণ,

গাৰের বৃদ্ধি লেগে, আন্ধ আঁথি মোর,
নার্যের থেখেও বেখিলিনে !
কোধা গো কোধা তৃষি, অননি, কোধা তৃষি,
ভাকিছ কোধা হতে এ খনে !
হাতে ব্যিরে নাথে লরে চল,
ভোষার অনৃত-তব্যে !
কাগিলী শক্ষর—তাল কাঁপিতাল ।
কি কয় অতম ধানে, তৃষি মহারাজা,

ভয় ৰায় তব নাবে ! বিৰ্ভয়ে অযুত বহল লোক ধান হে, গগনে গগনে সেই অভয় নাম গায় হে ! ভব বলে কয় ৰদী মাৱে কুপাৰয়,

লোকজন বিপদ মৃত্যুত্তর মূহ হর তার। আশা বিশ্বাদে, সব বন্ধন ঘূচে,

মিত্য অমৃতরস পার বে !

রাগিণী বেহাগ—ভাল যৎ।

কেন আবে না ভালে না অবশ পরাণ ! নিশিদিন অচেতদ ধূলি-শরান ;

লাসিছে ভারা নিশীধ মাকালে, জাগিছে শত অদিমের নহান : বিহুপ গাহে খনে, ফুটে কুলবাশি, চজনা হাবে প্ৰবাদঃ হাবি : তহ মাধুহী কেন লামে না প্রাণে, কেন হেরি ন্য তব প্রেম-বয়ান ! পাই ৰুননীয় অ্যাটিত ছেছ. ভাই ভগিনী মিলি স্থান গেছ; কত ভাবে দহা তৃত্তি আছু হে কাছে, কেন করি ভোমা হতে দ্বে প্রয়াণ ৷ রাখি**নী** ভৈরোঁ—ভাল ঝাঁপভাল। কেন বাণী তব নাহি গুনি, নাথ ছে ৷ **অন্ধ** কৰে বয়ন দিয়ে, অন্ধকারে কেলিলে, বিরহে শুব কাটে দিন রাত হে। স্থপন সম মিলাকে যদি কেন গেঃ মিলে চেতমা, চবিতে ৩৭ বেখা দিয়ে চির মরমবেদ্যা ! আপনাপাদে চাহি ৩৫ মরম-জন পাত হে : শরশে তব জীবন নব সহসা যতি জাগিল,

কেল জীবন বিকল্প কর মরণ শর্মাত হে ৷

অহমার চূর্ব কর, প্রেমে মন পূর্ণ কর, বনর মন বন্ধন করি রাখ কর নাব হে! রাগিণী ভৈরবী—তাল চৌতাল।

ক্ষেত্ৰৰ কিবিয়া বাও না লেখি তাৰায়ে !
ক্ষেত্ৰৰ জীবন কাটে চিব অক্বাৰে !
মহান্ অগতে থাকি, বিহুৰ্বিধীন আঁলি,
বামেক না কেখ তাঁতে এ বিষ সাখাৰে !
ক্তনে আগায়ে জ্যোতি কিবে কোটি ক্ষ্যুলোক,
তুমি কেন নিভাবেছ আয়ায় আলোক !
উহোৱ আহ্বান-ব্ৰুত্ব, আনজে চলিছে কৰে,
তুমি কেন ব্ৰুত্ব আনজে চলিছে কৰে,

রাগিণী আলাইয়া--ভাল বামাল ৷

কেয়ে খই ভাকিছে, বেবের রব উঠিছে কগতে কগতে— খোরা আর. আর. আর. আর ! ভাই আনকে বিহুদ গান গাবে, প্রভাতে, নে সুধারর প্রচাবে :

বিবাৰ তবে কেন, কল্ল বহে চোখে, লোককাড়র আঙুল কেন আছি ৷ কেন নিহা**নক,** চল কৰে বাই— পূৰ্ণ হবে আলা ৷ গুজরাটা ভজন--ভাল একভালা। এসেছি দীন হীন, কোখা আছু প্ৰভূ ! খালর নাতি হোর খনীম নংগারে। শতি দূরে দূরে শ্ৰনিছি খানি ছে, প্ৰভূ খাতু ব'লে জাকি কাতরে <u>!</u> नीरन कि ठाँदर मा, গাড়া কি দিবে না. রাখিবে কেলিয়ে অঞ্গ আঁখারে : **१५ (५ कान्स्टिन**ः রজনী পাসিছে, একেন। আমি যে এ বনবাঝারে। বহ' বহ' কোনে, कराज-कममी. বিরাম মাসিছে প্রান্ত শিষ্ঠ এ। পিয়াও অমৃত, ভূষিত যে ছতি, কুড়াও ভাষারে মেব বর্ষারে ! ভাছি যে ভোষারে, পেছিল চলিয়ে,

কাথিছে আজিকে পথ হাড়াইলে।

শার লে বাবে না, রবিবে নাথ নাথ, ধরিরে তব হাত অনিবে নির্করে।

এদ ভবে এটা ।

এ মুখ পানে চাও, যুটিবে যান্তনা : शहित सब दल, बृहित चक्षकन,

চরণ ধরিয়ে পুরিবে কামনা (

রাগিণী টোড়ী--ভাল একভালা।

গাভ বীণা, বীণা গাওরে 🛶 অনুত-নগুর ভাঁর প্রেন শান,

মানৰ দৰে গুনাও ৱে !

মধুর তানে নীয়স প্রাণে,

মধুর প্রেয় কাগাও রে।

বাধা দিও না কাহাতে, ব্যবিতের করে

পাছাৰ প্ৰাণ কাৰাও বে।

বিবাদেরে কঃ আশার কাহিনী,

व्याप्ति मनपन मांध (तः !

वीमक्यातव चीमक-चांत्रत,

নব নৰ ভালে ছাও বে।

পড়ে বাফ সদা বিভূৱ চৰণে, আপনাৰে ভূবে বাও বে :

রাসিশী মিশ্র সন্নার—ভাগ রূপক।

চলেছে ভয়ন প্রসাগ-প্রমে, কে বাবে এম বে শান্তি-ভর্মে।

এ ভবসংসারে খিরেছে আঁধারে. কেন রে ব'লে হেগা স্লাম মুখ !

আবের যাননা, হেখার পুরে মা, হেবার কোণা প্রেম কোণা সুক !

এ ভব-কোলাংল, এ পাশ-ংলাহন,

এ ছব শেকানল দূরে বাক ;

সমূৰ্যে ভাহিয়ে, পুৰকে থাহিয়ে, চল যে খনে চলি ভাষ ভাক।

চল বোধানে চাল ভার ভাক [

विषय-छारना, लहेशा यांच ना,

ভূজ স্কৰ ছৰ পড়ে বাক্!

ভবের নিশীধিনী বিভিনে বদবোরে,

क्ष्यम् काद्र मूथं ठाव्स्य ।

नारवद्र वसकर, बिरव विवर्कन,

किरमध चारन कांश वानित्व :

রাবিশী থিকা কিঁকিট ---ভাল কাওয়ালি :

চাছি না স্থাৰে ৰাকিতে ৰে. त्यतः क्छ **रीम भग के**निएक् [কত শোকের জন্মন গখনে উঠিছে. कौरम-रक्षम निरम्पत वृष्टिकः ; क्छ श्विनात्री कर, प्रतिन कीदर নর্মে চাহে চাকিছে হে ৷ ৰোকে ভালাভাৱে কৰিব হৰণ. ওমিতে না পাই জোমার বচন, ছান্তবেদন করিতে যোচন, কারে ভাকি কারে ভাকিতে ছে। আশার খয়ত চালি মাও আগে. আইবাদ কর আতুর সভানে, পথহারা ক্ষে, ভাকি গুহপামে, চৰূপে হবে রাখিতে হে ! লেহ দাও, শোকে করিতে সাধানা, বাধিত জনের যুচাতে ব্যানা,

ভোনার কিয়ন, কয়হ থোরণ, সঞ্জ-মাকুল খাঁবিতে হে †

রাণিণী নট্ মলার—ভাল চৌভাল।

চিত্ৰ দিবদ নৰ যাধুগী, নৰ খোজা ভৰ বিধে, নৰ কুমুম-পাৰে, নৰ উত, নৰ আমন্দ। নম জ্যোতি বিভাগিত, নৰ আম বিকাশিক,

মৰ প্ৰীতি-প্ৰবাহ হিলোগে। চাৰিখিকে চিচ্ছিন মনীন বাবণা

क्ष द्वाय-सम्बन्धिः

ভ্ৰমন্থানী, ভূমি চিত্ৰ প্ৰাৰীশ, ভূমি চিত্ৰ নবীন, চিত্ৰ মঙ্গল, চিত্ৰ স্থান্তৰ।

রাগিদী মহিশ্রী খাঘাক--ভাল ঠুংরি।

চির বন্ধু, চির নির্ভন্ন, চিরশাব্ধি ভূমি হে প্রভূ !

ভূমি চির্মাসন সাধা বে, (কোমার জগতে) চিব্যাসী চিব্র জীবনে।

চিব প্ৰীতিস্থানিৰ্বর তৃমি হে স্কারেশ। তৰ পৰ সকীত ধ্বনিছে, (তোমার স্কাতে)

हिंद्र स्वि हिन्न न्नवसी !

রাধিণী কানাড়া---তাল চৌ**তাল** ৷

=ৰতে তুৰি হালা, অনীয় প্ৰতাপ,

হৃৎয়ে ভূমি লদ্যশান প্ৰদূহক্ৰ্ত্তপ্ৰ

নীবাৰৰ স্ব্যোতিষ্ঠিত চহণ-আৰে প্ৰবাহিত,

ছিৱে স্ভৱে নিয়মপথে অন্ত লোক। নিকৃত হয়ৰ মানে কি বা প্ৰসৰ মুখক্ৰি,

শ্বেৰণব্ৰিপূৰ্ণ মধুৰ ভাতি।

ভকত-হয়েয়ে তব করণারেদ সভত বহৈ, শীনকলে সতত কর অভয় হাম।

Alteriate An actual

রারিণী ভূপানী—তান তালদের্তা।

কার রাজরাকেশর : কার কারণ ক্ষর : কার কোর-বাধির, কার কোর-কাকর,

ভিমির ভিরম্পর জন্ম-গ্রন্থ-ভাষর ৷

রাগিণী শহরা—ভাল চৌভাল।

শাগিতে হবে রে ! মোহ-মিত্রা হস্তু মা গ্রথে চিরনিন, ফাফিতে হইবে সুখ-শরন অপনি-বোরণে ! কালে তীর ছারণত সর্কস্থানে, থিকে তীর কলেচক অনীম গগনে ; অলে তীৰ কল্ল-মেত্র পাণ-ভিমিরে ;

রাগিণী বিভাস—ভাল চৌতাল।

আগ্রত বিশ্ব-ক্ষেণ্যাহলমানে, ভূমি গড়ীব, তক, শান্ত, নিব্যিকার,

পরিপূর্ণ মহাজ্ঞান :

ভোষা পানে ধার প্রাণ, পুর কোলাংল ছঃটিঃ

চঞ্জ কৰী বেষদ বাহ সাগতে।

রাগিণী থা**ভাজ—তাল ধামার** ।

ভাকিছ কে ভূমি ভাগিত হলে, ভাপ **বল্ল হেছ-কোলে** !

নৱন-সনিলে কুটেছে হাসি, ভাৰ ভনে সৰে চুটে চলে, তাপ বয়ণ বেৰ-কোৰে !

किटिट्स बाजा भारत भारत, किया बाणिट्स बारत बारत,

ভ্ৰেছে ভাহারা তব করণা,

মুখী জনে ভূমি নেৰে ফুলে, আগ বরণ নেহ-কোলে !

যিশ্র বলিড--ভাল একডালা ।

ছাকিছ শুনি আধিত্ব প্রভৃ, আমিত্ব ভব পাশে।
আঁথি কৃটিগ চাহি উঠিক, চরণ-দরণ আংশ।
খুলিল বার, তিনির ভার দূর হুইল জানে।
বেরিল পর্য বিশ্ব ক্লয়ত গাইল নিক বানে।
বিশ্বল কিরণ প্রেম আঁথি সুক্লর পরকালে।
নিশ্বিল তার অভ্য পার, সকল জগত হালে।
কানন সব কুল আজি, নোরভ তব ভাবে।
কুল বছর মত মনুগ প্রেম-কুলুম-বালে।
উজ্জ্ব বচ ভক্ত-র্যর, আহ-তিসির নালে।
ভাত নাথ, প্রেম-অনুত ব্যক্ত তব হালে।

রাগিণী ললিভ—তাল চৌতাল।

ভূৰি অসূত-পাধাবে,—

ধাই ভূবে চরাচর, মিলায় রবি লবী :

বাহি বেশ, নাহি কাল, নাহি হেরি শীয়া। ধোষসূত্রতি হুহুৱে কাথে, আনস্থ নাহি ধরে। রাগিণী সাহানা—ভাল বাঁপভাল।

ভোকিতে অনেছি ভাই, চল' খবা ক'বে।
ভাকিতে অনেছি ভাই, চল' খবা ক'বে।
ভাকিত-জন্ম যারা, মুহিবি সমন-ধারা,
মুটিবে বিরহ ভাগ কভনিন পরে।
ভাজি এ আকাশ যাবে, কি অন্ত বীশা বাজে,
পুশতে অবং আজি কি বনু লোভার কালে।
ভাজি এ মধুর তবে, অধুর নিজন হবে,
ভাহার সে প্রেম্ম কেগেছে অক্তরে।

রাগিন্ট পরজ---তাল কাওগালি।

তৰ গ্ৰেমস্থাৰৰে নেতেছি, ভূষেকে মন ভূষেছে ! কোপা কে আছে নাহি জানি, ভোষার সাধুরী পানে মেতেছি, ভূষেছে বন ভূষেছে !

রাগিণী দেশী চৌড়ি---ভাল চিমা ভেডালা।

তৰে কি কিবিব নান মূহে স্থা, জৱ জৱ প্ৰাণ কি কুড়াহে বা । পাঁথাৰ সংসাহত জাতার কিবে বাব ় হুহয়েছে জান। পুৰাৰে শা । রাগিণী কান্যি—তাল ২২।

ভার' ভার' হরি, দীম দমে 🖯

দ্বাক ভোষার পর্যে করুপানন. পূজন-সাধন-দীন জনে।

শকুল সামতে না খেলি ভাগ. গালে ভালে ভীগ এ গ্রাণ.

ৰহণ ম্যানে শীৰণ দৃত্তি হৈ

শাৰ এ মুৰ্কল ক্ষীৰ জনে।

याचा या क्रिक्य कात करने ।

(पवित्र योगिनी निकित भारतः), वृक्ष कारक मध फिन क्संदा,

भ**द नु**हि **अञ्.** भारवत्र नहरिः

ভাকি ভোষারে প্রাণপরে।

ছিক্সার। দদা মণি কে যুরে,

ষাই তোম। সতে দূর স্বপুরে,

भंध द्रांताचे तमाद्रम गुरुतः

মছ এ লেচিন যেহি-ছবে :

রাগ তৈরোঁ--ভাগ একডালা।

উাহার থ্রেমে কে ভূবে স্বাহে ;
চাহে না কে ভূছে স্বর্থ বান।
বিরহ নাহি ভার, নাহিবে হুব তাগ,
কে থ্রেমের নাহি প্রকাম।

ভৈৱেঁ।—কাওয়ানি।

ভূমি আপনি জাগাও দোরে, তব সুধা-পরশে, স্থায়নাথ, তিমির স্থানী অবসানে কেরি ভোমারে ! বীরে বীরে বিকাশো স্বয়-স্থানে বিষয় তব মুখভাতি ।

রাগ ভৈরো—তাল কাওয়ালি।

কুমি কি গো পিতা মাহাদের, ওই যে নেহারি মূব সভ্ব রেহের ! ওই বে নয়ন অব, শুরুব কিরুব নব,

বিষধ চল্প-তলে মূল কুটে প্রকাজের : শুই কি সেকের ববে, ভাকিছ যোলের স্থে, ভোলার জাসন খেরি গাঁড়াব কি কাছে সিয়া ৮ ষ্ণনের সুলগুলি, বজনে সুটায়ে তুলি, ছিলে কি বিষক কবি প্রাণাদ-স্কিল হিছা গু

রাগিণী দেশ —ভাল একভাল।।

ভূমি ছেড়ে ছিলে ভূলে ছিলে বৰে, হেড় গো কি দলা হয়েছে।

युनिय रहम, स्तिम अस्त्र,

লোকে আদ ভূবে সংহছে <u>।</u> বিশ্বহীয় বেশে এনেছি বেগায়,

জানাতে বিরহ-রেগনা ;

भव्यन (सप, छार हान गांप, व्यासक प्रित्तत वानमा ।

নাথ লাধ হলে, ডাকিব তোমারে, চাহিব ক্লয়ে রাখিতে :

कांकर ब्यारंग्ड त्हांक्म स्थानित,

শার কি পারিবে থাকিছে !

ভা অমৃতক্রপ দেখিব বর্তন, মৃদ্ধিৰ নয়ন বারি হে;

আৰু উঠিব না, গঢ়িয়া সহিব চয়দতলে ভোষারি ছে।

হাগিণী—কেদারা—ভাল বাঁপিভাল।

पृथ्वि थव रक रह, रक छन स्थिन,
थव स्थामात व्यंग्य रहमा १
थ कि व्यंग्य रहस विकामित,
थ नमीतन पृत्तिता श्रीन-हिस्ताम ।
थ कि स्थाप पृथ्वि वृण कृष्ठेरित,
कृत्रमदम हारित श्रीम गंतर ।
थ कि गंजीय वांगी निवास मागरब,
कि मंगीकि पृणित्य मरी-क्रमाल ।
थ कि हालिह सूध मानद-हजरब,
छारे सम्म गारेस्ह स्थार-हजारम ।

রাগিণী মিশ্র করজয়ন্তী—একডালা।

ত্মি বৰু, ত্মি নাথ, নিশিদিন ত্বি আৰার ; ত্মি কুথ, ত্মি নাডি, ত্মি হে অমৃত-পাথার ! ত্মিই ত আনত্ম-লোক, কুড়াও প্রাণ, নান শোক, তাপ হরণ ভোষার চরণ, অসীয় পরণ দীন কনার !

রামিট আলাইয়া---তাল বাঁপিতাল।

ভোষাবেই করিয়াছি জীবনের ক্ষতারা, এ বয়ুড়ে আর কতু হব না ক পথছারা! বেধা আদি বাই না ক. তুমি প্রকাশিত গাঁক, আকুল নর্ম-ললে চাধ গো কির্প-ধারা! তব মুধ সহা মনে, ভাগিতেছে সলোপনে, তিবেশক অন্তর হ'লে না তেরি ক্ল-কিনারা! কথন বিপাধে যদি, তামিকে চাহে এ কহি, আমনি ও মুধ হেরি স্বংস দে বহু সারা!

ছজন—তাল ছেপ্কা।

ভোষাতেই প্রাণের আশা কহিব।

ক্লেই ছুকে শোকে, আঁধারে আলোকে,

চহণে চাহিল, কহিব।
কেল এ কংলারে, পাঠালে আমারে,

স্থুনিই ভাষ তা' প্রস্তু গো।
ভোষারি আদেশে, রহিব এ দেখে,

কুই হুই যাব। দিনে কৃহিব।

वरि वरम करू, गथ छातारे वार्च.

জোষারি বাষ লয়ে ডাকিব ;

বড়ই প্রাণ ববে, আকুল হইবে।
চরণ হলরে লইব।

তোলারি লগতে, প্রেম বিলাইব,

ভোষারি কার্যা যা সাধিব ; শেষ হরে গেলে, ভেকে নিয়ো কোলে,

বিরাম জার কোবা পাইব :

রাগিণী পুরব্য—ভাগ চেইডাল।

তোমা লাগি নাগ, জাবি জাগি ছে:

তুখ নাই জীয়নে তোৰা হিনা। সকলে চলে যাহ কেলে, চিন্ন খ্যাও চে,

धूमि कारक बाक जरूर क्रब मान,

পাপে তাপে ব্যব কেব নাহি :

রাগিণী দেশ থাক।ক—ভাক **ফাঁপভাক**।

ভোমার, বছনে থাবিব হে, রাশ্বিব কাতে :

ক্ষেম কুল্নের বৰু সৌরভে—

ৰাধ্য ভোষারে ভুলাব হে ⊱

ভোষার থোৰে সধা, সাজিব সুখ্য, বহরহারী, ভোষারি পথ মুহিব চেছে। আপনি আসিবে, কেমনে হাছিবে আর, মধুর হাসি বিকাশি রবে হুম্যাকালে।

রাগিণী ভৈরবী—ভাল একভালা।

ভোষারি ইক্টা হৌক পূর্ণ,
কল্পামর স্থামী !
ভোষারি প্রেম স্থান্থ রাখি,
চয়পে রাখি আশা,
হাও ছাল, হাও ভাপ,
সকলি সহিব আহি !
তব প্রেম-আমি সভত আগে,
কোনও জানি না ;
থা, মদল রূপ ভূলি, ভাই
পোক-সালরে নামি !
আনক্ষম ভোষার বিবা,
শোকাস্থপূর্ণ;

আমি আগন লোবে হংগ গাই,
বাগনা অপুগানী:
বোৰ-বন্ধ ছিল কল,
কঠিন আখাতে;
অক্তমলৈবাকীত হলবে
থাক ধিবন ধানী !

রাসিণী ^ইমন ভূপালি—ভাল একভালা <u>৷</u>

ভোষার কথা বেধা কেব ও বলে না.
করে ভঙু বিছে কোনাহল !
কুধামাপরের ভীরেতে বলিয়া,
পান করে ভঙু হলাহল ;
কাপনি কেটেছে আপনার বৃশ্ব,

লা জানে সঁতোর, মাহি পার **ধৃষ,** শ্রোতে বার ভেলে, ভোবে বুরি শেষে, করে দিবানিশি চলমল।

चाबि (कांग) यांत, कांशरत **च**र्थात, निरम्न यांग्र मध्य होनिशा অকেনা ভাষারে, বেবে বাবে শেবে,
ভক্ক পাবারে আনিয়া।
ভাষানের তরে, চাই চানিবারে,
ভাষানের তরে, চাই চানিবারে,
ভাষান করিছেছে ছলছল;
ভাগনার কারে, যদি বে আপমি,
ভাগিছে চহন্ন হামবক।
রাপিনী গোড় মহাার — তাল ক। ওরু,লি।
তোলার দেবা পাব ববে অবেছি বে স্বা!
ভন প্রিনত্ম বে, কোবা আছ ব্বাইরে,
ভব গোপন বিজন গৃহে লবে যাও।
সেহ গে, সভারে তপন ভারকা,
ভারেবে সব দ্র কর হে, বোচন কর ভিমির।
ভগত-বাড়ানে, ধেক না বিরলে,

তুকাহো মা আপনাতি ৰহিষা মাথে, তোমাত গুৰুত কাছ পুলে মাও !

রাগিশ্ব ঝিঁকিট—ভাল চৌতাল)

তোহাতি মৰুর রূপে তরেছ পুখন, বুঝ নরন দথ পুলকিজ-বোহিত বন !

পূৰ্ণিমা প্ৰসৰ কাভি, রখ-রাবি-বিকশিত-ভত্তুকুম বন ! কোৰা পাৰে চাহি সকলে মুম্মৰ, রণ হেরি থাকুণ বস্তর,

তকুণ সকুদ নবীৰ ভাগি,

ভোষারে ঘেরিয়া ফিলে নিরম্বর, কোমাৰ প্ৰেম চাহি।

উঠে হজাত ভোমার পাৰে. গলন পূৰ্ব প্ৰেম-পালে, তোমরে চরুণ কংগছে বরুণ নিধিক জন !

রাধিণী আসাবরা—তাল ঝাঁপতাধ।

मीवं की दब-१५.

কত হংগ তাপ,

ক্ত পোক-প্ৰন —

বেয়ে চলি তবু চার করণার পাদ।

খুলে রেখেছেন জার,

অনৃত-ভৰন-বার,

বান্তি বৃচিবে, অক বৃদ্ধিবে,

এ পাথের ককে অবসান।

অবান্তের পানে চাহি,

আনন্তের গান কাহি,

কুর শোক ভাগ নাহি নাহি রে—

অনন্ত আগন্ত বাব,

কিন্দের ভাবনা ভার,

নিষেশের ভূম্ম ভাবে হব দা যে ত্রিয়খাণ ৷

রাসিন্ধ ভৈরবী—ভাল ব**াঁপভাল**।

ভোষারে আমিলে হে, তবু যন ভোষাতে বাই ! ভোষারে না কেনে বিষ, তবু ভোষাতে বিয়ান পাই ! অসীম পৌল্বা তব, কে করেছে অন্তব হে, সে মাধুরী চিত্ত মৰ,—

শামি না দেনে প্রাণ গগৈছি ভোমার ! ভূমি জ্যোতির জ্যোতি, স্থামি স্কু শীবারে, ভূমি যুক্ত মহীছানু, স্থানি মন পাধারে, ভূমি স্কুটীন, সামি স্কুট দীন,

কি অপূর্ব নিবন তোষায় আমার !

রাগিণী ধূন্—তাল কাওয়ালি।

भिवानिनि कवित्रा रचन, श्रम्बाट प्रक्रिक जानन,
सन्दर्शन दि श्रुण कि, द्रुण कि कविद्य जाग्रम १
क्वित्र विक्रम के ग्रेष्टे, द्रुणांगर किंदू द्रुणां मारे,
श्रम्बाद निक्रम के ग्रेष्टे, द्रुणांगर किंदू द्रुणां मारे,
श्रम्बाद निक्रम किंग्रे, क्वित्र च्या किंद्र किंग्रेण द्रिक्षण ।
स्वित्र द्रुणां विव जाता, जांग ना म्यांत कत्र-थाता,
स्वित्र किंग्रेण विव जाता, जांग ना म्यांत कत्र-थाता,
स्वित्र विव्या क्या क्वित्र क्या मिन्द्र क्यांत्र क्यांत्र ।
स्वित्र व्यान किंग्रेण द्रिक्ष क्यांत्र ।
स्वत्र व्यान किंग्रेण क्यांत्र, क्वित्र क्यांत्र क्यांत्य क्यांत्र क

রাগিন্দী টোডি—ভাল ঝাঁপভাল।

ছুব নিয়েছ, বিরেছ ক্ষতি নাই, কেন গো একেনা কেনে রার' : ডেকে নিলে, ছিল বার: কাছে, তুমি তবে কাছে কাছে বাক' ! ব্ৰাণ কারে। নাড়া নাহি পার,

इति नन्दै (प्रथा माहि नाह. এ পৰে চলে বে অসহায়— ভারে ভূমি শ্রাক, প্রভূ, ভাক ! নলোৱের স্বালে বিভাইলে, বিধান্তর শীবার সমরে. কেবার্ড কোমার বাডারমে, চিন্ন-খালে: অলিছে কোধাৰ : ভূক নিৰ্মান্ত ধারে রই, পিপাসিত প্রাণ কারে ভই, ব্দদীয় প্রেমের উৎস কই. খামারে ভূবিত রেশ না ক ! কে আমার আত্মীর বস্তম, मान भारत, कान हरन दोत्र ; চরাচর বৃদ্ধিছে কেবল, **খনতের বিলাম** কোবাছ <u>।</u> नवाँहै जाधमा मिरह क्षा. কে কাহারে হিবে গ্রে আগ্রা.

नश्नारतत निवाधक करन.

ভোষার হেছেড মাথ, চাৰ' [

রাগিন্ধ রামকেলী—ভাল ঝাঁপভাল।

হুখ দূর করিলে, দরশন দিয়ে যোহিলে আই!

সত্ত লোক ভূলে শোক ভোষায়ে হাহিলে,
কোধায় আহি আহি দীন অভি ধীন!

গৌড্দার:—ভাল একভালা।

ছবের কথা তোরাৰ বলিব না, ছব ভূনেডি ও কর-পরবে। বা-কিছু বিরেছ, ভাই পেরে নাব, ভূবে ঋাছি আছি বরবে।

ভানজ-মালয় ও মধ্য ভব, বেশ আমি আছি, ও কি সেহ ভব; ভোষার হস্তদা, ভোষার ভশম, মনুর কিরণ বরবে!

কত নব হাসি কুটে **কুল ঘনে,** প্রতিদিন নব প্রতাতে ;

প্ৰতি নিশি কত গ্ৰহ কত ভাৱা, হোকাৰ নীৰৰ সভাতে। समगीद (मर. एवंशित शिकि,
निरुद्धात श्वा हारन निष्ठि निष्ठि,
नगरत (अर, मगुत सांग्नी,
कृषात सहल-गतान !
प्रश्न (नाता छन् ना नानि यत्रभ,
वित्रह (याचा सन्त्र सन्त्र,
(नांक छान प्रत्र स्ट (व स्त्रभ,
(कांच छान प्रत्र दा ह्य स्त्रभ,
कांच स्त्र खान, जांच ना चाना,
नय स्त्र स्त्र नय प्रत्य !

রাগিনী কামোদ—ভাল ধামার।

ছ্বারে যদে সাছি প্রভূ, নারা বেনা, নরনে বছে অঞ্চনারি। সংসারে কি সাছে হে হারর না পুরে; প্রানের বাসনা প্রাণে নরে, কিরেছি হেখা খারে বারে; ব্যবস্থা কৰি আমি এবেছি এখানে, বিৰুধ হোছো না হীন হীনে, বা' কয় ধে বুৰ গড়ে !

রাগিণী দেওগিরি—ভাল হুরফাঁকডাল।

দেবাধিদেব মহাছেব !
অসীম সম্পদ অসীম মহিমা !
মহাসভা তব অনত আকামে,
কোট কঠ গাহে অয় অয় অয় কে !

রাগ ভরুরো—ভাল ঝাঁপতাল ।

বেশ্বর স্বাহ্বাবে কেরে—কিরলে কিরণর্বার ১ **হেবুরে ক্ষ**তে চেছে---সৌকর্য্য-প্রবাহ বয়। পাঁপি শোর কার দিকে, চেরে পাছে পনিমির্থে : কি কৰা জাগিছে প্ৰাণে, কেবনে প্ৰকাশি কৰ।

যোগিয়া বিভাস-ভাল একতালা।

ৰহুদ ভোৰাৱে পাছ না দেখিতে, तासक् नवस्य नवस्य १ হুদর তোষারে পার দা জানিতে, ক্ষয়ে রবৈট গৌপনে। ৰাদনার বলে মন প্রবিষ্ঠ, ব্যস্থ স্পতিলে পাদলের মত. দ্বির অ'াষি তুমি সরমে সভত, আপিছ শ্বানে স্পনে ! . সবাই ছেড়েছে নাই খার স্বেহ, ভূমি আহু ভাগ, আছে তৰ হৈছ,

বিরাশ্রয় জন পথ বার শেহ, মেও আছে তৰ কৰনে।

ভূবি ছাড়া কেব সাধী নাবি ভাষ, नग्रद भन्त भीरम विकाद,

কাল পারাবার করিতের পার, কের নাহি ভাবে কেমদে। লানি ওণু তুনি আছু তাই আছি, তুমি প্রাণমন্থ, তাই আহি বাচি, ৰত পাই ভোষায় আরো তত হাচি, ষত ভাৰি তত ভাৰিছে।

> वानि वाचि (कामोद भार निरुद्धतः লোক বোকারতে যুগ সুগারত ১ ভূমি স্বায় স্বামি, নামে কেহ নাই,

কোন বাব্য নাই ছবনে চ

রাখিণী থাজার—ভাল ঝাঁপভাল।

নিত্য নৰ সভ্য তথ তথ্ৰ আলোকন্ম,

পরিপূর্ব ক্রান্যয়, কৰে হৰে বিভাসিত, যহ চিক-আকাৰে 🖠

ররেছি বনি দীর্থ দিশি, চাতিরা উদর দিশি,

केशपुरच करपुर्छ

নৰ স্থাৰ, নৰ প্ৰাণ, নৰ দিবা, আলে। কি ৰেখিব, কি কাৰিব, মা কানি লে কি কানক,

মৃতন আমোক আগন যন যাখে

সে মালোকে মহাজুৰে, আপন মালর মূৰে, চলে যাব গান গাহি

কে বহিৰে ভার দূর পরবালে !

রাগিণী টোড়ি—ভাল কাওয়ালি ৷

নৰ আনকে ভাগে। আৰু ; নবরবিকিরথে, শুম সুন্দর প্রীতি-উল্ফুল নির্দ্ধন জীবনে। উৎসায়িত নবজীবন্দির্দ্ধর, উচ্চাসিত আশাসীতি,

चमुक गुण्यम् रत्र चाकि वह शक्ति गरतः।

রাগিণী ভ্রহাকানাড।—ভাল কাওয়ালি।

নাৰ হে. এেইগৰে সহ বাং। তাসিয়া লাও !

मांदर्ग किष्टु दहरथा ना दम्रदर्गा था.

খেকোনা খেকোনা দূরে।

নির্জনে সক্ষমে অববে বাছিরে,

নিত্য ভোষারে ছেরিব :

রাগিণী রামকেলী—তাল কাওবালি।

লিকটে দেখিব জোৰাতে, করেছি বাসনা বদে।

চাহিব লা হে চাহিব দা হে দ্ব দ্বান্তর পথনে।

দেখিৰ ভোষাৱে গৃহ মাধারে, জননী মেৰে, ভাতুপ্ৰোছে, প্ত সহল বছৰ বছৰে।

দেয়িব উৎস্থ বাবে, মঙ্গল কাজে,

প্রতিদিশ হেরিব জীবনে।

হেরিৰ উজ্জল বিষল মৃষ্টি তব লোকে হঃখে মরংগ. বেরিব সকলে নরনারী মুখে, ছেরিব বিজনে বিশ্বলৈ ছে,

পভীর বহুর আসমে (

রাগিণী যোগিয়া—তাল কাওয়ালি।

নিশি দিন চাব রে জার পানে: বিকশিবে প্রাণ জার খণ গালে ৷

হের রে অন্তরে সে মুখ ভুকর,

ভোগ হণ জাঁয় প্রেম-বধু পাবে !

রাগিণী থিঁকিট—ভাল একভালা।

भाषवीरक बाध (मबरक ।

नासिमस्य मानन-स्य (स्व-(स्व (र)

বৰ্মলোক প্ৰন্দান্ধ, দক্ষ মোহক্ষ্ৰহ্নণ,

ছঃৰতাপৰিয়তর্থ ৰোক-পাৰ বিশ্বচর্ণ।

সভারণ প্রেম্কণ ছে.

নেব-মন্তল-বদিত-পদ বিবাস্থ হৈ ।

নাম নৰ পূৰ্ব ইন্ধ্য স্থান অগান প্ৰেসনিস্থ্য,

নামে ভূবিও অনিষ বিন্দ্য, কল্পান্য কলবন্ত্ত ।

প্ৰেমনেৱে চাহ সেবকে,

বিকলিতদল চিডকমল লংঘদেব হৈ ।

পূণ্যজ্যোভিপূৰ্য গগন, মধুত হৈছি সকল সুবন,
স্বাসক-মুদিত প্ৰেম, অনিভগীত হলর ভবন ।

নাম্ এল পূভ জীবনে,

কিটাও আল স্ব ভিনাব অমৃত প্লাবনে ।

নেম আন, প্ৰেম দেক, তম্ব চিক্তে বহিব কেই,
বন্ত হোকু কলন দেহ, পূণা কোকু সকল গেই ।

রাগিণী নাচামী ভোভি—ভাল ধামারে ।

বিবাদ সৰ কর চুর মবীম আমাশে, প্রাচীম রখনী নাগে। মূতন উবালোকে : রাগিণী বাহার—ভাল একভালা ।

ৰ্ভদ প্ৰাণ দাও প্ৰাণস্থা, আজি কুপ্ৰভাতে।

পিতার হ্রারে সাড়াইর। সবে, ভূবে বাও শতিযান। এব ভাই এব প্রাণে প্রাণে ভালি
সংবারের ধুলা ধুরে কেলে এব,
মুখে করে এব তারি;
কল্পের থালে করে এব ভাই,
প্রেম মূল রালি রালি!
নীর্ল হল্পের অংগনা লাইরে,
বুহিলে উহ্লেরে ভূগে;

ক্ষাৰ ক্ষেত্ৰ মুখপাৰে কাথা, চাহিৰে না মুখ তুলে : কঠোৱ আঘাতে কাথা পোৱে কত,

ক্ষাের আঘাতে ব্যব্য গেলে কও ব্যধিকে পরের আশি ; ভুদ্ধ কথা নিয়ে বিবাসে বাভিয়ে

ধিবা হল অবসান ! তাঁর কাছে এসে তবুও কি আঞি আপনাত্তে ভুলিবে না ।

স্থাপনারে ভূপেবে না । হলর নারাহে, ভেকে নিজে জাঁহে,

ভাৰত কি পুৰিধে না । কাইৰ ইাটীয়া সকলে বিভিন্ন।

ক্ষুৰ ব্যক্তিয়া সকলে ।ব্যক্ত ক্ষেত্ৰিক অমুভ জাঁকি : শিতার অশীম ধন রতনের সকলেই অধিকারী !

রাগিণী খট্—ভাল বঁঁ।পভাল।

গেয়েছি অভয়পদ কার ভয় কারে,

আমন্দে চলেছি ভবপারবোর-গারে :

ৰধূং উচন হার, শোক জাপ সূতে যার,

ক্ষণাকিরণ জার অরুণ বিভাগে।

बौरत মরণে ভার কভু না ছাড়িব প্রারে।

গৌড়সারং—ভাল চৌতাল।

পেয়েছি সম্বান তব সম্বৰ্ষাৰী,

অন্তরে হেগেছি তোমারে।

চকিতে চপল জালোকে, হ্ৰণৰ শতহল বাকে.

হেরিত্র কি অপস্থপ রূপ 🛊

কোৰা ফিরিডেছিলার পরে পরে ছারে ছারে,

मां किसः कणवटनः

সহস্য কোনাংক বাকে, গুলেছি তব আহ্বাদ, মিছত গ্ৰহণ মাঝে

নগুৰ পঞ্চীৰ পান্ধৰাবী !

রাগিণী কল্যাণ—ভাল চৌতাল।

পূर्व भारक पूर्व प्रकरकाण नगरत अग.

अन यामात्रश्रमः

আলোকে অবিবাধ হৌক চুৰ্গ, অনুতে মৃত্যু ক**ৰ পূৰ্ণ**,

কর গতীর দারিলা ভঞ্জা

সকল সংসার লাড়াবে সরিয়া, তুমি রংগ্রে শাসি**ছ লেখি**; ক্যোভিরত ভোষার প্রকাশে, শশী তপন পায় লাক,

সকলের ভূমি গর্কারন ৷

গুৰুৱা ভোডি—ভান চোভান।

প্ৰভাতে বিমল স্থানন্দে, বিৰুশিত কুন্তুমগছে,

বিহত্তম সীত-ছম্দে ভোষার আভাগ গাই। আগে বিশ্ব তব ভবনে, প্রতি ধিন নব লীখনে,

আংসাবেম তথ ভবনে, আভোধন নব কাবনে, অগাৰ পুৱা পুরো কিয়ানে,

খটিত নিখিল বিচিত্ৰ ব্যা**ং**—

বিশ্বদ আসমে ৰসি, ভূমি সৰ দেবিছ চাহি !

চারিদিকে করে ধেলা, বরণ কিরণ জীবন **মেলা**,

কোপা ভূমি পৰৱানে।

শব্ধ কোবার, শন্ত কোবার,

শশ্ব ভোষার নাবি নাবি :

বাগিণী টোড়ি ভৈরবী—তান আড়াঠেকা।

থিলো না থিলো না খাৰি, এসেছ ছ্য়াবে,
পূল হাতে কোবা যাও পূল বংগারে!
খাল তাঁতে যাও দেবে, খানরে খাম গো ডেকে,
অমৃত তরিয়া গও মরম নাবারে।
গুম প্রাণ ভড় বেনে কার পানে চাও—
পূল হুটো কবা গুনে লোবা চলে বাও।
ভোষার কথা গুনে করে, তার কবা বাও গরে,
চলে বাও, গুরি কাছে রেনে আপনারে!

রাণিণী ভৈরোঁ।—তাল একভালা।

তর হর পাছে তব নাবে আনি
আনারে করি প্রচার হে।
বোহবশে পাছে বিরে আনার, তব
নাম-গাম-অংকার হে।
ভোমার কাছে কিছু নাবি ত ব্কানো,
আরের কথা তুমি বব লামো,
আমি কত দীন, আমি কত হীন,
কেছ নাবি জামে আর হে।

ক্ষ কঠে বৰে উঠে তৰ নাৰ,
বিধ কৰে তোনার করে গো প্রশাস,
তাই আনার পাছে আবে অভিযাম,
প্রাসে আনার আঁবার হে।
পাছে প্রতারণা করি আপনারে,
ভোমার আদনে বসাই আমারে,
বাধ মের হতে, বাব তব হতে,

রাধ রাধ বার বার হে। রামিনী কলাগে — ভাল পটভাল।

মহাবিৰে মহাকাপে বহাকাল থাৰে, আদি মানৰ কি বাগি একাকী হৃদি বিহয়ে। ভূমি মহে বিষেধ্য পুরণতি অদীৰ হুংল্যে,

নীরবে একাকী ভব আগরে। আবি চাহি ভোষা গালে —

শাৰ চাহে তোৰা গালে --ছুমি মোতে নিয়ত হেরিছ,

মিনেৰ বিধীন মত মচমে !

রাগিণী ভৈরবী--ভাল কাঁপভাল।

ৰহা সিংলাদনে বসি গুলিছ হে বিশ্ব-পিডঃ, তোহায়ি য়টিত ঋষ মহান্ কিষেত্ৰ গীত। যর্জ্যের মধ্রিক। হোরে, কন্ত এই কঠ লোরে লামিও হুয়ারে তব হ'রেছি হৈ উপনীত। কিছু নাহি চাহি দেব, কেবল ধর্ণন মাগি, ভোষাত্তে শুলাৰ গীত, এসেছি ভাছাত্তি লাগি : গাহে হেখা বুকি খুলী, সেই স্কো-মানে কমি, একাল্কে গাহিতে চাতে এই তকতের চিত ! রাগিণী কাফি—ভাল একডালা। गात्म नात्व चय तथा भावे. हिंद हिस रक्ष्म शहि ना। কেন যেৰ আলে ভাৰৰ-আকালে, ছোৰাৱে দেখিতে দেৱ মা। ক্ষবিক আলোকে আঁথির পদকে তোৰায় ৰবে পাই বেৰিছে : হারাই খাবাই সদা ধর ভগু, হারাইয়া ফেলি চকিতে 🛚 কি করিলে বল পাইব ছোমারে. शासिक चौरिएक चौरिक्छ। এত প্ৰেম আমি কোধা পাব নাৰ,

ভোনারে ক্রমরে কানিভে।

শাম কালো পানে চাহিব না শাহ. করিব হৈ শানি প্রাধপণ ; তুরি যদি বহু, এইনি করিব বিষয়-বাস্থা, বিস্কুন !

রাসিণী আদা ভৈরবী—ভাল চুংরি।

বিটিল সব ক্ষা, উহিত্ত প্রেম-ক্ষা চল দের বার ।

বেখা যে কত বোক, পেয়েছে কত খোক, ভূষিত আছে কত ভাই।

ভাক রে তাঁর মানে স্বারে মিক্যানে, সকলে তাঁর ওপ পাই।

ছবী কাডর দানে, রেগো রে রেগো মনে.

হাসত্যে সংগ কেছ ঠাই। সংগত চাহি ভাঁতে, ভোলা হে আপনাৰে।

স্বাহে কর রে আপন।

শালি আহরণে শালি বিভয়ণে

শীবন কর রে হাপন।

এত নে তুখ আছে, কে তাথা ব্যনিয়াছে, চল ছে নবায়ে ভনাই— বল তে বেকে বল, 'শিভার বলে চল, ধেষার শোক তাপ নাই !"

রাধিশী মিশ্র কেনারা —তাল একভাগা।।

বাদের চাহিন। ভোগারে ভুলেছি,
থারা ব চাহে লা আবারে।
থারা আলে ভারা চলে বার দৃতে,
লেলে বার মরু-মারারে।
ছহিমের হালি ছ্রিনে জ্রার,
হাল নিডে যার বাংগারে;
কে বারে ভবল, স্থাতে নরন,
ডেকে তেকে বারি কালারে!
বাহা পাই ভাই বারে নিরে বাই
আপেনার বন কুলাতে;
পাবে সেধি হার ভোকে ল্য বায়,
ধুলা হার বার ধ্রাতে। —

ক্লথের আশার মরি গিণাসার, ভূবে মরি হুখ-গাধারে ; রবি শশী ভারা, কোখা হর হারা, দেখিতে না পাই শ্রেমারে !

রাগিণী আলা ভৈরবী—তাল টুংরি :

বৃত্তিব বরা-মাথে শান্তির বারি !

কে সদয় সরে আছে নাড়াইবে.

উর্ত্তিব দরনারী ।

না বাকে অন্ধনার, না বাকে মোহ পাপ,

না বাকে পোক পরিভাগ ।

চব্য বিষশ বোক, প্রাণ নবল হোক,

বিচ যাও অপনারি ।

কেম এ বিনো বেম, কেম এ মুন্ধেশ,

কেম এ বাম অভিযাম !

বিজয় বিভৱ প্রেম, পারাশ হল্পে,

ভার ভার বিভৱ প্রেম, পারাশ হল্পে,

ভার ভার বোক প্রেম, পারাশ হল্পে,

ভার ভার বোক প্রেম, পারাশ হল্পে,

রাগিণী আলাইয়া—ভাল একডালা ।

বলে আছি হে কৰে ভমিৰ ভোৰাই বাৰী। কৰে বাহির কটৰ ক্পতে, যদ ক্ষীবন বন্ধ সানি। কৰে প্ৰাণ কাগিবে, তব প্ৰেম পাছিবে, ভাবে খাৰে ভিত্তি স্থাত ব্ৰুচ্ছ চাছিবে, सदनावी यन कविदः दृदश, इदश हिएव जानि । (कर करन मा नान, जारन ना धीन, বিৰুদে ঈভ অবনাম. ভোষার বঁচন করিব বচন লাখ্য নাহি নাহি। ভূমি না কছিলে কেমনে কৰু,

श्रीरण बारका राजि छव.

ভূমি বা বলিবে ভাই বলিব, শুমি কিছুই দা শামি :

ভব নামে আমি স্বাহে থাকিব, স্বাহ্ম বুটব টানি ।

রাখিখী ললিভ--ভাল আড়াঠেকা।

ৰৰ্থ পেল, ছবা খেল, কিছুই করিনি হাছ, আপন পুরতা করে, জীবন বহিরা ভার :

তথু ও আখার কাছে, নব ববি উনিয়াছে, তবু ত জীবন চালি বহিছে নবীন বাব ! বহিছে বিমণ উবং, তোহার আলিন্-ধাৰী, তোমার ক্ষণা-ছ্যা হলতে দিতেছে আলি ! রেখেছ এগত-পুরে, হোরে ত কেলনি দুরে.

क्रींग्रे कि विष्—काश्यानि ।

শ্বীদ শাখানে তাই পুনুষ্ঠে শিশুৰে কার।

বড় আৰা করে এসেছি খো, কাছে ডেকে বঙ, বিশ্বারো মা কমনি ! মীনহীনে কেচ চাহে না, ভূমি ভারে রাখিবে, জানি খো ! আর আমি যে কিছু চাছিলে, চন্ত্রণতাল ব'লে বানিক :

পার সাদি যে কিছু চাহি যে, কননী হ'লে ভগু ডাকিব।

ভূষি না রাধিলে, গৃহ আর পাইব কোবা,

কেঁৰে কেঁলে কোবা বেড়াব— ঐ বে হেডি তৰ্গ-ৰূপ-বোড়া গ্ৰহণ বৰুগী : রাগিৰী কাফি কানাডা---ভাল টিমা তেভালা।

বেংগছ প্রেমের পালে ওকে প্রেম্মর।

তৰ প্ৰেদ লাসি দিবানিদি লাগি, ব্যাস্থৰ সংগ্ৰ ।

ভব প্ৰেয়ে কুন্তুৰ ছালে. তৰ প্ৰেৰে টাৰ বিকাশে,

প্ৰেম হাসি তৰ উদা নথ নথ,

्थरर निमन्न निषेत्र नीहरू, তথ প্ৰেম তরে, কিয়ে হা হা ক'রে উতালী মনয়।

মারুল প্রাণ যম কিরিবে না সংসারে:

ত্তনেছে ভোষার রূপে নছন **আ**ষারি।

बार्ग पूर्व भवम-च्या-

তৰ পুৱাৰাণী সভত উপলে.

करिया भग्नाम मावि ना मारन,

ছুটে যেতে চার অনস্তেরি পানে.

चाकुन क्रमप्त (पीटक निषमा, ७ (क्राम-मानग)

রালিনী মিঞা বেলাগুল—তাল **ম্ব**াপভাল।

শুনেছে জোনাৰ নাম, অনাৰ ভাতুর কন, **এবেছে ভোষার বাবে, বৃচ্চ কেরে না বেন**। বাংল বারঃ নিরালার, আঁবি বেন সুহে বার, বেন বাে অতর পার, ত্রালে কন্সিত বন। কত শত আহে বান, অতাক। আলর বান, শোকে কীর্ণ প্রাথ কত কাহিতেরে নিশিমিন। পালে বারা ভূবিয়াছে, বাবে তাবা কার বাছে, কোবা হায় পৰ আছে, লাও তারে বয়বন।

রাগ তৈরব—ভা**ল আ**ড়া চৌতাল।

खंड व्यानस्य विज्ञाय बद्धन स्ट्रीमास्यः

নীলাগরে, ধর্থী পরে, জি বা মহিম) তথ বিজ্ঞাপিল।

াক বা মাহম। তথা বিকাশেল <u>।</u> দীপ্ত হুৰ্য্য তব মু**কুটোপ**রি,

চরণে কোটি তারা বিলাইণ :

আলোকে গ্ৰেৰে স্বাদলে

নকন ৰগত বিভাসিন' !

রাণিণী ইমন কল্যাণ—ভাল চৌভাল।

শোন তার ত্থাবাধী ৫৩ মৃতুর্কে শাব্ধ প্রাণে। ছাত্ ছাত্ত কোনাবন, ছাত্ত য়ে লাপন কথা। শাকাশে নিবানিশি উধনে নদীত-শ্বনি উছার. কে জনে যে মধুবীশারব— শবীর বিধ পুরুপধে হ'ল বাহির ্

রাগিণী নিছু--ভাল একভালা।

পুরু প্রাণ কালে সহা প্রোপেরর,

नीमयञ्ज नदानित्त्

८क्षम विन्कृ को छत्त्व कर संस्

কোরে বা স্থা, কোরো বা চিয়নিকল এই গীবন,

প্রভূ, জনামে মরণে তুমি গতি, চরণে যেও হান গ্

দক্ষিণী হুর-- ভাল একভালা।

বকাততে ওট কাছিছে সকলে,

শোন লোন পিছা।

ক্ষ কালে কানে, স্থাপ প্রাণে প্রাণে,

ক্ষেত্র বার্ডা ।

कुळ-चाना मिरद, दरहरद शंहिरद, ব্যাই ভাবন্য— या किছु शाव, । सांदारप्र बांब, ना वहेरन श्रांकना ! ন্তৰ-আশে বিলে দিশে বেড়ার কাততে -ৰবীতিকা বন্ধিতে চার, व वक् क्षीसरव ! **कृतास** ८२काः कृतास ८५काः नका। करन भारतः---कें(१) ठचंद्र चाकूह मन, কাঁপে ভরাবে ! কি হবে গতি, বিশ্ব গতি, শাছি কোগা লাছে ---ভোষারে বাও, সাণা পুরাও ভূমি এন কাছে ! রাগিণী পুরবী —ভাল কা ওয়ালি। **লাভ কেন ও**বে পাছ, পণগ্ৰাকে বলে এ পি শেলা।

আজি বহে পৰ্ড ক্ষীরণ, 🛍 চণ এই বেদা ।

ভার বাহে কের ত্রিভূবন গড়োডে.

সেখা খনৰ উৎসৰ কাগে. বৰুদ লোভা বৰ স্কীত আম্বেছ মেদা।

রামকেনী—কাওয়াকি

লাও হে ছবন ভারে লাও।

ভৱন উঠে উপৰিৱা প্ৰাদাগকে— স্থাকলে মাজোৰাত। কৰে হাও।

বেই স্থারস পানে, ত্রিস্থবন মাতে,

ভাষা মোরে যাও 🖯

রাগিশী স্মাসাবরী টোড়ি—ভান্ন তেওট।

হিন ভ চলি গেল প্রভু হুবা.

কাততে কাদে হিছা ৷ জীবন গায়ের হতেছে স্বীধ,

कि श्रम अ मुख कीयरम ।

দেশাৰ কেলনে এই লান খুৰ

কাছে খাৰ কি কইৱা 🖰

প্রামু থে, বাইবে ওর, পাব ভরগ। ভূমি যদি ভাক এ অধ্যে !

রাঙ্গিণ ভৈরবী-ভাল একভালা :

স্থা, খোষের রেখে রাখ থোম-ছোরে।
আধানের জেকে মিন্নে চরণ-জনে নাখা থারে, বাঁধ হে প্রেম-ছোরে।
কটোর পরাধে, কুটির বরানে,
ভোষার ও প্রেমের রাখা রেখেছি আঁথার করে।
আপনার অভিযানে, ছুমার দিয়ে প্রাণে,
বর্ষে আছি বলে চাহি আপনা পানে।
বুঝি এবনি অংগ্রহার ভোষারে,—

छचन कारत (फरक कैश्वित काछव चरड़ !

ধুলিতে পুটাটৰ আগমাত্ৰ পাৰাৰভাৱে -

রাগিশী দেশ শিক্ষ-ভাল ঠুংরি।

সংশ্ব-তিমির মারে মা হৈরি গতি হৈ। প্রেম-মালোকে প্রকাশ' সগগতি হে । বিপদে সম্পাদ খেকো না ব্যায় সভত বিয়াল স্বৰুর পুরে— ভোনঃ বিনে অনাথ আমি অতি কে ! বিছে আবং দয়ে সভত ভাল,

আই প্ৰতিদিন হতেছি আৰু, ভৰু চঞ্চল বিনয়ে মডি ছে— নিবায়' নিবায়' আগেয় জলন,

কাট হে কাট ছে এ খারা-বন্ধদ, রাখ রাখ চর্পে এ মিনজি হে !

রারিণী আলাইছা—তাল আড়াঠেকা।

ক্লায়েতে চারিধার, করিয়াছে অয়কার, নরনে ভোষার ক্যোতি অধিক মুটেচে তাই !

চৌদিকে বিশাদ-বোরে, খেরিয়া ফেলেয়ে খোরে,

তোৰার স্থানন্দ কৃষ মদমে দেখিতে পাই গু কেলিয়া গোতের ছারা, বৃষ্ণা কিবে পার পার.

কোলরা শোকের ছারা, বৃত্যু কিবে পার পার. বক্তমের ধন বত কেছে কৈছে দিরে বার ;—

তবু দে মৃত্যুত বাকে, অমৃত মৃত্তি রাজে, মৃত্যুগোক গরিহারি এই মুখ পানে চাই চু ভোষার আবাদ বাবী, গুনিকে গেয়েছি প্রজু,
যিছে কর নিছে শোক আমি করিব না কয় ;
হলমের বাধা কব, প্রকৃত বাহিমা লব-তোষার লতম কোলে, পেছেছি পেয়েছি ঠাই !
রাগিনী ইমন কল্যাণ - তাল তেওৱা।
নতা মধন গোষময় তুবি,

ব্জ বস্প থেবৰর পুৰি:

এবলোজি ভূমি অককারে:
ভূমি সদা বার হাছে বিহালো,
ভূম আনা সেই পাসরে—
সব হুব আনা সেই পাসরে!

ভোষার ভালে, ভোষার বাবেন. ভব নামে ভভ মাধুরী ; বেই ভক্ত ধেই ভাষে.

বেহ ভক্ত দেহ জাবে. ভূমি জানাও বাবে নেই জাকে.—

ওহে ভূমি জানাও যাবে দেই জানে।

য়াগিশ্ব বেহাগ—তাল চৌতাল।

বাবী ভূমি এন আৰু, সন্তকার সময় নাম, পালে মান পাই সাক, ভাকি হে ভোমারে ! कक्षम उरिष्ट्र कारन, यस चाकि नाहि पारन, भव छद्र नाहि नाम चाभन चीवारत । विक विक चनव यस, विकल विवद-क्षय, विकल चनिक (क्षेत्र हुँगैता शह रोहवार ।

সন্ধাপে হুৰত্ব গছে, মহনে কঞ্চবাত্তি বৰে, বাঞ্জিকে বিবছ-পিপালা বিবন বিব-বিকারে !

রাগিষ্ট দেশ—ভাল কাওয়ালি।

হার কে জিবে জার সাজন। ! প্রকলে গিয়েছে হে ভূমি খেও না,

ठाक ध्यक्त सहरम खालू, तीन क्यीन करन !

চারি সিকে চাই হেলি মা কাহারে,

কেন গেলে কেবে একেল্য স্থাধারে, বের ছে, শুক্ত কবন যম।

ৰাণিট পলিভাগোৱী—ভাক বঁণপভাল।

ক্ষর-লম্মন-বনে নিত্ত এ মিধেজনে, এব হে স্থানস্থায়, এব চির-সুম্বর।

কৰ হে আনক্ষর, এব চর-ক্ষর। বেশকৈ তব ঞ্জেবমূখ পাবরি দর্ক চ্থ,

বিরহ-কাতর ত**ও চিত্রসারে** বিহর ্

ওত্তিৰ ওত্ত্তমাই আৰু এ জীবনে, বাৰ্থ এ নৱ-জনৰ স্কল কৰ প্ৰিয়ন্তম ; মধুৰ চিন্ন স্কীতে ধ্বনিত কর অস্কর, ৰান্তিৰে জীবনে মনে হিলানিশা ক্লা-নিকর ;

রাগিণী দিক্স—ভাল টুংরি।

দ্বন বেছনা বহিয়া প্রস্কু, প্রসেচি তব কারে !

দুমি অবর্ধানী স্বরুদ্বানী, স্কলি জানিছ বে,—

বক হুংখ লাভ লাহিল্য ল্বট আর জানাইব কারে !

অপরাধ কত করেচি নাব, নোহ-পাশে পড়ে ;

দুবি ভাড়া প্রস্কু, মার্ক্তনা কেহ করিবে না সংসারে !

স্ব বাসনা দিব বিসর্কান, কোমার প্রেম-পাধারে ;

স্ব বিরুহ বিজেব ভূলিব, তব মিলন অস্ত-ধারে !

আর আপন ভাবদা পারি মা ভাবিতে, ভূমি লহু বোর ভার ;

গরিপ্রান্ত জনে প্রভু, লহু হাও সংসার-সাধ্ব-পারে !

বেশাবলী — রূপক।

ছে যন ভারে দেশ আঁথি বুলিয়ে। বিনি ভারেন স্বা ভবাব। দবাৰে ছাতি একু কৰ ভাৰে, কেহ মন বন বোৰন বাৰ ভাৰ শ্বীনে। বালিণী কানাড়া—ভাল চৌতাল ।

८१ नहा क्षेत्रम समी,

কত অসংখ্য প্ৰহৃত্যা তপন চক্ৰ বাৰণ করে তোকার বাহু,

নরপতি ভূমাপতি হে দেববন্দা !

ধন্ত বস্ত ভূমি ধরেশ. খন্ত গাঁকে সর্ব্ধ দেশ.

বৰ্ধে মৰ্কো বিখলোকে এক ইল।

শশ্ব নাহি ভানে, মহাকাল মহাকাশ গীত ছম্মে করে এলেভিয়ঃ

সাত ছব্দে করে প্রাদাক্ষ ; কব ক্ষত চর্বে শর্মাপত লীন্তীন,

दर वाणा विश्वतक !

म्मा स्वरूपक्ष !

রাগিনী ভৈরবী—ভাল ঝাঁপভাল।

रहित कर दिसम पूर्यकालि — मृत दम भ्रम्य प्रमालि । ভূটিৰ বন গ্ৰাণ বৰ তথ চৰণ-বাদাৰে. বিভূ হ্ৰহ-ক্ষমৰ কৰা পাতি। তথ্য বহন-ক্ষোতিকণ, সামি,

ডক্রণ রবি-কিন্নণ উঠে জাগি।

নক্ষম পুলি বিধাজন বছন তুলি চাহিল। তৰ দৰ্শ প্ৰশাস্থ নালি।

গৰন-ডল মসম হল গুড় ভব হালিতে,

উঠিল **মৃটি কড ক্তুৰ পাঁতি**— হৈৰি তৰ বিষদ মুখ ভাতি ৷

क्षिमिक यम विश्वत कनकारम,

গীত হব ধার তব গানে। পুরু গগনে লগত লাগি উঠি গাহিল,

পূৰ্ব সৰ ভব গুটিভ কামে :

বোষ-এন পান করি, গান করি কানমে, উঠিল সন্ত্রাণ যথ বাতি—

হেরি তব বিষদ মুখভাতি।

রাণিশ্ব হান্দির—ভাল তেওরা :

পার কত কুরে আছে লে সামক্ষান ! সাধি প্রান্ত আমি সত্ত আমি পথ নাটি সামি। রবি বার অভাচনে, জীবারে চাকে ধরণী.
কর কুণা অনাথে, যে বিশক্ষনজননি ;
অভুঞ্জ বাসনা লাগি, কিবিবাহি পথে পথে,
রুণা খেলা হুখা খেলা রুখা খেলা সেল বাহ ;
আজি ব্যান্থীয়ণে, বহ শংক্ষি-নিকেতনে,
বেহ কর প্রশনে, চির শাক্ষি দেহ আনি !

বাগিণী দেশ—ভাল একভালা ।

ম্যামার সভ্য মিখ্যা সকলি ভূলারে হাও.

সাবার সাবস্থে তারাও 🖰

ন। চাহি ভৰ্ক দা চাহি যুক্তি,

না বানি বন্ধ না কানি যুক্তি,

(छोसाउ विश्ववाणिमी हेक्स जामात्र जवात कागाथ !

সকল বিশ্ব ভূবিয়া যাকু শাক্তি পাধারে,

স্ব কুণ জুংগ বামিলা আৰু জ্বয় যাকালে.

নৱল বাজা নকন শৰ, নকন চেইঃ হউক গ্ৰন্থ.

ভোষার চিক্তরিনী বাদী শামার সম্বন্ধে ভুমাও!

রাগিণী দেও সাদ্ধার—ভাল চৌভাল।

আজি ওছ তর প্রাতে কি বা শোভা দেখাৰে.
শাবিশোক জোভিলোক প্রকাশি !
মিবিল নীল থকর বিগাছিলা দিক্ দিগছে,
আরবিদা ববি শশী ভালা—
পুণ্য শহিষা উঠে বিভাসি !

রাসিই বাহার—ভাগ চৌভাব।

আজি বয় যন চাকে জীবন-বছুৱে ! সেই জনমে সৱগে নিভঃ সলী— মিশি দিম কুৰে শোকে,

লেই চিব আনক্ষ, বিষশ চিব ক্ষ্যা, বুগে মুগে কভ নৰ নথ লোকে নিয়ম্ভ শহণ :

পুৰে মুক্তি পৰ কৰা কোৰে কোকে কাৰে পুৱা শাক্তি পুৰুষ কোম. পুৱা মুক্তি পুৰুষ কোম.

নেই অন্তৰ্ভদ চিন কুক্তর আড়ু চিক্ত-নথা, ধর্মঅর্থকামজনগরাজা, ক্ষত্র হবণ গ

য়াসি^মুবিভাস—ভাল একভালা ।

(আজি) প্রধানি জোনারে চলিব নাব, লংবার-কাজে ((ভূমি) আনার নরবে নরম রেখে। অস্তর নাবে :

ৰুদ্য-(প্ৰতা ব্ৰেছ প্ৰাৰে, মন ৰেন ভাছা নিৰত কাৰে,

দল-দেৰতা বৰেছ প্ৰাদে, মন বেন তাহা নেৰত কানে, পাশের চিল্কা করে বেন ধৰি ছঃবহ লালে :

সৰ কসৱহে সাৱা হিন্দান, গুনি জনাহি সঙ্গীত গান,

স্বার সঙ্গে বেদ অধিশ্রও ভোষার স্ক রাজে। বিজ্ঞেন নিবেদে ময়নে বচনে, স্কল কর্মে স্কল কনে,

বকল হলভোৱে বেন বলল বালে :

রাণিণী কেদারা—ভাগ চৌতাল।

আছি কোন্ধন হতে বিশে বাহারে

কোন্ বনে করে বঞ্চিত ;

ভৰ চহণ কৰল রতন বেণুকা

প্ৰহয়ে আছে বঞ্চিত। কন্ধ নিঠুৱ কঠোৱ ধরণে ধরণে,

भर्ष मानाद्य नेगा नवस्य ह

ভকু প্রাণ মন শ্বীবৃথ পরলে। পরে পলে পুলঞ্চাকিত। আজি কিনের পিপার। চি.উন্ন না. ৬৫১
প্রম প্রাণ গ্রন্ত গ

চিতে চিন্তুক্য বছর মধ্যার হা

ক্তর্ত্ত ব প্রস্তুত্ব হা হা হাই বাব
আমি বাকি চিত্র প্রান্তিত হ

বাক ধাক চিত্র প্রস্তুত্ব

রাগিনী কুপানী—ক্তর্থ্য ব্যক্ত হি

আৰি এ চারত ক্ষিত হে

হীনতাপ্তে মন্দিত হে।

নাহি পৌলব নাহি বিচারণা,
ভট্টন তপজা সত্য সাহনা,
অভবে কাহিবে বর্ণে করে

স্কলি এক-বিধন্ধিত হে।

বিজ্ঞ সাধিত পৃথিপত্তে,
বৃনি-বিশ্লীত স্থিকরে;

কল্ল, ভোষার বিধারণ পঞ্জে

কৰ লাহৰ সুচনঃ **ক্ৰিছ হে** !

नकार के प्राचीन यहरत खड़ीया.

ब्राह्म अंतर ५ फर महिल

done y first about a state of

ক্রণায় নবকে **বহুতে হে ।**

क वृंद्ध ह

ন্ধান জন হৈ মন সিক্স**ছিছ, কৃমি** লগতে তালন **লিবেছ**।

ৰূপৰ ১৯ বলে ৩খ **চেয়েছিছ, ভূমি**

an ern mu fetre !

(नवा करत्र)

(হুখ দিলে জাবার নর। করে)

ব্যর দাহার শত খা্থে ছিল,

শক্ষ শাৰ্কের সাধনে 🥫

ভাষাত্তে কেননে কুড়ারে আনিবে, বাঁথিকে ভঞ্জি-ইাননে ১ (क्ष्णंद এবে) (শত বান বতে কুছারে এবে)

(ব্লা হড়ে ভাবে কুছারে এবে)

হব কুব করে হারে বারে নোলে

কড বিকে কড বৌজানে;

ছবি যে আমার কড বাননার,

এবার শে কথা বোকালে ॥

(বুআরে হিলে) (সমরে লাসি বুকারে বিলে)

(ভূমি কে হও আমার বুকারে দিলে)

ককণা ভোমার কোন্ পথ দিয়ে

কোবা নিয়ে বার কাহারে !

সকনা বেকিহ নরন বেলিরে,

এনেছ ভোমারি ছুরারে ॥

(আমি না কানিতে) (কোবা বিয়ে আমার এনেছ

আমি না কানিতে) ।

রাপিনী কাল্যংড়া---ভাল ঠুংরি।

ইচ্ছা থবে বাবে কইলো পাৰে ; পূকা-কুছুৰে বহিনা অঞ্জন আছি থনে অধনিত্ব কিনাৰে । বত দিল ৱাব তোৰা মূৰ চাৰি. कृति मेटने जुन क मुस्तादित । ভাকিশে ৰখনি ভোষার সেবকে,

ক্ৰভ চৰি ৰাইব ছাড়ি বহাছে।

রাসিণী কেদারা—ভাগ স্তরকাঁকতাল।

क्षेद्ध हम चूमिम चाहेत.

আনল গৌগৰ উচ্চ্ বিলা ! আজি বসন্ত আগত সমূদ হতে

७७-ऊपय-पूष-बिक्रक : सूर्विम कारेग !

কীৰ্ত্তৰ ৷

श्रद जीवम-वहरू,

ওকে সাবদ হলাত গ

লাহি বর্ষের কথা মন্তর বাধা

किट्टरे मारि कर ;

क्षत्र मीयम यस हत्रत्य क्रिक्

वृत्तिहा नर मन !---

```
( বিশ্ব চৰণ্ডলে— )
( কথা যা ছিল বিশ্ব চরণ্ডলে )
( প্রাণের বেখো বুলে লও—বিশ্ব চৰণ্ডলে )
আমি কি আরু কব !
এই সংসারণ্থ সর্বট অভি
ফণ্টকরর (ই ;
আমি মীরের বাব কলতে লয়ে
(প্রযক্ষতি চব !
( মীরের বাব-)
পাধের কাটা মান্ব না—নীরবে বাব )
কারে বাধার কান্ব না—নীরবে বাব )
আমি কি আরু কব !
আমি স্ব ভূব স্ব ভূজ করিল্
প্রিয় অপ্রিয় হে ;
```

ভূমি নিজ হাতে বাধা সঁপিবে, কালা মাধায় ভূলিয়া লব গু

(ভুগ হুগ তৰ সদৃধ্যি ব'লে মাৰায় লগ । আমি কি কায় কৰ।

(चानि रांशाप्र मन---)

(বাহা সিবে ভাই সাধ্যে লব)

অগবাদ বহি কৰে থাকি পাৰ লাকত যদি কৰে। তবে পৰাৰ্থপ্ৰৈর ছিছে। ছে দিয়ে। ८रम्बा सर सर । (सिंदश दवरना—) । ৰদি ভাল বোক হিছে: বেংনা) । বিচারে বুলি ছোবী হাই—ছিবো বেম্ম। শাসি কি আৰু কৰ্ তর ফেলো না দুরে—ছিবস্পেং ভেকে নিয়ে চরণে : তুমি ছাড়া ৭.বে কি আছে সাবার মৃত্যু-জাধার ভব। । লিয়ো চৰংশ—) (ভবের খেলা নার। হ'লে—দিরে। চরবে (प्रिन क्रुवाहरन नीममाथ--- मिर्मा हवरन) আমি কি আর কং ৷

কীৰ্ত্তন 1

কে মানিত ভূমি ডাকিবে মানাছে: ছিকাৰ বিস্তাৰণৰ ।

সংসার কোরে মহাবোহবোরে

হিল সহা বিবে স্থন ।

(বিবে ছিল বিবে ছিল হে আমার) (বোহ যোরে;

(মহাবোহে)

আপনার হাতে হিবে ধে ধেমন।

वानारच स्वमन्दन :

কে লানিত হবে আমার এয়ন

গুত দিন গুত লগম। (জানিবে কানিবে হে আহি স্বপনে)

(আবার এবন ভাগা হবে, আমি জানিনে স্কানিমে ছে)

জানি না কখন করণা-**মরুণ** ইটিখ উল্লাচনে ;

্**দৰিকে দে**খিতে কিয়**ে পৃত্তি**ল

আমার হৃদয়-প্রণ : আমার হৃদয়-প্রনার চর্ণ-কিরণে)

। জনর-সসম পৃত্তিল) (ভোষার চরণ-কৈরণে) (ভোষার ফরুণা-পারুণে)

ভোষার সমৃত্যাগর হইতে

ৰতা আদিল কৰে ; মদমে খাহিৰে ৰঙ বাঁৰ ছিল

कश्य हरेन छत्रम ।

(যত বাধ ছিল বেধানে, তেঙে গেল তেনে গেল হে)

সুবাভাদ তুমি আপনি দিয়েছ,

প্রাণে হিবেছ আশা ; আমার জীবসভ্রণী বইবে

ভোষার চরণে যগন। (ভোষার চরণে পিরে লাগিবে—আগার বাীব্যভয়ণী)

(তোলার চয়নে বিয়ে লাগেবে—সামরে নাংবনতথক) (অক্তর চরণে বিয়ে লালিবে)

রাগিণী সিদ্ধু--তাল আড়াঠেকা ।

কে বসিলে আধি হলাসনে ভূবদেশৰ প্ৰভূ, আগাইলে অহপৰ কুজর লোভঃ যে হুংয়েছে ।

স্হ্ৰা সূচিৰ কুল মঞ্জী গুকাৰো উল্লেড.

থাৰাৰে বহে সুধ্য ৰাৱা ৷

রাগিণী শিক্ষ্ডা—ভাশ কাঁপভাল ।

কেবদে রাখিবি কোনা ঠারে কুডারে,

কেবনে রাখেবে ভোরা কারে বুকারে, চন্দ্রমা তর্পন ভারা আপন আলোক ছারে ?

হে বিশুল সংলার, হুখে হুত্রে**গ**ইবার,

কতবাৰ রাধিবি চাকি তাঁহারে কুলেলিকায় 😲

আত্মা-বিহারী তিনি হবরে উদয় তাঁর, নব নব মহিলা ভাগে, নব নব কিবশ ভাগ।

রাপিণী বেহাগ—তাল কাওয়ালি।

वित्रत्योः, (ऋष् ना साद्य (ऋष् मा ! त्रःतात त्रश्रत निर्केट-निर्केट,

নিৰ্ভান সম্বাদ সংল রহ। বাংনের হও ধন, অবাধের নাথ হও হে,

भरत्वर यव !

জরা-ভারাভূবে মধীন কর.

ওচে ভূমানাপর 🖯

রাগিণী ভৈরবী - তাল বাঁপতাল ৷

লানি হে যবে প্রভাত হবে, ভোষার স্বপা-ভর্নী,

দইবে খোরে ভবসাগর-ফিলারে : (কে প্রভূ)

কৰি না ভয়, তোৰাবি ছয় গাহিয়া বাব চৰিয়া,

দীভাৰ আদি তৰ অমৃত ছয়াৱে। (হে এছে)

কানি যে ভূমি মূপে ভূপে ভোমার বাচ বেনিয়া, রেংইছ যোগে তব কানীম ভূগনে; জনম লোৱে বিরেছ তুবি আলোক হতে আলোকে,

कोरन २८७ निस्मह नव कोवरने। (হে প্রভূ)

ভানি হে নাথ পুণ্যপাপে হুবহ বোর বতত,

শ্বান আহে তব নয়ন বনুৰে। ((京朝獎)

পাৰার হাতে তোষার হাত রয়েছে দিনবলনী, प्रकृत भरत विभारत स्तुरंत सम्मात्ता । ((使 団要))

লানি হে জানি জীবন বন বিষদ কড় হবে না. দিৰে মা কেলি বিদ্যাপ্তয় পাৰাছে :

এমন ছিন আসিবে ধবে কতুণ্ডিরে আপনি,

কুৰের মত ভূলিয়া লবে তাথারে : (হে প্রভূ)

কীৰ্ম্বন ।

ভূমি কাছে নাই বলে হের বুৰা তাই.

আমি বড় আমি বড় বৰিছে সৰাই -

(সবাই বড় হল ছে)

(সবার বড় কাচে নেই বলে,

দ্বাই বড় বল হে)

(ডোমার দেখিনে বলে,

তোমার পাইনে বলে,

नवारे वकु धन (६)

নাৰ, তুৰি একবাৰ এব বাসি মুখে, এরা রাশ হরে বাক্ জোমার কছুগে। (লাকে মান হোকু ছে) ্ পানারে বারা ভুলারেছিল, गारक प्रोन (सोक् (र.,) (তেখোৰে যাবা চেকেছিল, লাকে মান হোকু হে) কোধা তব প্রেমবৃধ বিসম্বেদ্য হালি, আমারে ভোষার মারে কর গে৷ উদাসী ! (উদাস কৰা ছে) (ভোষার থোমে, ভোষার মধুর স্থান. উপাদ কর হে } কুদ্র আমি করিভেছে বড় শহড়ার. তাৰ ভাৰ ভাৰ মাধ অভিমান তাৰ ! (অভিযান চুর্ব কর হে. জোমার প্রতলে হান চুর্ব কয় ছে.

পদানত করে বাম চুর্ব কর হে 🕽

রাগিণী স্থালা ভৈরোঁ—ভাল ভেওরা।

ভোষারি নামে নম্ন মেলির পুণা প্রভাবে পান্দি,
ভোষারি নামে খুনিগ হলর শতন্ত-ললরাজি।
ভোষারি নামে নিবিত্ব ভিমিরে স্টুটন কমক লেখা,
ভোষারি নামে উঠিল গগনে কিরণ-বাণা বাজি।
ভোষারি নামে খুর্ক ভোগণে খুলিল সিক্ছার,
বাহিরিক হবি নবান আলোকে দীও মুকুট মাজি।
ভোষারি নামে কাবন সাগরে লাগিল লহরী বীলা,
ভোষারি নামে কাবন সাগরে লাগিল লহরী বীলা,
ভোষারি নামে কাবন সাগরে লাগিল লহরী বীলা,

HULL didla - Siel al 401.

ভোমারি সেহে পালিছ মেবে,

কৃষিই গ্রু গ্রু বে ।

আমার প্রাণ জোমারি লাম,

কুমিই গ্রু গ্রু বে !

পিতার বন্দে রেখেছ খোরে,

কনম দিয়েছ কননী কোডে,

বৈধেছ প্রার প্রগর-ডোরে,

ছুমিই ধৰু ধৰু হে !

ভোষাৰ বিশাস বিশুল ভ্ৰম,
কৰেছ আয়ার নরন-লোভন,
কটা সিলি বন স্বাস শোভন,
ভূমিই গড় গড় লে !
ক্লের বাহিলে, মনেশে বিদেশে,
কুলে বুগালো নিবেৰে নিবেৰে,
কনৰে মহাৰে পোকে আমন্দে,
ভূমিই বল্ল বল্ল হে গ

রাগিণী ছারানট--জাল চৌতাল।

তোৰারি নেবক কর হে আজি হতে আমারে।
চিত্তবাৰে দিবারাত, আদেশ তব দেহ নাথ,
তোমার কর্মে রাখ বিখ-ছুরারে!
কর ছিল লোহপাল, সকল ত্ব আশা,
লোকতর, ব্য করি হাও দাও!
বত রাখ ক্রাণে, দীর্ঘে দিয়ভিবানে,
নর কর আনক্ষ রস্বাধে।

রাগিদী ইমন--তাল তেওবা ।

ভোষারি বাণিক জীবনকুকে चारम (सम नना चारम (नो । ভোলারি খালন র্যরণায়ে रांटक दरन गुरा चारक (गा ! তৰ্মধ্যসন্ধ-নন্দিত ছিলি কুম্মর স্থাবনে s তৰ পৰৱেপু যাবি বহে তত্ বালে বেন বলা বালে গে। দ্ধ বিৰেম্ন কুৱে দায় দেশ তৰ দক্ত ময়ে ; दिकारन बाधुषी कृत्रात वास्तित তৰ স্কীত ছন্দ্ৰে ্ ওব নিৰ্মান নীৱৰ হাজ বেরি শবর ব্যাপিয়া ; তৰ গৌহৰে সকল গৰ্ম লাকে বেন সহালাকে গে। রাগিণী পিলু—ভাল মধ্যমান : বিদ্যবার রে দিন বার বিধানে,

বার্ব কোলাহলে, ছলনার, বিক্লা বাসমার । এগেছ কণতরে ক্পপরে কাইবে চলে, জনন কাটে যুগাহ বাসবিবাদে কুমুম্বার ।

রাণিণী আডানা—তাল কঁপেভাল।

নিজ্য-সভ্যে চিন্তন ক্যমে বিষল হচয়ে, নিৰ্মন সচল পৃহতি য়াগ ধয়ি স্তত।

সংশয়-রূশংস সংসারে প্রশাস্থ রহ, ভার ওভ ইজা মরি বিনয়ে রহ বিষত।

বাদদা কর কর, চুর কর ভূতে ভর, ভোল প্রদর হুবে বার্কসুধ কাল্যচুধ,

থেখ-খানকরদে নিরত রহ নিরত।

পিশালং হার নাহি মিটিল, নাহি মিটিল ট

রাগি**নী** ভৈরবী—তাল কাওয়ালি।

বিব্যবস পাৰে জন্ন জনু প্রাংশ,

বিস্তি কৰি যে কয়যোগে, ৰুড়াও সংগাত-বাহ তাহ থোবের অমৃতি :

রাসিশী দেশ—ভাল একভালা।

গ্ৰছ, থেনেছি খনেন খেলা,

এবে জোখার ফ্রোড় চাবি !

প্রান্ত সংখ্যে হে ভোষারি প্রদান চাহি ! আজি চিয়াতর প্রানে.

তৰ শাক্ষিবারি চাহি ৷

ঋাৰি সৰ্ববিভ ছাড়ি.

ভোষার দিহ্য নিহ্য কাহি !

রাগি**ট জিল্**ফ্ বারোঁয়া—ভাল হুর্ক কিভাল ৮

প্ৰতি দিন তব শাধা দাব আৰি ক্ষণুৱ, তুনি দেহ বোৱে কথা, গুলি দেহ খোৱে ক্ৰ : তুমি বদি থাক বনে, বিকচ ক্ৰদানৰে, তুৰি যদি কৰা প্ৰাণ তথা প্ৰেৰে পরিপুর।

তুৰি পেই খোৱে কথা, ভূবি দেহ খোৱে তুর!

তুনি শোন বলি বান, আবার সমূৰ্যে থাকি,
পুৰা বনি করে খান ভোনার উবার আঁথি,
তুবি বহি মুখ পরে, রাখ কর কের্ডরে,

তুনি বহি মুখ হতে দক্ত কর্ছ মূর!

তুনি বহি মুখ হতে দক্ত কর্ছ মূর!

রামিশী কাঞ্চি—ভাল কাঁপতাল।

প্রতিদিন ভাবি, হে দীবনবামী,

কাড়াৰ ভোষাতি সন্ধ্ৰ ।
কয়ি কোড়কত্ত, যে পূথনেশন,
কাড়াৰ ভোষাত্তি সন্ধ্ৰ ।
ভোষাত্ত লগাত্ত আকাশেও ভত্তে,
বিক্ষমে বিবাস কে—
নম্ভ কালে, নামদের কালে,
কাড়াৰ ভোষাত্তি সন্ধ্ৰে ।

তোষার বিচিত্ত এ তব সংসারে,
কর্ম-পারাবার পারে বে—
বিধিন ভূবন লোকের বাবারে,
দীয়ার তোমারি সমূবে!
তোমার এ তবে, বন কর্ম করে
সমাপন হবে হে—
ও গো রাজ্যাক, একাকী নীমবে
হাডার তোমারি সমূবে!

রাগিণী সিদ্ধু—ভাগ একভালা।

প্রেমানন্দে রাধ পূর্ব আমারে হিবস রাত :
বিপত্তবে নির্মি সতত ক্ষম ভোষারে,
চল্ল কর্ম কিরণে ভোষার করুণ নর্ম পাত !
ক্ষম কশলে করি হে পান তব প্রসাধ বাতি,
কৃষ সম্বটে পরশ পাই তব মধন বাত !
কীয়নে আৰু অনৱ দীপ, তব অনৱ আবা,
বরণ অতে হৌক ভোষারি চরণে ক্প্রভাক !

কৰ কৰ বৰ আনক সকৰ জীতি গীতি, হৰৰে বাহিছে একমাত্ৰ ভূমি আনার নাই :

রাগিণী লচ্চাসার—তাল কাঁপেতাল্।

বহে বিহতত শবস্ক শানক বারা !

বাথে শুসীন নভনাতে অনাদি হব,

হাগে শুসা হবিচন্দ্র ভারা ।

একক শব্দু ব্রহাণ্ড হাল্যে,
গরের এক সেই রাজরাজেন্দ্র হালে;

বিশিত নিমেবহত বিশ্ব চর্গে বিবত,

ক্ষুক্র শত ভ্যাতিত বাক্যহারা !

রাগিশী আড়ানা—ভাল চৌভাল।

বাৰী তব বাহ অন্তঃ গগণে লোকে লোকে, তব বাৰী গ্ৰহ চন্দ্ৰ বীপ্ত তপদ তাৰা, ! ত্ব হঃৰ তব বাৰী, কনদ নৱণ বাৰী তোনাৰা, নিজত পতীব তব বাৰী তঞ্চ ব্যৱে বাজি বাহা !

রাগিশী বেহাগ—ভাল চৌভাল ৷

का इत्थ छद वकत नात मूक्त वस्य शंध तः । दीमका श्रंट वक्त ध्रंप, नरनेत्र द्रुप्त मन्य शंध तः । कृष्ठा शंट नदीन बीताम, न्युप्त कन्य शंध तः । कामात हेका रहेर्ड टाकू, ट्यानात हेका नात्व, भागात वार्थ रहेर्ड टाकू, छव यवन नात्व ; व्याप्त दहेर्ड टाक्त रहार्ड, छ्य द्रुष हर्ड नीविद्यार्ड, वार्या हर्ड मान, रहानार्ड (नार्ड, मूळ्य वस्य शंध (द ।

রাণিশী ছারানট—তাল হুরফ কেতাল।

ভক্ত হৃদ্বিকাশ প্রাণবিনোহন,
নব নব কব প্রকাশ, দিক; দিকা চিভগগনে বৃদীধর।
কছু বেলা-বিনাশ বহারত্রভালা,
কছু বিলালে। কর্মর শান্তি ক্যাকর।
চক্তা হর্মণোকসমূল করোল পরে,
ব্রির বিরাজে চিবলিন ন্যল কর রগ;
প্রেষ্ট্র নিরূপন প্রকাশ কর, বাব-বে,
হ্যান ন্যনে পরিপূর্ণ হ্রপ কর কুন্তর।

রাণিণী বড় খংল সারজ তাল একডাকা।

ভূবন হইতে ভূবনবাসী এস আপন বসরে !

ইণ্ড নাকে ব্ৰহনাৰ,

আহে নিত্য নাথ নাথ,
কোখা কিবিছ দিনাবাত

কোবা কিবিছ দিনাবাত

কোবা কিবিছ দিনাবাত

কোবা কিবিছ আমলখান,
কোবা বাজিছে অভ্য নাম,
কোবা পৃত্তিবে সকল কাম

রাগিণী ইমন কল্যাণ—ভাল ভেওরা ১

নিভূত ঋষুত আগছে ৷

শ্বাধিৰে মহাকালে সহাকাল দাৰে,
আমি নানৰ একাকী শ্ৰমি বিশ্বৰে প্ৰতি বিশ্বৰে।
ভূমি আছু বিশ্বনাৰ, জনীয় হৃহত হাবে,
নীয়ৰে একাকী আপন মহিনা নিলয়ে।
অমন্ত এ দেশকালে, অগণ্য এ বীশু লোকে,
ভূমি আছু বোলে চাহি, আদি চাহি ভোলা পানে।

থৰ দৰ্ম পোলাহৰ, শান্তিকৰ চহাচৰ, এক কৃষি, ভোষা মাধে আমি এক। নিৰ্কংছ ।

রাসিণা ভিলক কামোন—ভাল ভেওরা।

হহানকে হের গো সবে শীভরবে

চলে শ্ৰেছিয়াল —

ৰাগতগৰে পভগ্ৰাণী হবি দলী তাহা।

তাঁহা হতে নামে ৰচকীবনমন্প্ৰবাহ,

ভাঁহারে পুরিসা চলেছে ছুটিয়া খনীৰ ভ্ৰমণায়া 🔻

कीर्जन ।

पारत पारत चय रहते। गाँदेः

চিব্ৰ দিন কেন পাই না !

কেন খেদ আলে ভাল-আকালে,

ভোষাৰে বেৰিজে বের মা

(বোহবেরে ভোষারে কেবিকে রের মা)

(ব্ৰহ্ম কৰে বাবে, ভোষানে বেৰিতে বেছ মা)

ক্ষিক আলোকে কাঁখিত প্ৰকে ভোমার হবে গাই হেখিতে : থারাই বারাই সলাহর কর-হারাইরা কেলি চকিতে। (আশ না মিটকে, পলক না পড়িকে) (হুবর না কড়াতে, যারাইয়া কেলি চক্তিতে) কি কৰিলে বল পাটৰ ভোষাৰে. রাধির বাঁধিতে আঁথিতে : এড প্ৰেয় স্থামি কোথা লাব নাথ, ভোষারে জনমে বাবিস্তে। ্লাৰার নাব্য কি বা, তোবারে ভবরে হাবিতে) (লয়: ন) করিলে, কে পারে মধ্যে রাখিতে) (তবি লাগনি না এবে, কে পারে হুহুরে রাখিতে) আৰু কংকে পানে চাহিব না আৰু. করিব হে আমি প্রাণপণ : कृषि पनि यन, अपनि करिय विक्त-राजमा विकर्कन र (স্থিব ঐচরংশ, বিবর-বাসনা বিসক্ষণ) (দিৰ আকাক্ষরে, বিশহ-বাশন। বিশ্বর্জন) (क्रिय रखामाच कानि, विका-वानम) चिनक्रम)

রাখিণী খালোরারি—ভাল চৌভাল ৷

রকাকর হে।

ভাষার কর্ম হইতে ভাষার রক্ষা কর হে !
ভাগন হারা আঁততে নোরে করিছে কলিত হে,
ভাগন চিন্তা প্রাক্তিকে, পামার রক্ষা কর হে !
প্রতিদিম আবি ভাগনি রচিরা ভড়াই মিগাঃ ভাবে,
হলনা ভোর ইইতে যোরে রক্ষা কর হে !
ভাষার করবার রয়েছে রোধিরা হে,
ভাগনা হতে ভাগনার, যোরে রক্ষা কর হে!

রাবিনী আভানা—ভাল কাওরালি।

নহ নহ তুলি বহ বে, তুমিতল হতে, গুলিরাম এ গরাণ, রাথ তব কণা চোগে, রাথ তব নেথ করতনে ! রাথ তারে আলোকে, রাথ তারে অনুতে, রাথ তারে নিয়ত কল্যাণে, রাথ তারে কণা চোগে, রাথ তারে নেথ ক্রতনে !

রাসিণী খট্—ভাদ বঁপেতাদ।

নথা থাক আনকে, সংসাহে নিউলে নিউল প্রাণে !
কাস প্রাতে আনকে, কর কথা আনকে,
সন্ধায় সূহে চল হে থানজ্বানে ।
সঙ্টে স্পাহে থাক কলাথে,
থাক আনকে নিজা অব্যানে !
সভাবে জনা করি থাকা আনকে,

চির-অনৃত-নিক'রে শাভি বনগানে !

রাগিণী গৌড়মলার—ভাল কাওয়ালি। হুগরীন নিশিদিন পরাধীন হয়ে,

ত্ৰমিছ দীৰ প্ৰাণে !

নতত হার ভাবদা শত শত, নিয়ত তীত পীছিত,

শিৱ মত কত অপমানে !

भाम मा त्र भरश हिएई शक्ति स्वत्र.

বেরি ভোরে নিতা রাকে সেই সকর-সালর !

ভোগ শানত শির, তাক বে ভয় ভার, নতত নরন চিতে চাহ তাঁরি প্রেম মুখণারে !

রাগিদী ইমন কল্যাণ—ভাগ ওরক্ষাঞ্ভাগ।

কুমার বাহে মানক ম্বানিক,
সাহ্দিত থোকাজ, মানুর পুনকাকুন !
কুমার কুমে লাগিছে বস্থ পুনাগত,
পুকে বাজিছে রে মানারি বীণা কানি ।
মানুর বিরুদ্ধে করে—
শ্বীভারাসভিত পুমহান সিংহাগনে ক্রিভুবনেরর,
প্রত্তে বির্লোক রোমাজিত,
কর কর বীত গাহে মুরুমর !

রাগিণা হাম্বির—তাল বামার :

হয়ৰে আপো আজি, জাগো আ ভাহার লাখে,
ইতিয়েগে ভার লাখে একাকী ।
লগনে গগনে ছেব নিব্য নরনে, কোন্
নহাপুরুষ আগে বহা ঘোলাসনে,
দিবিল কালে জড়ে জীবে করছে
কেছে প্রানে ভরতে ।

রাপিণী বিবিট---ভাল মধ্যমান।

श्रद-दानना पूर्व हल, चाकि यम पूर्व हल, चन गरंग सर्गक सरम (

কি হেপ্তিত পোতা, দিখিল কুবনদাধ চিভয়াকে বনি দ্বির স্থাননে ৷

রাগিণী ইমন কল্যাণ—ভাল একভালা ১

হৰ্মণী হৃদিপ্ৰমে উদিল মলল কণৰে.

নিশিক সুক্ষর ভূবনে

এ কি এ মহা মনুরিয়া।

ভূবিল ফোৰা ছৰ ভূৰ ৰে,

অপার বাভিত সাধরে,

বাহিরে অন্তবে লাগেরে

सप्रे ख्वा-चूबनिया !

गकीय ननीक द्वारकारक.

श्वमित्ह त्रद्धीत शुक्रक.

গ্ৰহণ-অৰ্থ-আলোকে **ेराइ रीप-पीखिया**ः চিত্তশাবে কোনু ব্যৱ, কি বাৰ মধ্যম মন্তে বাংক হে অপত্ৰণ ভৱে.

ধ্যেদের কোৰা গরিনীয়া।

রাসিণী কেদারা—ভাল ধামার।

কলি মন্দির-বাবে বাদে সুমুদ্ধ শুখা। শত মলন শিৰা কৰে ওবন বালো,

উঠে নিৰ্মণ ফুলগৰ !

রাগিণী ছায়ানট--ভাল একতালা।

(६ नवी, यह अस्ट्र वय ।

नरमार्थ नेव कांच्य, गाम कांच्य समस्य तर । দাৰ, ভূমি এব বীরে, ভূৰ হুৰ বাসি নয়নবীরে,

ৰচ আৰাহ জীবন বিচে :---

नरनाटर तन कारण धारन चारन कारत वह ?

রাণিণী ছায়ানট—ভাল একভালা ।

পর দইর: থাকি, ভাই বোর

बोद्या बाज खादा दान ह

क्यां हैं स्वा संत्राय, का नहत क्यां करत संत्र सात ! ननी कर्म क्यां नियां है, क्यां स्थां कि वां विवाद करिय़। क्षां क्यां क्यां वां वां करिय़। क्षां क्यां क्यां वां किंदू शांक, नव संति किंदे ने शिवा क्यां किंद्र, क्रिक क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां, क्रिक व्या क्यां क्यां क्यां क्यां, क्रिक व्या क्यां क्यां क्यां क्यां, स्वां वां क्यां क्यां श्री कांग्र, स्वां वां क्यां क्यां श्री कांग्र, स्वां वां क्यां स्वां क्यां श्री क्यां वां क्यां क्

শনিত বিভাগ—ভাগ একভাগা।

चाह्य इश्व चाह्य मुद्रा, वित्रहरूरम नाटन ; তবুও শাঙ্কি তবু আনন্দ,

তবু অস্ক্র কালে ৷

তবু ব্যাপ নিভাগারা, নাসে পর্ব্য সজ্ঞ ভারা,

ব**সম্ভ নিকুঞ্চে ভা**সে বিচিত্র রাগে ।

কছৰ নিলাৱে বার, তরৰ উঠে, কুকুম করিয়া পড়ে, কুকুম সূঠে;

নাহি কর নাধি লেব, নাহি নাবি সৈঞ্চ বেল,

নেই প্ৰোৱ পাৱে বন হান যাথে।

রাগিণী ভৈরবী—তাল হুরদাঁকা।

আমল ভূষি বামী, বহল ভূমি,

पूर्वि (र पर) इन्दर, बोरननाई !

শোকে হবে তোমারি বানী,

লোকে হুবে তোবাছ বংশ, আগরণ দিবে আনি

নাশিবে হাকুৰ খবসায় ।

চিতৰৰ অৰ্ণিপু তৰ পৰতাত্ত্ব,

তত্ত্ব শাস্তি শতকৰ পুণ্য ধৰু পাৰে;

চাহি আহে সেবক, তব সুদৃষ্টপাতে,

ৰূবে হবে এ ছব-রাত **এতা**ত j

রাগিণী কেদারা--ভাল ভেওরা।

আৰার বিচার ভূমি কয়, তব আপদ করে। বিনের কর্ম আমিচ ভোমার মিচার-করে।

> যদি পূজা করি মিছা বেবতার, শিবে ধরি বচি মিলা আচার.

যদি পাপ মনে করি অবিচার কাহাতো পরে.

শাৰায় বিচার ভূবি কয়, তব শাগন করে :

লোকে যদি কাবে দিয়ে থাকি ভূগ, ভয়ে যয়ে থাকি ধর্মবিষয়ে,

গৰের পীড়ার পেয়ে থাকি সুধ কৰেক ভবে,—

কুমি ৰে জীবন বিজেছ লাখাৰ, কলক যদি হিছে থাকি ভাষ

আপনি বিনাল করি আপনায় বোছের তরে:

স্থাপান বিনাদ কার আগনার বোহের তরে, স্থামার বিচার ভূবি কর, তব স্থাপন করে :

শঙ্করা—ভাগ চৌতান।

আমারে কর জীবন গান---শ্রেরণ কর অক্তরে তব আহ্বান। আসিছে ৰত বার কছ,
গাই শত হায়াই শত,
ভোষারি গারে রাব জচল সোর আশ।
লাও নোরে বহল ছত,
বার্থ কর দ্রে প্রহত,
ধামারে ফিফল সন্ধান, লাগাও চিতে সভ্যঞান।
লাতে কতিতে সূবে শোকে,
ক্ষকারে বিধা আলোকে,
নির্জয়ে বহি বিশ্বল মনে তব বিধান।

রাগিণী সিদ্ধু বারেঁ।য়া—ভাল আঁপতাল।

আৰি কি বলে কয়িব নিবেৰন, আৰার হুদই প্রাণ্যন। চিত্তে আদি বরা করি, মিজে সহ অপক্ষি, কর ভারে আপ্নায়ি ধ্য— আয়ার হুবয় প্রাণ্যন। গুৰু বুলি গুৰু ছাই,

মূল্য থান কিছু নাই,

মূল্য থান কিছু নাই,

মূল্য থান কিছু নাই,

কাৰ্নি তব প্ৰশাহতম !

তোষানি গৌৱনে বনে,

আনান গৌৱন বনে,

বন তবে দিন নিস্কান,—

আনান ক্ষর প্রান নম।

রাণিণী বাহার—ভাল আডাঠেকা।

ভীখার খানদাখারা দ্রগতে থেডেছে বরে,
এব ববে নরনারী আপন হাদহ গরে !
সে আনখে উগবন, বিকশিত ভালেন,
শে আনখে ধার নদী আনন্দ বারতা করে !
সে পুণ্য নিবার প্রোতে ধিবা করিতেছে হাম,
ভাব বে অমৃতবারা পুরিরা হুদব প্রাণ !
ভোগরা এবেছ তীরে, শৃক্ত কি হাইবে কিয়ে !
শেবে কি নয়ন-নীরে ভূবিবে ভূবিত হ'লে !

চিত্তবিধ এ আকাশ নবীন নীলিখাবর, চিত্তবিদ এ বরণী ঘৌষনে কুটিয়া রয় ; নে আনন্দ-রনপানে, চিত্ত জেন কার্গে লাগে, বহু না সংসার-ভাগে সংসার সাধারে সূরে।

রাপিণী পরজ—তাল রূপক্তা।

পতীর রজনী নানিধ হণতে আর কোনাংল নাই। বহি রহি ৬ণু স্থায় নিশ্ব

ক্ষমি গুমিৰাহে পাই !

সকল বাসনা চিচ্ছে এল কিছে, নিবিছ শাঁবার হুমাল বাহিলে,

প্রদীপ একটি নিৰ্ভ স্করে

व्यक्तिरस्टर् अरु हैं हैं। व्यक्तिय संभाग विविद्य साधुदी,

दर्गा रम भरावाम :

চপন ১৩ন বহরীনীনা গারবারে প্রদান । নীরৰ দৰে হ্লপ্তবাবে, লাভি লাভি লাভি লাভে, অরপ কান্তি নিরভি জন্মবে মুদিতলোচনে চাই।

পুরবী —ভাল একভালা।

বাটে বনে কাছি আন্ধনা,
বাতেছে বহিবা ক্লবন্ধ;
সে বাতানে তথ্যী জানাব না,
বাবা ভোৱা পানে নাহি বন্ধ।
ফিন বার আ খো দিন বার,
দিনবনি বার করে;
নিশার তিনিরে হণদিক বিষ্ণে,
আধিয়া উঠিছে শত তথা!
ববের টিকান্য বল না পো,
বন করে তরু বাই বাই;
গ্রহুলারা ভূমি বেণ্ডা আনো,

দে বিকের পথ চিনি মাই।

এত হিম তরী বাহিলাব,
বে স্থুর পথ বাহিয়া;
শত বার তরী ভূব ভূব করি,
সে পথে ভরসা নাবি পাই!
তীর লাখে থের শত ভোবে
বারা আছে যোর তরীখান;
রসি খুলে দেনে করে মোরে,
ভাসিতে পারিলে বাঁচে প্রাণ!
করে অভ্যান পোনা হাওয়া,
বিবে স্থ আলা জ্যানে,
ভলা বাবে করে যন খোর খবে
বহাসাগরের কর্মান !

तानिनी भद्रक—**ठान का** बदानि ।

ভাক ৰোৱে আছি এ নিপীংগ ! নিজাক্পন কৰে বিশ্বপত, কুৰৱে আসিয়ে নীৱৰে ভাক ৰে, ' ভোষায়ি অমুকে ! আন তথ দীপ এ সম্ভব তিমিরে, বারবার ভাক হন মচেত চিতে :

टिकानी--- ठूरति ।

তোৰার পভাৰা বাবে লাও, ভারে
বহিবারে যাও লকতি !
ভোষার সেবার মহান্ দ্বংশ
সহিবারে হাও ভকতি ;
আমি ভাই চাই ভরিরা পরাণ,
হুংশের বাবে হুংশের অংশ,
ভোমার হাতের বেদমার লান
এড়ায়ে চাছি যা মুক্তি ।
হুল হবে মম হাগার ভূবণ,
বাথে বহি লাও ভঙতি !
বত নিডে চাও, কাল নিজো, বহি
ভোমারে যা হাও ভূলিতে ;
অবর ঘদি কড়াতে না হাও
ভারে কলাৰ ভালতে ।

বাধিয়ো ভাষার যত খুলি জোরে. ৰুজ রাখিলো তোলাগানে লোরে. ধুলার সাধিরে। পরিয়া করে ভোষার চম্বৰ গুলিতে ; ভূলাৰে তাৰিকে সংলায় কৰে. ভৌথারে দিলে মা স্কুলিতে গ্ যে পথ বৃত্তিতে দিয়েছ, বৃত্তিব, বাই বেন তৰ চৰণে। সৰ লাম বেল খহি লয় লোৱে দকল প্রাক্তিবরণে : চুৰ্বৰ পৰা আভবৰত্ন, কত ভ্যাপ শোক বিশ্বহ দহন, জীবনে মৃত্যু করিয়া বছন ল্লাণ পাই যেন সমূপে ; ন্ত্যাবেলৰে কভি গেঃ ভুলার, নিশিক্ষর-চর্ত্তে :

বেহাগ—কাওবালি।

তোষার অনীবে আধ্যন লরে বছ চুরে মানি ধাই — (काषां इत्य (काषां अ मृत्य (काषां विष्क्रम नारे ! मृत्य क्ष रह इत्यम कृष. शृत्य क्ष रह इत्यम कृष. (काषा वर्ष्ण करन बहेता विष्यूर्थ ज्ञापनां पार्य कार्यः विष्यूर्थ ज्ञापनां पार्य कार्यः विष्यूर्थ ज्ञापनां पार्य कार्यः व्याद्यः वाहा विष्युं त्य व्याद्य चार्यः व्याद्यः वाहा विष्युं त्य व्याद्य चार्यः चार्यः वाहा विषयं त्य व्याद्यं चार्यः व्यादः व्याद्य-भानि त्रश्ताः चारः, श्रमक दल्गिक (काषा क्षणां वादः, वीष्याद्य विष्यं श्रम्भ (काषां वाद्यं वादः)

হুরট মন্নার —ভাল একাদশী।

ছ্য়ারে দাও মোরে রাধিল. নিজ্য কল্যাণ কালে হে ' কিবিৰ আহ্বান বানিরা
তোহারি রাজ্যের বাবে হে।
বজিহা অনুখন লালনে,
বব না পড়িরা আলনে,
বৈছে কর্মার জীবন,
বার্থ দিবলের লাজে কে :
আমারে হতে বেন না বিরি
বতন বংগরে;
বিহিধ পথে বেদ দা বিরি
বতন বংগ্রে লাশরে।
অনেক নুপতির লাসনে,
না রহি লভিত আসনে,
কিবির নির্ভয় পৌরবে

সর্ফর্ম।—আড়া ।

ভোৰারি ক্ত্যের নামে কে !

স্থাধরতে হে নাধ, কে ভাকিলে, আদি কেরিছ তব ধ্রেব-রুখ-ছবি। হৈছিছ উদালোকে দিব তব কোলে, জাগে তব ময়নে, প্ৰাতে তই বুৰি। ভূমিতু বনে উপবদে আমক্ষ-গাবা, আৰা চদৰে বহি নিত্য গাহে কৰি।

বাহানা—নবভাল।

मिविष् धम बीवारव व्यक्तिरह अवकाता। यम रव त्याव शाधारव त्याम्त्रम नित्म हाता। विवारत दरव विश्वसान, वक्ष मा कतिरवा गाम, नुसम कति रक्षान व्यान, हेस्स्री त्यावकाता। जाविरता वन कीवरम, प्राविरता कित व्यामा, त्यांकिम क्षेत्र कृत्यम

হাৰিয়ো ভালবাৰা :

সংলারের স্থান স্থান, চলিয়া নেছো হালি বুলে, ভরিয়া সদা রেখো বুকে ভাষায়ি স্থাধায়া চু

ললিভ—-স্তুরফাঁজা ৷

পাছ এখন কেন অনুসিত আছ !

ক্ষেত্ৰ পূপাৰ্থে আংগ বিহক ।

গপন যথম নজন আলোক উল্লাসে,
লোকে লোখে উঠে প্ৰাণ ভবল !

ক্ষ সংখককে ভিনিতে,

ক্যে আৰুত্বভূবে শ্যান ;
ভাগ লাগ চন মলল পথে,

মাঞ্জীয়নে নিশি নহ বিষয়ে বন ।

রাসিনী আড়ানা—ভাল একভালা।

মন্তিরে মম কে আর্মিণ কে !

স্কল পদন অন্তন্তন্তন,

দিশি দিশি পেল মিশি অমানিশি শুরে মুরে !

নকৰ হুৱার আপনি খুলিক, নকৰ প্ৰদীপ আপনি অনিক, নক বীপা কাজিক নক মুখ কুৱে কুৱে।

রাগিণী আসাব্রী—ভাল ঝাঁপভাল।

মনোবোৰৰ পৰ্ম বাৰিনী লোবে, বিলে আমাৰে ৰাগাবে। বৈলি দিলে কম প্ৰাকে মৃত্ত এ শীৰি, কম আৰোক লাগাৱে। বিৰায় খণনগালি কোণ্ডা বিলাইন, শীণার পেল ফিরাবে:

শাল্বিসহনী বাবে চিভক্ৰন, কৃষ্টিৰ আনৰ বাবে।

রাগিণী ভূপনারায়ণ—ভাল একতালা।

মোরা সভ্যের পরে বন,

আজি করিব সমর্শন। কব কর সভ্যের কর) মোর)

যৰি

অবু

ৰুমিৰ বড়া, পুজিৰ সভ্য,

चूँ विश नजा धन ! यत्र कर मरकात्र कर ! হঃৰে দহিতে হয়, वदि -निया हिंदा यह ! क्ष् एकि ধৈক বহিতে বহু, **ভিবৃ** নিখ্যা কর্ম নর 🖠 परि হণ্ড সৃহিত্তে হয়. নিব্যা বাক্য নর ! তবু লৰ লয় সুড্যের লয় ৷ ৰসলকালে আগ. মোল। লালি ক্ষিণ সকলে লান। क्य कर स्थानवर्त्त (লভিব পুৰা, পোডিব পুৰো, ৰোৱা পাহিব পুণ্যপাম : कप्र क्षेत्र महत्वम्य ! दक् कृश्य रक्षिण एइ. শণ্ডত চিন্তা নর ! তৰু

> হৈচ বহিতে হয় ৷ অঞ্জ কৰ্ম সম !

400

```
যদি
         দণ্ড ৰহিতে হয়,
ভয়
          খণ্ড বাক্য নয়,
               लग्न सर अल्लामग्र ।
শেই
         অভয় এখনাৰ,
ৰাছি
           বোলা বাবে কইকাৰ—
           বিনি সকল ভয়ের ভয় !
           করিব না শোক, বা হবার বোকু,
মোরা:
             চৰিব ব্ৰহ্মশ্ব গ্
                वह का उत्पद्ध का ।
          ष्ट्रश्य परितक दत्र,
হয়ি 💮
          মাহি হয় মাহি হয় ৷
কৰ
र्वाप
          देशक वस्तित द्य.
         নাহি ভর নাহি ভর ।
ভগ
          त्रका निक्ते वर्ष,
যদি
          নাহি ভর নাহি খর !
কৰ
               का कर उरधन का ।
          चार्यसम्बद्ध भने,
(संग्र
         ক্রিব বিশ্লম :
বাবি
               कर कर कामक्रमः।
```

50

স্কল দৃশ্ধে সকল বিশ্বে জানন-নিক্তেশ্বর ! কয় কয় জানন্দ্রয় ।

আনন্দ চিত্ৰ-ন্যকে,
আনন্দ স্থানিকৈছে,
আনন্দ স্থানিকৈছে,
আনন্দ স্থানিকালে,
আনন স্থানিকালে,
দুকু বিহুহে লোকে !
আনু কয় আনন্দ্ৰায় !

রামকেন্স —ভাল ভেওরা।

দোৱে, ভাবি লগে যাও মুক্তবারে— ভোবার বিষেত্র সভাতে, আজি এ বছর প্রভাতে ! উদর্যাধির হতে উচ্চে কছ যোৱে— "ভিমিয় বহু হন দীপ্তিসাগতে, বার্থ হাতে কাব, গৈত হতে কাব,

বিষ্ণ শৃত্যা হতে কাবে কাপ তে,

বাতক উন্নত শোভাতে !"

বাহিত্র কর কর পথের যাকে,

বরণ কর যোরে তোনার কাজে !

নিবিত্ জাবরর কর বিজোচন,

মৃক্ত কর স্ব পুরু শোচন,

থোত কর মধ মুঝ লোচন,

তোমার উজ্জ্ব শুলুরোচন,

নবীন নির্মান বিভাতে !

রাগিণী সিদ্ধু ভৈরবী—ভাল কাঁপতাল।

হকি এ আমার ক্ষয় হ্যার,

বধ রহে গোকছু;

ৰাৰ ভেঙে ভূষি এসো যোৰ প্ৰাণে.

কিবিয়া মেয়ে। বা, গ্ৰন্থ <u>!</u>

বন্দি কোনো দিন এ বীণার হারে.

তথ জিল্ল দাস নাহি বৰাৱে,

वदा कात छत् हरिया मेश्वास, किरिया (बार्य मा, व्यष्ट् ! श्री कार्यात कार्यात, श्री धार्यात क्षण्या ना गान, राज्यस्वरन जार्यादा धार्यात, किरिया (श्री मा, व्यष्ट् ! श्री कार्यात्रक रमारे घडतन, किरिया (श्री सा, व्यष्ट् न, किरिया (श्री सा, व्यष्ट् !

রাগিণী ভৈরবী—ভাল একডালা।

বল হাও যোৱে বল হাও, প্রাংশ লাও যোৱ শক্তি; সকল হুম্ব স্টারে, তোনাতে করিতে প্রশ্তি : শরল সূপ্ধে ব্যাতি, সব অপ্যার ক্ষিতে, ৰকল পৰ্ক হমিছে, শৰ্ম করিতে কুমতি 🖠 হৃদরে ভোষারে বুঝিতে, দীবনে ভোগারে পুর্বিতে, হোষার মাকারে **বুঁ বিতে**, চিত্তের চিরবস্থি। তৰ কাম শিহে বহিছে, নংসার-ভাপ সহিতে, ভব-ভোলাহলে রহিতে. নীবৰে কৰিছে খকতি। ভোৱাৰ বিবছবিতে, তব প্রেমরণ লভিতে, গ্ৰহ ভারা শশী হবিতে, হেরিতে ভোষার স্বারতি ! বচৰ মনের অতীতে, ভূবিতে তোমার জ্যোভিতে, মুবে চুবে নাতে কভিতে, ভবিতে ভোষার ভারতী !

রাগিনী বাহার—তাল স্থানীকো :
বালাও তুমি কবি তোরার সমীত স্মধুর,
গন্তীরতর তানে প্রাণে বন !
তথ শীখন কবিবে করকর নির্বন্ধ তব গানে!
বিস্তিব সব সূপ তথ চিন্তা অত্থ বাসনা,
বিচরিবে বিষ্কু ক্লয় বিশ্বন বিশ্বাকে,

রাগিণী বিঁবিট—তাল ঠুংরি।

व्यक्ष्यन व्यक्तिक वीद्य ।

শাক্ত হ'রে ওরে দীন । হেয় চিন্নথরে সকলে সুন্থরে, সর্ভা চরাচর লীন।

শাল্ক হ'রে মম চিক্ত মিরাকুল,

ক্ষা ক্ষাৰ্থ কৰে । ক্ষাৰে নিখিল-ক্ষায়-নিম্ব স্থিত,

হের বিশ্ব চিত্ত-প্রাণ-ভর্কিত, মন্দ্রিভ মিত্র নবীন।

শুক্ততে উপলে জয় সঙ্গীত,

নাহি বিনাশ বিকার বিশোচন,
নাহি হৃত্থ পুথ তাপ ;
বিশাল নিজন নিজন অক্কর,
নাহি করাকর পাপ ।
চির কানক, ধিকাম চিরত্তম,
প্রেম নিরক্কর, ক্যোতি নিরক্কন,
শান্তি দিরাম্র, কান্তি সুনন্দন,
নাতন অক্বিহীন ।

ভিলক কাথোদ—চাল ভার**ফাঁকো**।

শান্তি কর ব্রিবণ নীরও ধারে,
নাথ চিত্ত মাবে !
লুখে ইথে সব কাজে,
নির্কানে জনগ্রাকে ।
উদিত রাথ নাধ, তোযার প্রেমচক্ত্র,
অনিমের মুম লোচনে,
গতীর তিমির মাথে ।

কাণি—গুরুষ কা

শৃষ্ট হাতে কিনি হৈ নাধ পৰে পৰে,

কিনি হৈ তাৰে বাবে,—

চিন্ত তিথানি কৰি মন মিশিকিম চাহে কানে !

চিন্ত না শান্তি কামে, তুকা না তৃতি যানে,

বাংঃ পাই তাই মারাই, তানি মক্রধারে।

সকল বাত্রি চলি বেল, বহি সেল নব বেলঃ,
আগে তিমির কামিনী তাঙিছা গেল নেলা।

কত পর মাছে বাকি, যাব চলি ভিন্না রাখি,
কোধা অলে গৃহপ্রকীপ কোন্ সিতুপারে !

রাগিণী সন্নার—ভাল কাওয়ালি।

নকল কর দে প্রেক্ আজি নজা ।

এ রখনী বোক্ খনোংস্থা ।
বাহির অভার ভূবনচরাচর,
বঙ্গলাকে বাবি এক কর,
তছ সহয় কর বোনে গরসভার,
পুত সম্মে আন পুরাপ্রভা ।

আত্তর্থার তব কর হে আবারিত,
আনৃত উৎদ তব কর উৎদারিত,
গগনে পগনে কর প্রসায়িত,
আতি বিচিত্র তব নিভাশোভা !
দ্ব ভকতে তব আন এ পরিবদে,
বিশুপ চিন্ত যত কর নত তব পদে,
রাজ অধীবর তব চির সম্পাদে,
দ্ব সম্পদ কর হত স্বারা !

ভৈরবী — একভালা ।

সংবরি মবে মন কেন্তে লয়,
কারে না যথন প্রাথ ;
তথনো, যে নাথ, প্রথমি কোমার,
গারি বসে তব গান।
অন্তর্বামী, কন সে আমার
শ্রু মনের রুগ্য উপহাত,
সুশ্বিহীন পূজা-আম্যোকন,

ভক্তিবিদীন তান।

ভাকি তব নাম ৪% কঠে.
শ্বালা করি প্রাথপণে;
নিবিত্ প্রেমের সরস ববনা
বহি মেনে শ্বানে সমে।
সহসা একনা আপনা হইতে,
প্রতি কিবে তুমি ভোকের অমৃতে,
এই তবসায় করি পদতকে,
শ্বন্ধ করম হান।

ইমন কলাগে—ক পিতাল।

সংসারে ভূমি রাখিলে মোরে যে ঘরে,
সেই মতে রব সকল চংগ ভূমিতা।
করুণঃ করিছে নির্মিন্ন নিজ করে,
রাখিয়ে। তাহার একটি চুলার খূমিতা
মোর সব কাজে, মোর স্থ অবসংগ,
সে ভূমার রবে প্রোবারি প্রবেশ ভরে,
সেই হস্তে বায়ু ক্তিখে ক্রমত গবে,
চুগুর চুটতে তব্য প্রশুলি ভূমিতা।

বত আত্রম ভেড়ে ভেড়ে বাম স্বাদী, এক স্বাধ্যয় হতে যেন চিত লাগিয়। : যে অনল তাপ বৰ্গন সহিব আহি, এক নাম পুকে বার বার দেয় লাগিয়।। ৰূপে ভূখনিকৈ ৰোক ভাগ কালে প্ৰাণে, তোলাতি আদেশ বহিলা যেন দে আনে, প্রথ বরম বস্ত আবাত হামে, বৰুল আহাতে তথ সূত্ৰ উঠে ভাগির।। বামকেলি —একভালা। রণম যদৈ ভাতিলে রজনী প্রভাগে,

পূর্ব কর হিয়। মহল কিরণে।

পুৰি (মানে তব কালে, नवीन कड़ क मात्रस्य (व ।

পুলি যোর পুর্বার

ভাক ভোৰাহি তথনে ছে।

ছায়ান্ট—ঝাঁপতাল ।

नम कृषि साथ नरन १८६, दरन चाहि तारे बादा शत ।

नीनाकारण छहे कावा कारन.

बीद्रय विशेष्ट मंगी शहरा.

कृष्महर्ष्म वाद्रि कारन करतः

करन काक्षि कामि कामा भरतः ।

हरन करन कर कृष्मिकरण.

कक्रमका कर कृष्म करन.

मत्रमादीरभव (ध्येमकारव--
माना मिरक मिरक, माना कारन.

माना कुरव कुरव, नाना कारन.

বলে আছি গেই আশা ব্যৱ #

নানা মতে ভূষি লবে যোৱে---

বে কেই খোৱে দিয়েছ সূপ.

ে কের বোলে ।লয়ে**ছ স্থ**ন. বিষয়েছ তীবি পরিচয়,

কাকি-ভেড্যা।

বৰাৱে মানি নবি :

ফে কেছ মোরে ছিয়েছ শ্বৰ হিয়েছ জাঁরি পরিচয়,

স্বারে স্বামি সমি :

শে কেহ ৰোৱে বেশেক ভালো, জেলেছ দরে ভাঁহারি জালো, ভাঁহারি বাখে সবাহি জাদি, পেমেছি জাদি পরিচর, সবারে সামি দ্যি।

। কিছু কাছে এনেছে, আছে, এনেছে ঠাবে প্রাণে,

নব্যরে **আমি** নমি <u>†</u>

বা কিছু দূরে গিয়েছে ছেছে. টেনেছে ভাঁরি পালে.

স্বারে আমি নৰি ৷

শানি বা কাৰি নাহি বা ধানি, মানি বা কামি নাহি বা হানি,

মানি বা আমি নাহ বা যান. নয়ন যেলি নিখিলে আমি

> শেরেছি আঁরি পরিচর, স্বাহে মানি মনি :

দেশ **সন্না**র—ভেওরা।

গরৰ মন ব্রেছ এছে, বিরেছ গছ বাজ ! গেমনে মুখ সমূৰে কৰা, জুলিব লামি আৰু !

জোনারে আমি পেয়েছি বলি, यान गरन ८९ जानात्र कृति, ধরা পাছিত্ব সংসারেতে, করিতে তথ কাল---(कबाम ब्रथ नब्दर्ग छर, তুলিৰ আমি আৰে ! লানিনে নাথ, আমার খনে, ঠাই কোণা যে কোমারি ভরে, নিজেৱে তদ চরণ পরে, স^{*}পিনি হাল বাজ <u>!</u> তোখারে চেমে দিবস যাখী, षाबादि भाग ठाकाई चावि. ভোষাতে ভোগে দেখিনে স্বামী, छव बहिय: नांक.-८कस्यान पृथ शसुर्व छव, **कृतिर वाति वाह**े ভূপ নার!য়ণ—একতালা ।

স্বার মাধারে তোমারে সীকার কবিব হে। স্বার মাধারে তোমারে কদরে বরিব হে। বধু আগদার বলে নহ.
আপন ধরের কোণে নর.
ভগু আগদার হচনার বাবে নকে;
তোগার মহিন। যেখা উজ্জ্বল রয়ে,
সেই স্বামাকে তোসারে আকার করেব হে:
ভালোকে ভূলোকে ভোকার কদরে বহিব কে:

সক্ষি ভেয়াগি ভোষারে স্থাকার করিব বে :
সক্ষি প্রণ করিঃ ভোষারে স্থাকার করি চে :
ক্রেনি ভোষার ক্রেন্স,
কুর্ নুলাই রবে নয়,
কুর্ নিজ্ঞান ব্যানের আগনে নরে ,
তব সংসার যেধা লাগ্রত রহে,
ক্যে সেধার ভোষার স্থাকার করিব রে :

শানি ম, বলিয়া হোষাতে স্বাকার করিব ছে, মানি খনে নাথ, ভোষাতে হনতে বটিব ছে: ভগু শীবনের শ্ববে নর,
ভগু প্রস্তুর ক্থে নর,
ভগু স্থানির সহজ স্থাবারে নতে –
ভূপ শোক যেখা আঁবার করিয়া রতে;
নত ধরে দেখা ভোষারে স্থাকার করিব তে!
নতদের শ্বে ভোষারে হাধ্বে বরিব হে!

বেহাগ—তেওরা 🗈

নিঃকাও আমার আঁবির আবে !

কোনার বৃটি রুগতে লালে !

বন্ধ আকাংশ চরাচর লোকে,

এই অপস্থপ আকৃগ আবোকে,

নাড়াও হে !

আমার পরাণ প্লকে প্লকে,

কোণে চোবে কব দ্বণ মাণে !

এট বে ধরণী চেয়ে বলে আছে, ইহাম ৰাধুহী ৰাজাও হে ! ধূলার বিহালো জাৰ অঞ্চলে, যাজাও হে নাৰ, ইাজাও হে ! বাহা কিছু আছে সকলি ব'ণিয়া,
ভূষন হাপিয়া কীখন ব্যাপিয়া,
বাহাও হে |
বাহাও বেধানে বিরহী এ বিরা,
ভোষারি লাগিয়া একেলা ভাগে !

রাগিশী জীমগলঞ্জী—ভাল আডাঠেকা ।

দিন কুৱাৰ হৈ সংগাতী : ভাক ভাঁৱে ভাক বিলি আবিধারী ! ভোল সহ ভব-ভাৰনা, বদৰে লও হে শাবিকাতি !

নুম—কাওয়ালি।

আজি বত ভারা তব আফানে,
নাবে যোৰ আগৈ ভবি প্রকাশে।
দিখিন তোমার প্রনাছে চুটবা,
খোর বাবে আজি পড়েছে টুটিরা হে,
অব নিশ্নের ব্যরী বত
আবাহি অনে বিকাশে।

বিকে বিসায়ে বত আনস্থ, ৰতিয়াহে এক বতীয় বহু হে, আমাৰ চিতে নিলি একজে, ভোমার মন্মিয়ে উছালে !

আজি কোমোধানে কারেও না লানি, গুনিতে না পাই আজি কারো বাদী হে, অধিল নিবাস আজি এ বকে,

शंचनीय चता विनादन !

সৃপানী—কাওয়ানি।

ভূমি বে আমারে চাও,
আমি দে আমি !
কেন যে মোরে জানাও,
আমি দে আমি !
এ আলোকে ও অখিয়াতে,
কেন ভূমি আপনারে,
ভারাখানি ভিনে স্থাও,
আমি দে আমি !

শারাফিন নামা কাজে, বেল ভূমি নামা কাজে, কড ভূরে ভাক লাও আমি সে কানি ! শারা হ'লে দেয়া-দেয়া, দিনারের শেষ খেরা, কোম্-দিত্-পানে বাও, আমি দে আমি ।

পিনু।

কি সূব বাজে আমার প্রাণে,
ভানিই আনি, বনই ভানে !
কিসের লাগি সমাই জাগি,
ভাভার কাছে কি বন মাগি,
ভাভাই কেন গণ্ডের গানে,
ভানিই জানি, ধনই জানে !
ভারের পাণে এজাত ভানে,

नका साध्य बस्तत बारन :

স্কাল-সাঁকে কৰি বাছে, বিকল করে গ্রুল কালে, বাজার কে কে কিলের ভালে, चानिहे बानि, उनहे बारप :

রাগিণী ইমন কল্যাণ—ভাল ভেওরা।

আৰাৰ নাথা নত করে গাও হৈ তোৰার 6রণ খুলার তলে।

দুক্ত অহ্বার হে আমার

ভূবাও কেথেম **মণে** 1

মিমেরে করিতে গৌরব বান, নিৰেৱে কেবনি করি লগবান,

শালনাবে ওছু খেরিয়া ঘেরিয়া

মূরে মমি পলে পলে -

আমারে না যেন করি প্রচার

অ্যানে আপন ভাজে ;

জেগোৰি ইছা কয় হে পূৰ্ণ व्यामात्र शीवन माइव । যাটি হে তোষার চরৰ শান্তি, পরাধে তোমার শহর কারি, আমারে আড়াল ক্ষিয়া হাড়াও ক্ষর পরবলে।

ইমন ভূপালী--একডালা।

ভূবনেখন হে—
নোচন কর বছন নব
নোচন কর ছে।
ক্রেডু, থোচন কর জয়,
বব বৈছ করহ লয়,
নিজা চকিজ চক্ষণ চিত
কর নিঃসংশ্য ।
ভিনির রাজি অন্ধ হাতী
সমূৰে জন বীপ্ত বীপ ভূমিরা ধর হে!
ভূবনেখন হে—

माञ्च कत्र बढ़ दिशक

लोधन कर रहे ।

হাতৃ, ভৰ প্ৰদান মুখ इ:4 क्टक चू४, ĄŢ. পুলিশভিষ কুর্মাণ চিভ एवर स्थापक । चितित शक्ति पद योजी সমূৰে তব হীয়া দীল ভূলিয়া বন্ন ছে ' सुरसम्बद्ध ८६---ৰোচন কৰ বাৰ্যপাল লোচন কর হে । क्षक, বিরস বিকল প্রাণ, ক্রেম সুলিল দান ; ক্ষতি শীড়িড শামিত চিড कत्र अभावतान । ভিমিন নামি পছ বালী সমূৰে তব দীগু দীপ ভূলিয়া বহু হে 🔉

য়াগিণী বাগেঞ্জী বাহায়—ভাল বাঁপভাল।

নিবিড় **অব্যা**তর বস্থা এল আনে, অপত-বন-স্থাবংশ, চাহি-তৰ পালে ! বহন সৰ্গ নমৰি বন্ধ কৃষিত কৃষ-পাতে, কৃষ-কানন-পৰ্বন পথাপ তব আনে । মৃদ্ধ কোকিল মুখৰ নাজি বিন বাগে,

মর্মান্তি পর্বিত সুকল বন কাঁপে।

प्लमिनि प्रवया सम्बन्ध स्थ्यः (स्थिः, । इ:५ रून रूव त्रव रेनस्ट-व्यवसारम् ।

ইমণ কল্যাণ—চৌতাল।

ভাকি ভোষাৰে কাভরে, 🕛 ধরা কর দীলে, । বাব বে লাব হে অফা চরবে !

ধন কম ভূজ প্ৰাৰ্থি, নকলি নোহৰাৰা, বুবা বুৰা জানিছে, আৰু চাহে যে কোনা পালে গ

রাগিণা বাহার—ভান চৌভান।

দৰ নৰ পদৰ নাৰি

নৰ বন উপৰনে উঠে বিকাশিনা,
ছবিশ প্ৰমে সকীত উঠে বাজি ।

মৰুৱ স্থান্ত আকুণ কুৰদ,
হাতা কৰিছে মম জীবন,

अन अन नाधन-धन, बन तम क्य पूर्व व्यक्ति ।

म्हे महाद---- (वक्काना ।

লোকে বাবে খাবে কিয়ালে।

পুৰাহ্য না হটল,

हचिमा ना होंग,

नः हेडिन जानवरः !

জীবদ ভরি নাধুনী, কি ওড নগ্ৰনে আসিবে।

नाथ, अरह मांच,

कटर करने छन्। यस धन ।

দ্বাধিণী নারেকী কানাড়া--ভাল একভালা।

জীবনে আমার বড় আনন্দ পেৰেছি দিবস মাত ,

স্বাহ বাবাৰে আজিকে ভোষাৰে

হে বিদ ভোৱাৰ কৰং বিৰুখি,

विविद्य भीतन-नाथ ।

হয়ৰে পৰাণ উঠেছে পুলক্ষি,

বে বিন আমার নয়ৰে হয়েছে

চোনারি নরম পাত !
বামে বাবে তৃথি আপনার হাতে

আনে সৌরতে পানে,
বাহির হইতে পরশ করেছ

শক্তর মাথখানে ।
পিতা মাতা প্রাতা সহ পরিবার,
সিক্ত আমার, পুর আমার,

हेमम्—होडान।

ভুলি আছু যোৱ দাখ !

শক্তিরপ ধের কাঁব, আমন্তিত, অভক্তিত, কুরোঁকে, ত্বদেঁ ধেক, বিরকালে, চিড মাথে, বিরে মাতে । ৰাগ বে ৰাগ ৰাগ,
উৎসাহে উলালে,
প্ৰাণ বাঁথ যে ব্যগ-হত্তণ
প্ৰমণক্তি লাগে।
ইাবি আলন বিবাদ,
বিলাল বিধা বিধাদ,
সূব কয় যে।

চল রে,—চল যে কল্যাণে, চল রে অকন্তে, চল রে অলোকে,

চল বলে ! ছুব লোক পরিবর্ত্তি

মিশ লে নিবিদে নিখিলনাথে।

বাগেণ্ডী—তেওয়া ঃ

নিশীৰণয়নে থেকে লাখি যনে

গুলো অন্তঃব্যনী । প্ৰভাৱে প্ৰথম সমূদ নেদিয়া

ফোলারে হেরিব লামি, থগো ক্যান্যানী ! জালিয়া বনিয়া তব্ৰ কালোকে, তোৰাৰ চয়ংশ কৰিয়া পুলকে, মনে তেবে রাখি দিমের কর্ম তোৰারে ন'পিব বাবী, করো অন্তর্গামী ! দিনের কর্ম নামিতে নামিতে তেবে রাখি মনে মনে, কর্ম অকে স্থাধেবার বনিব তোরামি কমে। ঘির অবসানে কাবি বলে মহে, তোরার মিন্মিথ-বিলান নাম্যে, আন্ত প্রাধের ভাবনা বেমনা নীয়বে বাইবে মানি,

সকল পৰা দূহ কৰি দিব. ভোষাৰ প্ৰাভাতিৰ লাখ

আড়ানা —একস্তালা ।

সবারে ভাকিয়া করিব, বেধিব
গাব তব পদ-বেগ্রুপা।
তব আহ্বাস আসিবে ব্যন্ত,
সে কথা কেবনে করিব সোপন দ
সকল বাকে। সকল কর্দ্ধে
গ্রাকানিবে তব আরাধ্যা।
বক্ত নার আমি পোরেছি যে কালে,
সেধিন সকলি বাবে দুরে;
তথু তব মান সেহে মনে হোর
বাজিয়া উঠিবে এক ক্ষুয়ে।
সংগর পশ্চিক সের হেগে যাবে,
ভোমারে বার্ডার মোর মুখভাবে,
ভবসংসার বাভার্যভবেশ
বলে রব ববে আন্তরনা।

বীণা বালাও হে মহ করতে। বছলে বিছনে, বন্ধু, ছবে প্রথম বিপারে, আনশিক্ষ তান কনাও হে মম অকরে।

পূরবী---ধামার।

ইমন কল্যাণ—আড়া চৌতাল।

সংসাদে কোন গুল নাছি নাছি, গুলে জন-চকল-গ্ৰাণ, জীজন কাণে গৰে বহুছি উচোৱি বালে : জন্তবু-সৰা বাজে নিমিল জবৰে স্থপ্নৰীয়, দিশি দিশি দিবানিশি স্থে শোকে

त्मांक-त्मांक सिरंग ।

বাহার—ৰামার।

মৰ অলনে কাৰী শাৰুৰে হালে,

সুগৰ থানে আনন্দ-রাতে :

থুকে দাও সুবার সৰ,

স্বাত্তে ভাক ডাক,

নাহি বেখে কোখাও কোনো বাধা,
আহা ভাবি নকীতে যদ আগ যাতে !

ইমন কল্যাণ—তাল কম্পক :

বিশদে মোরে রক্ষা কর, এ নকে দেরে আর্থনা, বিশদে আমি না যেন করি কয়। তুঃব ভাপে বাৰিভ চিতে নাই বা বিলে সাছনা,

হুংগে দেন কৰিতে পানি জয় !

নহার নোর না ববি জুটে,

নিজের বল না কেন টুটে,

সমোরেতে ভাইলে কতি, গতিলে ভারু বঞ্চনা,

নিজের মনে না বেন মানি কর ।

আমারে ভূমি করিবে আণ্, এ নহে বোর আর্থনা,

ভরিতে পারি শক্তি বেন রয় ।

আমার ভার লাঘর করি, নাই বা বিলে সাছনা,

বহিছে পারি এমনি বেন হয় !

নম্পিরে স্থাধ্ব নিনে,

ভোরারি মুধ করিব চিলে,

সিদ্ধু কাড়ি—খাঁপভাল।

চরণ ধানি **ও**নি ওব নাথ, ঘীৰদ-ভীৱে, কড নীৱৰ নিবলনে, কড বধু-সৰীৱে।

ছুখের হাতে নিখিল বহা বেদিল করে বঞ্চনা, ভোষারে কেন না করি সংগ্র। সগনে অহ-ভারচের, অনিমেরে চাহি নর, ভারনা-আত হারের বর বীরে এভাতে গীরে : চাহিল বহে আধি মন, ভূঞাতুর পাধীসন, লবৰ বহেছি মেলি চিড-গড়ীরে ; কোনু বড প্রাতে, শাভাবে হছি-মারে,

ভূলির 🖿 হার হার ভূবিরা আনক্ষনীরে 🛚

ভীমপল নী—তেওরা।

বিপুল ভরল বে, বিপুল ভরক বে !
সব গগন উবেলিয়া, মগন করি অতীও অনাগত,
আলোকে উজ্জন, জীবনে চকল
এ কি আন্দ ভরত !
ভাই, ছলিছে মিনকর চক্র ভারা,
চরকি কলিছে চেডলা-ধারা,
আতুর চকল নাচে সংগার,

कुरुत्त समग्र-विस्थ !

স্বাড়ানা—টিমাভেভালা ।

चांकि ■ बीवरन नानिरह शेरन, चन क्रमरी नीवरन निर्देश नेक्ट्रीरत। बाज व्यक्ति बाज, बाज रत केंद्रब नरह (क्षप्र-क्रम क्षप्र-मणिरत।

মিশ্র সাহান।—একডালা ।

ভারা ও পাবে মা কানিতে;
ভারাকে পাবে মা কানিতে;
ভারাকের কেরে তুমি কাছে আছ আমার হুদ্ধখানিতে!
যারা কথা বলে ভারারা ব্লুক্,
ভাবি করিব মা কাথেও বিশ্বুধ,
ভারা মাতি ছামে, ভারা আছে এবন

বারা কাছে আছে তারা কাছে গাঁক,

শীরবে নিবত রঙেছ আমার শীকা ক্রমবানিতে :

তৰ অভ্যতিক বাৰীকে !

তোমার লাগিয়া কাবেও বে প্রাভু,

গথ ছেড়ে বিজে বলিব না করু,

বক্ত প্রেম আছে সব প্রেম খোরে

তোমা পানে মবে টানিতে—

নকরের প্রেমে রবে তব প্রেম

আমার জন্মগানিতে!

গবাস সহিতে ঝোমার বাঁধন,

হেরি যেন সমা, এ মোর সাবন,

মবার সল পারে যেন মনে

তব আয়াধনা আনিতে;

ববার মিলমে জোমার সিলন

লাগিবে ভ্রমগানিতে!

রাখিণী বাহাছুরী টোড়ি—ভাল চিমা ভেভালা।

বিষয় আনক্ষে কাগ রে। সগম হও সুধানগেরে।

ক্ষমৰ উদযাচলে দেশ বে চাহি, এখন শ্ৰম জ্যোভি-যাগ যে !

व्यवन नामन (क)।। क-आन ६॥ १

বেহাগ---লবু একডালা।

ব্যক কমল সহজে ধনের কোনে আনকে বাহ কৃটিয়া, জিৰ না সে কড়, আলৰ কোধার বলে' গুলাহ গুলার সুটরা ! ভেমনি সহজে আনজে হরবিত,

ভোমার বাঝারে রব নিবর চিড, পূজা শতংগ আপনি সে বিকলিত, সব সংশ্ব টুটয়া !

কোণা আছ ভূমি, পথ না বুঁজিব কড়,

থখাৰ না কোনে। পথিকে;

জোৰাৰি মাখানে ত্ৰনিং কিমিব এছে, वध्य कित्रिय ह्य विस्क ।

চলিব বধন ভোষার আকাশ গেৰে,

ভোষাৰ অৰ্ভ-প্ৰবাহ লাগিবে দেহে,

ভোষার প্রম স্থার মতন বেছে, বক্ষে আর্মিরে টুটরা !

ভূপালী—হর্টাক্তাল ।

প্রচণ্ড সর্কনে আসিল ও কি চুর্কিন ! পারুৰ বন্ধটা, অবিরণ সপনি-ভর্মন 🖠 चन चन प्राप्तिनी, सुबद्ध-बन्ध श्रामिनी,

আবহ করিছে অব নয়নে অঞ্চ বরিবণ !
হাড় বে বছা, জাল জীক অলল,
আনতে কাগাও অন্তরে বকতি,
অনুষ্ঠ আবি বেলি বেল, জালার বিলাজিও,
বহাভর মহালনে অলকল কুরুজেররলো ভরবনণ !

লরবারি টোড়ি——চিমাতেতালা !
ভব কোলাহল হাড়িয়ে বিরবে এলেছি হে !
কুড়াব বিরা ভোনার লেখি,
স্থারনে মগল হব হে !

মিশ্রে ইমন্ কল্যাখি——ভাল কাশাক !
হবের বেলে এলেছ বলে ভোনারে নাহি ভারিব হে !
বেবাবে নাখা ভোনারে লেখা নিবিভ করে ধরিব হে ।

কাঁহাৰে মূৰ চাকিলে আমী, ভোষাকে অবু চিনিৰ আমি, হৰণমধ্যে আমিলে এড়, চমণ ধৰি মধিব ছে : বেমন কৰে লাভ না কেবা, জোমাৰে নাহি মধিব ছে : নম্মন আমি কমিছে অবা, মুক্তক অবা নামে ছে : पूर्वि त्य चाह् बर्क्स धान' व्यक्ती छोहा बामाक् गाउन, हाव वा किहू, कर मा कक्षा, हाहिया वय वहत्य दह । महत्य चाक्ति अग्निष्ट कन्, चक्तक क्या नहत्य दह !

মিঞ্জ কামোদ—একতালা।

আমি বছ বাসদার আপ্সাধে চাই, বন্ধিত করে বাঁচালে মোলে ! এ স্কুপা কঠোর সন্ধিত সোর জীবন ভরে' ।

ৰা চাহিতে মোনে যা কৰেছ দান, আকাৰ আলোক ভছ মন আৰু,

লে মহা শানেনি ঘোণ্য কলে ৷

দিৰে দিনে ভূমি নিজেছ সামায়

শতি-ইন্দাৰ সৰ্ট হতে বাঁচারে মোৰে !

আমি কথমো বা তুলি, কথৰো বা চলি,

জোনার প্রথম ক্ষয় ধরে— ভূমি নিষ্ঠুয় সম্ভূম হজে বাও যে সরে' !

थ ।नष्ट्रम गञ्जूष २८७ श्रष्ट एव ग्रह्म । ७ एवं कर बड़ा स्त्रांनि स्त्रांनि हाड,

নিজে চাও কৰে' কিলাও পানার,

পূৰ্ণ কৰিবা কৰে এ জীবন কৰ মিননেৱি বোগ্য কৰে' ! আখা ইফাৰ সজট হতে বঁচাৰে জোৱে !

ছৈরবী—তেওরা।

আৰু বুকের বন্দ ছিড়ে কেলে গাড়িকেছে এই প্রভাগগানি,
আকাশেতে সোনার আবোর ছড়িবে গেন ভাগর বাবী !
গুরে দন, বুলে দে দন, বা' আছে ভোর বুলে দে,
অক্সে বা তুকে আছে আবোক পাদে ভূলে দে।
আনত্তে দন বাধা টুটে, দবার সাথে গুঠুবে স্টে,
ভোগের পরে আবাক ভবে বাধিব বে আর বীধন টানি !

আশোৱারী—একতালা।

আৰি কেমন করিয়া বানাৰ আমার মুখ্যালো করে মুখ্যালো— আমার মুখ্যালো হয়ৰ প্রভাতে। আহি কেমন করিয়া আনাৰ আমার পরাশ কি নিধি মুখ্যালো— ভূবিয়া নিক্তি গভীর বোভাতে।

काक जिल्लाह नवाद बायारम—त्यथात स्टब्लि चारमाय-चामरम— —*द*रदर्शि भौगोत स्वत-गोनादः । আৰি চৰেক্ট কথা করেছি তা' দনে, কে নীয়ৰ সভা-যাবাৰে,— (क्रपंक्ति विव-समस्यत द्रावादत ! এই বাজাৰ আমাহে হবছে সংহতে, আলোক আমাৰ ভয়তে---কেমনে বিলে গ্লেছে বোৰ গুম্বাত---ভাই এ গগনভূষা প্রভাত গণিদ আমার অগ্নতে স্থতে ।

আৰু অভ্যুবন-ক্ষোড়া কাৰ্ডন বন্ধে, বেং খন বোদ কুয়ালো — বেন বে মিঃপেৰে ক্ষামি কুৱালো ৷

লাল বেখানে 🖩 কেবি, বৰংগতি বানে কুড়ালো লীবন কুড়ালো— খানাৰ খাদি ও খৰ ক্বয়ালো।

ভৈরবী---একভালা।

সম্ভৱ নম বিক্পিত কর অবস্তর হে ! নিৰ্দান কৰা, উজ্জন কয়, সুন্দাহ কয় হৈ । ৰাপ্ৰত কয়, উন্নত কয়, নিৰ্ভন্ন কয় ছে, क्लम क्य निवनन निवन्तन क्य 🕫 ।

বুক কৰা যে স্থান সংশ, বুক কৰা বে কয়, সকায় কয় সকল কৰোঁ লাখ কোনাৰ চুক ? চৰ্মণালে মন চিড নিংশালিক কৰা হৈ, নলিত কৰা, মলিও কয়, মলিক কয় হৈ!

রাগিণী মেশ মলার—ভাল কাওহালি।

আমার এ করে, আগনার করে,
গৃহ-দীগথানি জালো হে;
সব হুথ শোক, সার্যাক হোক,
কভিয়া তোনারি আলো হে!
কোবে কোপে যত সুকানো আঁথার,
ঘিলাবে ধন্য হ'বে।
ডোনারি পুণা-আলোকে বনিরা
স্বাবে বানির ভালো হে!
গ্রাপ্তাবি ভালার,
জচলত ভার জ্যোভি;
সোনা ক'বে সবে প্রকে, আনার

वस्य समझ सांस्या !

আৰি বত বীপ আবিবাছি, ভাবে ভগু নালা, ভগু কালী ! আমার ব্যেহ মুয়ায়ে পিগনে ভোমারি কিলণ চালো হে !

হান্বির--তেওরা ।

কত অভানারে জানাইলে কৃতি,
কত করে বিলে ঠাই।
গ্রহক করিলে নিকট, বন্ধু,
গরহক করিলে জাই !
প্রাবেণ জাবাস ছেড়ে বাই কবে,
মনে ভেবে মরি কি জানি কি হবে,
নৃতনের মাঝে ভূমি প্রাক্তন,
লে করা ভূমিরা ঘাই !
জীবনে করণে নিধিল ভূমনে,
মধনি ঘেষানে করে,
চির কনমের পরিচিয়া ধরেই,
ভূমিক চিনাবে সথে।

ভোষাত্ৰ কাৰিলে নাহি কেহ পৰ, নাহি কোনো মানা, নাহি কোনো ভৱ, স্বাৰে হিলায়ে ভূমি জালিলেছ, কেখা যেন সমা পাই !

অভূঞান।

রাগিণী **ধাঘাজ**—ভাল একভালা ৷

অগতের প্রোহিত তুমি, ভোষার এ করং হাঝারে।
একটার প্রকার পাইতে, তুই চার এক হইবারে !
কুনে কুলে করে কোলাকুলি, প্রলাগদি অগণে উষায়,
কেব লেকে কেব চুটে আনে, ভারাটি ভারার পালে চার।
পূর্ব হল ভোষার নিবম, প্রকু ছে! ভোষারি হল কর,
ভোষার কুপার এক হল, আজি এই বুবল ক্ষর।
যে হাতে বিবেছ তুমি বেঁবে, প্রবরে ব্রার প্রপরে,
নেই হাতে বাঁধিবাছ কুমি, এই চুটি ক্ষারে ক্রেত্রে!

রামি**শ ক্রকরন্টা—বাঁ**পেতাল।

ভূমি যে এক্সের রবি আলো করি চরচের।

বত কর বিতরণ সকর ভোগার কর।

ভ'ক্ষের জাথি পরে, তুমি থাক আলো করে,
ভা'বলে জাথারে আর বব বে কিনের ভর।
বেবো প্রেন্থ চিম্নিন, জাখি পরে থেকো কেনে,
ভোমারি আবোকে বসি, উজ্ঞান আনন-বনী,
উত্তরে উত্তরে হেরে প্রাকিত কলেবন।

রাথিশী সাহা্যা—কাঁপ্তাল ।

ভৌ জ্যাবের নদী, একর সিনিন ব্যি,

বল বেষ : কাম পানে আগ্রাহে মুক্টরা যার :
সম্পুত্র সংস্কৃত কাম, কুমি কোম-পানালার,
স্কৃতি সংস্কৃতি নিশ্বিত চায় !

নেই এক জানা কৰি, ছইকনে মিনিয়াছে, নেই এক শক্ষ্য ধৰি, ছইজনে চলিয়াছে ;

প্ৰে কৰে পৰা পৰা, ' পাৰাণ পৰাত কড়,

এট বলে এক হরে, ফাডিয়া কেনিবে ভার !

অধ্যান্ত বীষ্ট্ৰের বহাবারা স্থাইলে, ভোনারি ছেহের কোলে, থেন গো জানার নিজে। ভূচি হুলয়ের স্থা, প্রচি কারের সুখ, ভূচি হুলয়ের আশা, বিশার ভোনার পার।

মিজ ছায়ানট---বাঁপতাল।

চুট আপ এক ঠাই কুমি ত এনেছ জাকি,
ভাষকার্য্যে নাগিকেছে ভোষার প্রসন্ত নাগি।
এ কগভ চলচঙ্গে, বেঁথেছ বে কোইডোয়ে,
বে প্রেমে কামিরা সৌতে কেছাকৈ রাখ চাফি।
ভোষানি নালে করে, বংসারে পশিতে সৈতে,
ভোষানি নালে করে, বংসারে পশিতে সৈতে,
ভোষানি নালে করে, ক্রাইবে যারা মোছে।
গাখিতে ভোষার কাম, ভ্রমে চনিখে নাম,
করমে নিগাবে ছবি ভোষারে ক্রম্মে রাখি।

বেহাগ ।

ভক্তিৰে এনেছে লোহে চৰলে ভোষাৰ, লিখাও কেমেৰ ভিকা, কোথা বাবে আৰু <u>:</u> বে থেনে স্থাপতে কৰু, নলিন না হৰ প্ৰান্ত, বে প্ৰেন হুংগেতে ধৰে উক্ষল আকান। বে প্ৰেন ননান কাৰে কৰে চিন্নদিন, নিমেৰে নিমেৰে বাহা ধ্টাৰে ননীন। বে প্ৰেমেৰ কত হানি, প্ৰকাত কিমৰ বানি, বে প্ৰেমেৰ কতাৰল নিশিব উধান। বে প্ৰেমেৰ পথ বাহে অমৃত নৰনে, নো প্ৰেম পেথাৰে বাও পৰিক মুক্তনে; বিদি কতু প্ৰাৰ হয়, কোনে নিমো কৰামৰ,

রাগিত্বী সাহান্।—ভাল বং ।

ৰমি কড় পথ জোলে, বেখায়ে৷ আৰার 🛚

पश्चित्त कर्माण, गृषिती जानम महन, सृष्टे स्थापन कृत सेशहार विन कार : सरे हनराम कारह, दश्य हमा शक्तिश कारह, दश्यामा शक्ति-सहस्र कृत्य कथ शक्त-बाज ! स्थापन प्रविद्य (सर, शिर्थ साथ ध्येक गाँउ ;

টুটো না হিছে না কেন, থাকে খেন বাই হাতে।

জোমার নিনির দিরে, সাথ ভারে বাচাইরে, কি জানি ওকার পাছে সংসাধ রৌবেন মাম চু

বাহার--কাওয়ালি।

ক্ষুণে থাক আর ক্ষী বন্ধ সৰে,
ভোষাধের প্রেম বন্ধ বেল্ ক্ষেণ্
হরণের পরে রাখিও নির্ভন্ত,
হরণের পরে রাখিও নির্ভন্ত,
হব সভা তারে একভারা কর,
নংশর-নির্ভাবে সংলাম-ফর্নারে;
চিরস্থানার প্রেমেন বিশ্বন্দ,
মধুর করিরা মাধুক্ শীবন,
চ্কনার বনে সধল প্রকন,
বীবনের কাক লাখিও নীমবে।
কত ত্ব ভারে, কত অক্রবল,
গোরবলে ভবু থাকিও অটল,
ভারারি ইক্ষা হউক সকল,
বিশ্বন সভানে পোরে উৎসবে।

নিছু ভৈরবী—একতালা।

চননে থেখাৰ নিশিছে, দেখার ভূমি থাক, প্রান্ত, ভূমি থাক ্

কুমনে বাহারা চলিছে, ভাবের

ভূমি রাখ, প্রান্ধ্, নামে রাখ ! বেখা ব্যুমের মিনিয়ে বৃষ্টি, সেখা হোড় কব স্থাব বৃষ্টি,

भारत राजा काटक स्मित्रहरू, कारक

জুৰি ভাক, জুন, জুনি ভাক !

হ্মনে বিদিনা গৃহের প্রদীপে

ৰানাইছে যে মানোৰ, ভাছাতে হে দেব, হে বিশ্বদেব,

কোমাৰি আৰতি হোকু !

বৰুব নিজনে নিশি ছটি ছিলা, প্ৰেকেল বুৱে উঠে বিকশিকা,

নকৰ ৰঞ্চ হুইছে ভাহাৰে

কুলি ঢাক, আড়ু, ডুলি ঢাক !

ভূপানী—কাওয়ালি।

ধে জানী খানি কালাৰে চ্জনে,
আজি চে নবীন সংলালী,
কাভালী কোনো ভাবাৰে আহাৰ,
বিলি এ কৰের কাভালী :
কালগালাৰ বিলি চিবচিন কলিছেল পাল বিলাধনিটীল.

গুৰু বাজাৰ **আজি** তিনি দিন্ গুলামপুৰৰ সঞ্চারি'।

নিয়ো নিয়ো চিপ্ৰকীশনগাংগ্য, ভগ্নি নিয়ো ভগ্নী কল্যাণে !

ক্ষে ক্ষে লোকে, আধানে আলোকে, বেনো অনুক্ষে সমানে <u>!</u>

বীধা নাহি থেকো আলনে আবেশে, থড়ে থকাছ চলে কেলো ছেনে, ভোনাদের প্রেম ছিলো ছেপে ছেপে, ফিলো নামে বিভারি ! · ·
